

अत्त दीप

BE YOUR OWN LIGHT

तृतीय अंक

वार्षिकी (जून 2025 - मई 2026)



-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका



अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय गया जी की माननीय प्राचार्या डॉ० गीता पाण्डेय (केंद्र में), दाई ओर से वरीय व्याख्याता डॉ० नीतू सिंह, व्याख्याता श्री शिव कुमार चौधरी, व्याख्याता डॉ० अमिताभ बच्चन, व्याख्याता श्री रामसागर यादव, व्याख्याता श्री मृत्युंजय कुमार, बाईं ओर से ई पत्रिका प्रभारी श्रीमती अमृता प्रियम, व्याख्याता डॉ० पूनम कुमारी, डॉ० विभा सिंह, डॉ० तनवीर खान और व्याख्याता डॉ० अशोक कुमार



अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की माननीय प्राचार्या डॉ० गीता पाण्डेय दाई ओर से पत्रिका प्रभारी श्रीमती अमृता प्रियम, व्याख्याता- डॉ पूनम कुमारी, डॉ नीतू सिंह , डॉ विभा सिंह , श्री शिव कुमार चौधरी तथा श्री मृत्युंजय कुमार प्रशिक्षण एडमिन- श्री जितेंद्र कुमार, श्री चंदन कुमार , सम्पादक टीम के सदस्य- सलोनी प्रिया, सलोनी कुमारी , सन्नी कुमार एवं सत्यम कुमार एवं प्राचार्या मैडम के बाईं ओर से व्याख्याता डॉ मोहम्मद तनवीर खान , रिसोर्स पर्सन (ICT) श्री गौरव कुमार ,श्री भास्कर कुमार और श्री श्रवण कुमार तथा संपादक मंडल के अन्य सदस्य राहुल कुमार और राजीव कुमार ।



अत्त दीप के बारे में...



"विद्या समं चक्षु नास्ति" – ज्ञान के समान कोई नेत्र नहीं होता।

यह शाश्वत विचार **महाभारत** जैसे महान ग्रंथ से लिया गया है और अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की आत्मा को परिभाषित करता है। एक भावी शिक्षक के रूप में यह प्रेरणादायक सूत्र हमें निरंतर यह स्मरण कराता है कि ज्ञान मात्र शक्ति ही नहीं है, अपितु वह दृष्टि, स्पष्टता एवं विवेक का स्रोत है।

वर्ष 1982 में स्थापित, यह प्रतिष्ठित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान शिक्षा और परंपरा का एक अद्वितीय संगम है। यह महाविद्यालय मगध विश्वविद्यालय से संबद्ध है तथा बिहार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) के अभिन्न अंग के रूप में कार्य करता है। बी.एड. (B.Ed.) पाठ्यक्रम के छात्र होने के नाते हमें गर्व है कि हम एक ऐसे शैक्षणिक परिवेश का हिस्सा हैं जहाँ आत्मचिंतन, शिक्षण-कला एवं उद्देश्यपूर्ण अध्ययन को समान महत्व दिया जाता है।

"अत्त दीप भव" का अर्थ है—"अपना दीपक स्वयं बनो" या "अपने प्रकाश स्वयं रहो"। यह महात्मा बुद्ध का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश है जो व्यक्तियों को बाहरी स्रोतों पर निर्भर रहने के बजाय खुद के ज्ञान और आंतरिक मार्गदर्शन पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

यह पत्रिका एक ऐसा सशक्त मंच है जो शैक्षणिक और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करता है, रचनात्मकता व प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है तथा छात्रों में समालोचनात्मक चिंतन एवं संवाद की भावना को विकसित करता है। यह पत्रिका सांस्कृतिक विविधता और समावेशिता को भी बढ़ावा देती है। साथ ही, इसका उद्देश्य उपयोगी जानकारियों का प्रसार करना, संस्थान की परंपराओं और इतिहास का संरक्षण करना एवं छात्रों में लेखन व संपादन कौशल का संवर्धन करना भी है।

हम अपनी सम्माननीय प्राचार्या डॉ. गीता पाण्डेय मैम के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं, जिनका निरंतर सहयोग और दूरदर्शी नेतृत्व इस संपूर्ण प्रक्रिया में हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायी रहा।

हम अपनी सम्माननीय वरीय व्याख्याता डॉ. नीतू सिंह एवं सभी सम्माननीय व्याख्यातागण—डॉ. मो. तनवीर खान, डॉ. पूनम कुमारी, श्रीमती अमृता प्रियम, श्री मृत्युंजय कुमार, श्री प्रीतम कुमार दीपक, श्री राम सागर यादव, श्री राज कुमार, श्री शिव कुमार चौधरी, डॉ. अमिताभ बच्चन, डॉ. विभा सिंह और डॉ. अशोक कुमार, के प्रति बहुत आभारी हैं। इनका सहयोग और मार्गदर्शन अत्यंत सराहनीय और अमूल्य रहा।

हम पत्रिका प्रकाशन की प्रभारी श्रीमती अमृता प्रियम मैडम का विशेष रूप से आभार प्रकट करते हैं, जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह जटिल कार्य सरलतापूर्वक संपन्न हुआ। साथ ही, पत्रिका के संपादक-मंडल का सहयोग भी अमूल्य और अत्यंत प्रशंसनीय रहा। समूह के हर सदस्य ने आपसी सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना का एक आदर्श प्रस्तुत किया, जो इस प्रकाशन की सफलता का मूल मंत्र है।

अंत में, हम अपने महाविद्यालय परिवार के सभी तकनीकी एवं गैर-तकनीकी कर्मचारियों का भी सहृदय आभार व्यक्त करते हैं।

यह पत्रिका सामूहिक प्रयास और उत्तरदायित्व की भावना का प्रतिफल है, और हम उन विद्यार्थियों की सराहना करते हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में निम्न भूमिका निभायी। प्रत्येक सदस्य ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा और समर्पण से इस पत्रिका को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

प्रकाशक समूह (2024-26)

1. संपादन एवं डिज़ाइनिंग – सत्यम कुमार (क्रमांक-19, सत्र 2024-26)
2. डाटा संग्रहण – राजीव कुमार (क्रमांक-79, सत्र -2024-26)
सत्यम कुमार (क्रमांक-19, सत्र- 2024-26)
3. सामग्री सत्यापन – सन्नी कुमार (क्रमांक -34, सत्र -2024-26)
सलोनी प्रिया (क्रमांक -78,सत्र 2024-26)
राहुल कुमार (क्रमांक 03,सत्र 2024-26)
4. प्लेगरिज्म जाँच – सन्नी कुमार (क्रमांक-34,सत्र - 2024-26)
5. प्रूफ रीडिंग – सन्नी कुमार(क्रमांक- 34, सत्र- 2024-26)
सलोनी कुमारी (क्रमांक -02 , सत्र-2024-26)
6. टाइपिंग – सन्नी कुमार (क्रमांक- 34 ,सत्र 2024-26)
पल्लवी रानी (क्रमांक-09,सत्र -2024-26)
7. फोटोग्राफी – राजीव कुमार (क्रमांक-79, सत्र 2024-26)

1. कॉलेज पत्रिका "अत्त दीप" के संपादन और डिज़ाइन कार्य में योगदान देना मेरे लिए एक गौरवपूर्ण अनुभव रहा। मैंने प्रत्येक पृष्ठ को रचनात्मकता और नवीनता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिससे पत्रिका अधिक आकर्षक, जानवर्धक और प्रभावशाली बन सके। आशा है कि यह प्रयास आप सभी के लिए उपयोगी एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

-सत्यम कुमार

2. महाविद्यालय पत्रिका (अत्त दीप) के कोर मेंबर होने के नाते मैंने अपनी भूमिका बहुआयामी तरीके से निभाई। मैंने सामग्री सत्यापन में, प्लेगरिज्म जाँच में यह सुनिश्चित किया कि सभी सामग्री या विचार जो बिल्कुल नया हो, कहीं से कॉपी न किया गया हो। इनके साथ-साथ मैंने प्रूफ रीडिंग और टाइपिंग में भी अपनी भूमिका निभाई। मेरी यह कोशिश रही कि मैं अपनी मेहनत से इसे बेहतर कर सकूँ।

अतः यह अनुभव मेरे लिए काफी बेहतर रहा और मैंने इससे बहुत कुछ सीख पाया।

- सन्नी कुमार

3. As a core member of the team, I was entrusted with the responsibility of reviewing and verifying the content of the magazine. My role involved carefully examining each article to ensure its accuracy, quality, and relevance before forwarding it for further processing. This responsibility helped me develop a keen eye for detail and evaluate content from multiple perspectives. Throughout the process, I focused on maintaining the authenticity and standard of the magazine. Being a part of this editorial journey was both enriching and memorable, and it provided me with valuable learning experience.

-Rajeev Kumar

4. I played an important role in typing for the e-magazine. I also interviewed our Principal ma'am for the magazine publication. I put my efforts for making this magazine more clear and enhanced it's quality.

- Pallvi Rani

5. I was a pivotal member of the team and a proof reader of the magazine. I also played a pivotal role in a few content writings and interviewed the Principal Ma'am for the magazine publication. The making of the e-magazine was a great experience for me, and I feel grateful to be a part of it.

- Saloni Kumari

6. As a core member of the e-magazine team, I contributed to content writing and verification. I also got the opportunity to interview our respected Principal Ma'am. Being a part of it, I got to understand the process of making an e-magazine more profoundly and learnt a lot.

- Saloni Priya

7. I was a core member of the team and proof reader of the magazine publication. My role helped in maintaining the high standard of the magazine which will enhance the overall reader experience. It strengthened my ability to think critically and work collaboratively.

-Rahul Kumar



Satyam Kumar



Sunny Kumar



Rajeev Kumar



Pallvi Rani



Saloni Kumari



Saloni Priya



Rahul Kumar



संपादक मंडल के सदस्य - (केंद्र में) अत दीप ई-पत्रिका प्रभारी श्रीमती अमृता प्रियम (बाईं ओर से) सलोनी प्रिया, पल्लवी रानी, राजीव कुमार और राहुल कुमार (दाईं ओर से) सलोनी कुमारी, सन्नी कुमार और सत्यम कुमार.



पृष्ठ-सूची (INDEX)

| | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| • आभार- | 01 |
| • संपादकीय- | 03 |
| • संदेश- | 04 to 16 |
| • साक्षात्कार- | 17 |
| • Buddhist Middle Path and Biological Homeostasis-श्रीमती अमृता प्रियम (व्याख्याता)- | 19 |
| • स्त्री तेरी कहानी-अंशु कुमारी सिंह(क्रमांक 38/2025-27)- | 23 |
| • Success has nothing todo with age- गुड़िया प्रवीण(क्रमांक 10/2025-27)- | 24 |
| • The Journey of Faith and Devotion- मोहित राज (क्रमांक 26/2024-26)- | 24 |
| • विषम परिस्थितियों में संघर्ष की प्रेरणा : रामधारी सिंह दिनकर-डॉ नीतू सिंह(वरीय व्याख्याता)- | 25 |
| • नीलामी उम्मीदों की-गौरव कुमार (ICT)- | 28 |
| • प्यून सर का डिसिप्लिन डिपार्टमेंट-सलोनी प्रिया (क्रमांक 78/2024-26)- | 30 |
| • तीसरी आँख की छाँव-शिव कुमार चौधरी (व्याख्याता)- | 31 |
| • खामोश रफ्तार-आदर्श कुमार सोनी (क्रमांक 96/2025-27)- | 33 |
| • हम और हमारे परिवेश से सामंजन-डॉ विभा सिंह (व्याख्याता)- | 34 |
| • नीला स्याही और सफ़ेद राख-अमित कुमार राज(2023-25)- | 35 |
| • Live Your Life-निशा रानी (क्रमांक 61/2025-27)- | 35 |
| • Challenges faced by an aspirant-सुरभि कुमारी (क्रमांक 32/2024-26)- | 36 |
| • प्रकृति और मैं-स्वेता कुमारी (क्रमांक 46/2024-26)- | 36 |
| • अपनी कहानी-अंशु कुमारी सिंह(क्रमांक 38/2025-27)- | 37 |
| • Being Bihari:- A pride or a threat- अंजली कुमारी (क्रमांक 90/2024-26)- | 38 |
| • भगवान जी, एक बार कर्मों की फाइल री-चेक कर लो!-बिट्टू कुमार(क्रमांक 26/2024-26)- | 39 |
| • उड़ान अधूरी रह गई-सलोनी प्रिया (क्रमांक 78/2024-26)- | 39 |
| • Lost Childhood-मेहर फातिमा (07/2024-26)- | 40 |

| | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------|----|
| • CTE की लेट लतीफ रानी-अंशु कुमारी सिंह (क्रमांक 38/2025-27)- | 41 |
| • Feminism and world-सलोनी प्रिया (78/2024-26)- | 41 |
| • Peaceful Days of Childhood in Hatia-नीतीश कुमार साह (क्रमांक 63/2025-27)- | 42 |
| • महिलाओं का जीवन-आँचल कुमारी (2023-25)- | 43 |
| • मैं क्या चाहती हूँ-पूजा रॉय (क्रमांक 45/2025-27)- | 43 |
| • अधिकार, अभिव्यक्ति और कर्तव्य: संतुलन या संकट-स्वीटी कुमारी(क्रमांक 11/202527)- | 44 |
| • Trophy Unlocked-सलोनी कुमारी (क्रमांक 02/2024-26)- | 46 |
| • भाई-पूजा रॉय (क्रमांक -45/2025-27)- | 46 |
| • नई ज़िंदगी की शुरुआत नई सोच से-फौजिया तबस्सुम (क्रमांक17/2025-27)- | 47 |
| • आखिरी सीढ़ी-आदर्श कुमार सोनी क्रमांक 96/2025-27)- | 48 |
| • College Trip-सलोनी कुमारी (क्रमांक 02/2024-26)- | 49 |
| • एक साल थोड़ा सादगी से जी लेंगे-बिट्टू कुमार (क्रमांक 26/2024-26)- | 52 |
| • चाँद छूने की तमन्ना-स्मृति कुमारी(क्रमांक 25/2025-27)- | 52 |
| • किताबों से परे: वह एक दिन-मो.ताहिर इमाम(क्रमांक 97/2025-27)- | 53 |
| • बिहार का महापर्व : छठ पूजा-दीपक कुमार(क्रमांक 98/2024-26)- | 54 |
| • CTE गया का मेरे सभी प्रिय -बसंत कुमार (क्रमांक 91/2025-27)- | 55 |
| • झंडा ऊँचा रहे हमारा- मीनाक्षी कुमारी (2023-25)- | 57 |
| • Corruption-रितिक राज (क्रमांक 87/2025-27)- | 57 |
| • जन्म और मृत्यु के पीछे छिपा ब्रह्मांडीय रहस्य- अंशु कुमारी सिंह(क्रमांक 38/2025-27)- | 58 |
| • आसमान से भी आगे-पल्लवी रानी(क्रमांक 09/2024-26)- | 59 |
| • वह सवाल जिसका जवाब आज तक नहीं मिला- मनीष कुमार (क्रमांक 37/2025-27)- | 60 |

- होम बाउंड (Movie Review)-सन्नी कुमार (क्रमांक 34/2024-26)- 61
- नारी शक्ति : तुम अनंत हो-श्वेता सिन्हा (क्रमांक 41/2024-26)- 62
- डिजिटल युग: उँगलियों पर..-स्वेता कुमारी (क्रमांक 46/2024-26)- 62
- The Transformative Role...-अभिषेक कुमार(क्रमांक 58/202527)- 63
- A Plea For Tomorrow-दीपक राज (क्रमांक 82/2025-27)- 64
- ज़िन्दगी-दिव्य प्रकाश सिंह (क्रमांक 15/2025-27)- 64
- A Trip to Heaven-सन्नी कुमार (क्रमांक 34/2024-26)- 65
- झल्लि... पर हिम्मत वाली-सलोनी प्रिया (क्रमांक 78/2024-26)- 66
- कानून और भारतीय समाज-विशाल शर्मा (2023-25)- 67
- ककोलत जलप्रपात यात्रा : मेरा अनुभव एवं तथ्यात्मक समीक्षा-राजीव कुमार(क्रमांक 48/2024-26)- 68
- बचपन-बसंत कुमार (क्रमांक 91/ 2025-27)- 69
- वक्त की धूप में दोस्ती की छाँव-बिट्टू कुमार (क्रमांक 26/2024-26)- 69
- My Love: Badminton-सन्नी कुमार (क्रमांक 21/2025-27)- 70
- कभी कभी शांत मन-प्रिंस कुमार (क्रमांक 72/2025-27)- 71
- दादी माँ की मुस्कान-रिशु कुमारी(क्रमांक 85/2025-27)- 72
- सफर जारी है-रीती कुमारी (क्रमांक 52/2024-26)- 72
- अनकही सीख-पल्लव शिवम (क्रमांक 69/2025-27)- 73
- सुकून का राज-धर्मेन्द्र कुमार (क्रमांक 98/2025-27)- 74
- उलझे सपने-वंदना कुमारी (क्रमांक 81/2024-26)- 75
- साहस- आरती सिन्हा (क्रमांक 01/2024-26)- 75

- Happy Mind, Healthy Life..- अंशु कुमारी(क्रमांक 16/2025-27)- 76
- Safety Vs Freedom..- अंकिता कुमारी (क्रमांक 69/2024-26)- 77
- सोशल मीडिया और समाज-नीरज कुमार (क्रमांक 44/2025-27)- 78
- जीवन और मृत्यु-प्रज्ञा कुमारी (क्रमांक 39/2025-27)- 79
- माँ.. ममता की आखिरी साँस-बिट्टू कुमार (क्रमांक 26/2024-26)- 80
- पिता और मैं-सौरव सिंह (क्रमांक 31/ 2025-27)- 81
- एक साल की तलवार-समृति कुमारी(क्रमांक 25/2025-27)- 81
- शिक्षक की भूमिका-प्रज्ञा कुमारी (क्रमांक 39/2025-27)- 82
- कफ़न-प्रिंस कुमार(क्रम.72/2025-27)- 83
- तलबगार-प्रिंस कुमार (72/2025-27)- 83
- मेरा गिल्लू-अमृता प्रियम (व्याख्याता)- 84
- हिन्दी मातृभाषा-मीनाक्षी कुमारी(23-25)- 92
- Alumini Corner-अमृता प्रियम - 93
- उद्यान कार्य-सन्नी कुमार(2024-26)- 95
- अंतर. महिला सप्ताह-सलोनी कुमारी- 97
- Dyslexia..राजीव कुमार(R-79/24-26)- 98
- इन-सर्विस प्रशिक्षण के माध्यम से शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर-अमृता प्रियम(व्याख्याता)-99
- Vande Mataram-राहुल कुमार (24-26)-101
- Voter Aware..- सलोनी कुमारी(24-26)- 102
- Freshers' Party(2025)-सलोनी कुमारी-103
- Sports Activities in CTE- सत्यम कुमार (क्रमांक 19/2024-26)- 107
- Instit. Obs. Prog..-सलोनी प्रिया (क्रमांक 78/2024-26)- 109
- Art & Craft-सलोनी प्रिया (2024-26)- 111
- Dreams and the Human Mind- अमृता प्रियम(व्याख्याता)- 115
- एक विमोचन से नवसृजन तक-अमृता प्रियम (व्याख्याता)- 123
- समापन संदेश- 129





आभार (Acknowledgement)

श्रीमती अमृता प्रियम

“अत्त दीप” की इस वार्षिक पत्रिका के नवीन संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं संतोष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल शब्दों और रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि महाविद्यालय परिवार की सामूहिक सृजनशीलता, परिश्रम, समर्पण और रचनात्मक चेतना का सशक्त प्रतिबिंब है।

मैं सर्वप्रथम महाविद्यालय की सम्माननीय प्राचार्या महोदया डॉ गीता पांडेय जी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन, प्रेरणा तथा विश्वास ने इस पत्रिका के प्रकाशन कार्य को दिशा प्रदान की। उनका सतत सहयोग एवं प्रोत्साहन इस संपूर्ण यात्रा में प्रेरणास्रोत रहा है।

मैं महाविद्यालय के सभी आदरणीय संकाय सदस्यों डॉ नीतू सिंह (वरीय व्याख्याता), डॉ तनवीर खान ,डॉ पूनम कुमारी,श्री मृत्यंजय कुमार, श्री प्रीतम कुमार दीपक, श्री राम सागर यादव, श्री राज कुमार, डॉ अमिताभ बच्चन, श्री शिव कुमार चौधरी, डॉ विभा सिंह तथा डॉ अशोक कुमार के प्रति भी अपनी हार्दिक धन्यवाद जापित करती हूँ, जिन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों, मार्गदर्शन तथा निरंतर सहयोग से इस पत्रिका को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमारे महाविद्यालय के पूर्व छात्र श्रवण कुमार पासवान, गौरव कुमार, भास्कर कुमार जो रिसोर्स पर्सन के रूप में महाविद्यालय में कार्यरत हैं, का भी आभार प्रकट करती हूँ। इनके सहयोग से ही बहुत से बहुमूल्य फोटोग्राफ उपलब्ध हो पाए।

महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों ने अपने सकारात्मक दृष्टिकोण, समर्पण तथा सौहार्दपूर्ण सहयोग से ऐसा अनुकूल वातावरण निर्मित किया जिसमें यह सृजनात्मक कार्य सहजता से पूर्ण हो सका।

महाविद्यालय में शांत, प्रेरक और सहयोगी वातावरण निर्माण में हमारे महाविद्यालय के गैर-शैक्षिक कर्मियों श्री अविनाश कुमार (वरिष्ठ लिपिक), सुश्री अर्चना कुमारी (लिपिक), श्री गौतम कुमार (लेखाकार), श्री गौरव कुमार (कम्प्यूटर ऑपरेटर), श्री रौशन कुमार (कम्प्यूटर ऑपरेटर), श्री विशाल सिंह (जे.ई.), श्री जितेंद्र देव गुप्ता (ट्रेनिंग एडमिन), श्री चंदन कुमार (ट्रेनिंग एडमिन), श्री शैलेन्द्र कुमार (कार्यालय कर्मचारी), श्री सुरेन्द्र कुमार (कार्यालय कर्मचारी), श्री अशोक कुमार (कार्यालय कर्मचारी), श्री रामचंद्र कुमार (स्वच्छता सुपरवाइजर), श्री राजीव कुमार उर्फ बंटी (स्वच्छता सुपरवाइजर), श्री बबलू कुमार (विद्युत संबंधी कार्य), श्री विवेकानंद कुमार (प्लंबर), श्री परशुराम (सुरक्षा प्रहरी), श्री संतोष कुमार (सुरक्षा प्रहरी), श्री धीरेंद्र कुमार (सुरक्षा प्रहरी) तथा श्री मतलू कुमार (सुरक्षा प्रहरी) आदि ने इस पत्रिका को आकार देने में अतुलनीय भूमिका निभाई। प्रकाशन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों – संरचना, सामग्री संकलन, टाइपिंग, संपादन, प्रूफरीडिंग, डिज़ाइनिंग तथा प्लेगरेजिज्म जांच – में हमारे विद्यार्थियों की प्रकाशन टीम ने अत्यंत दक्षता एवं समर्पण से सहयोग प्रदान किया। उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

हमारी प्रकाशन टीम के सभी सदस्यों यथा –

1. संपादन एवं डिज़ाइनिंग –

सत्यम कुमार

(क्रमांक-19, सत्र 2024-26)

2. डाटा संग्रहण –

राजीव कुमार

(क्रमांक-79, सत्र -2024-26)

सत्यम कुमार

(क्रमांक-19, सत्र- 2024-26)

3. सामग्री सत्यापन –

सन्नी कुमार

(क्रमांक -34, सत्र -2024-26)

सलोनी प्रिया

(क्रमांक -78, सत्र 2024-26)

4. प्लेगरेज्म जाँच –

सन्नी कुमार

(क्रमांक-34, सत्र - 2024-26)

5. प्रूफ रीडिंग –

सन्नी कुमार

(क्रमांक- 34, सत्र- 2024-26)

सलोनी कुमारी

(क्रमांक -02 , सत्र-2024-26),

राहुल कुमार

(क्रमांक 03, सत्र 2024-26)

6. टाइपिंग –

सन्नी कुमार

(क्रमांक- 34 , सत्र 2024-26)

पल्लवी रानी

(क्रमांक-09, सत्र -2024-26)

7. फोटोग्राफी –

राजीव कुमार

(क्रमांक-79, सत्र 2024-26)

के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रत्येक सदस्य ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा, रचनात्मक दृष्टिकोण और कर्मनिष्ठा से इस पत्रिका को साकार रूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह सामूहिक प्रयास प्रशंसनीय और प्रेरणादायी है।

मैं उन सभी प्रशिक्षुओं, विद्यार्थियों एवं रचनाकारों के प्रति विशेष धन्यवाद व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपनी कविताएँ, लेख, चित्रकलाएँ, संस्मरण, समीक्षाएँ तथा अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ देकर इस पत्रिका को जीवंतता प्रदान की। आपकी सृजनशीलता ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है।

अंततः, मैं डिज़ाइन, संपादन एवं प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके अथक प्रयासों से यह सृजन अपने पूर्ण स्वरूप में साकार हो सका।

Atkijam

श्रीमती अमृता प्रियम
ई-मैगजीन प्रभारी



संपादकीय



हमारे महाविद्यालय की ई-पत्रिका का यह नवीन तृतीय अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। "अत्त दीप" की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए यह अंक न केवल हमारी शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारे प्रशिक्षुओं की रचनात्मक ऊर्जा और उनके अद्भुत संकल्प का साक्ष्य भी है।

आज के इस डिजिटल युग में, जहाँ तकनीक हमारे जीवन को नई दिशा दे रही है, यह पत्रिका हमारे विचारों, संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखने का एक सार्थक प्रयास है। इस अंक के माध्यम से हमने शिक्षा, समाज और नवाचार के विभिन्न पहलुओं को छूने की कोशिश की है। इसमें संकलित कहानियाँ, कविताएँ और लेख हमारे भावी शिक्षकों के दृष्टिकोण और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारी को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

हमारा मानना है कि शिक्षा केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि एक स्वयं को और समाज को गहराई से समझने की एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह पत्रिका एक ऐसा मंच प्रदान करती है जहाँ ज्ञान के साथ संवेदना और विवेक का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

महाविद्यालय की इस प्रतिष्ठित ई-पत्रिका 'अत्त दीप' के संपादक समूह के एक प्रमुख सदस्य के रूप में, यह मेरा पहला और बहुत ही खास अनुभव रहा है। इस पत्रिका में लिखित सामग्री के उत्कृष्ट संपादन एवं इसके सम्पूर्ण दृश्य यानी विजुअल डिजाइन की एक नयी और बेहद अहम जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। इस कार्यक्रम से जुड़ना मेरे लिए एक अद्भुत और अनुभवों से समृद्ध सफ़र रहा है।

इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ की रचनात्मकता को निखारने के लिए मैंने उन्नत एवं विशेष सॉफ़्टवेयर की सहायता भी ली है। मेरी यह कोशिश रही है कि हर एक विषय, रचना और विचार को पाठकों के सम्मुख अत्यंत आकर्षक, सुव्यवस्थित, आधुनिक और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

तकनीक और कला के इस अनूठे संगम को पन्नों पर उतारने में मैंने अपना अथक प्रयास और समय समर्पित किया है। मैं हृदय से यह आशा करता हूँ कि मेरा यह पहला रचनात्मक और तकनीकी प्रयास आप सभी सुधि पाठकों को सराहनीय लगेगा। यह पत्रिका आपके लिए न केवल आनंददायक साबित होगी, बल्कि आपके भीतर ज्ञान और सकारात्मकता का एक नया संचार करने में पूरी तरह प्रेरणादायी सिद्ध होगी।

यह प्रथम प्रयास मेरे लिए केवल एक कार्य नहीं, बल्कि भविष्य के तकनीकी और रचनात्मक प्रयोगों के लिए एक मजबूत नींव की तरह है। आशा है कि हमारे विचारों का यह समागम आपको भी अपनी रचनात्मकता की सीमाओं को विस्तार देने के लिए प्रेरित करेगा।

शुभकामनाएँ और सस्नेह।



**- सत्यम कुमार,
संपादक**

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी।



संदेश

डॉ० गीता पाण्डेय

प्रभारी प्राचार्य

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय

गया जी- 823001

“सा विद्या या विमुक्तये” – वह विद्या ही सार्थक है जो मनुष्य को अज्ञान, संकीर्णता और बंधनों से मुक्त कर उसके व्यक्तित्व का समग्र विकास करे। सत्र 2024-26 के छात्राध्यापकों द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक ई-पत्रिका ‘अत्त दीप’ के नवीन संस्करण के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर मैं सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकगण, छात्राध्यापकगण एवं समस्त पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। महाविद्यालय की पत्रिका का प्रकाशन सत्र 2020-22 में आरम्भ हुआ था। इसका उद्देश्य छात्रों में चेतना, संवेदनशीलता तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना था। यह पत्रिका केवल साहित्यिक रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि संस्थान की बौद्धिक चेतना, सृजनशीलता और सांस्कृतिक मूल्यों का दर्पण है। इसमें संकलित विविध रचनाएँ छात्राध्यापकों की ज्ञान-पिपासा और रचनात्मक ऊर्जा को अभिव्यक्त करती हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा में शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि जीवन के समग्र विकास का माध्यम माना गया है। उपनिषदों, गुरु-शिष्य परम्परा, नालन्दा एवं तक्षशिला की शैक्षिक विरासत हमें यह संदेश देती है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर निहित श्रेष्ठतम संभावनाओं का विकास करना है। इसी कारण हमारे यहाँ शिक्षक को ‘आचार्य’ कहा गया है, जो अपने आचरण से शिक्षा देता है। महात्मा बुद्ध का संदेश “अप्प दीपो भव” आज भी प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी के लिए प्रेरणास्रोत है। यह हमें स्मरण कराता है कि शिक्षा का वास्तविक प्रकाश भीतर से उत्पन्न होता है। इसी प्रकार जिदु कृष्णमूर्ति ने शिक्षा को स्वतंत्र चिन्तन, आत्मबोध और मानवीय विकास का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल सफल व्यक्ति नहीं, बल्कि सजग और उत्तरदायी नागरिक तैयार करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी ज्ञान, कौशल, मूल्य, नवाचार, आलोचनात्मक चिन्तन तथा भारतीय ज्ञान-परम्परा के समन्वय पर बल देती है। इसका उद्देश्य ऐसे शिक्षार्थियों और शिक्षकों का निर्माण करना है जो ज्ञान के उपभोक्ता ही नहीं, बल्कि सृजनकर्ता भी बन सकें। आज शिक्षक की भूमिका कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं है। वह विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सह-अस्तित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय चेतना तथा नैतिक मूल्यों का विकास करता है। एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ‘अत्तदीप’ का यह अंक ज्ञान, सृजनात्मकता और मानवीय मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। यह छात्राध्यापकों को अपनी प्रतिभा अभिव्यक्त करने के साथ-साथ आत्मचिन्तन एवं चेतना के विकास का अवसर भी प्रदान करेगा। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी छात्राध्यापकों, सम्पादक मण्डल एवं प्राध्यापकगण को हार्दिक बधाई। आशा है कि यह पत्रिका भारतीय ज्ञान-परम्परा और आधुनिक शिक्षा-दृष्टि के मध्य एक सशक्त सेतु का कार्य करते हुए छात्रों को सजग, संवेदनशील, नैतिक एवं मूल्यनिष्ठ नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान करेगी। आप सभी के उज्ज्वल, रचनात्मक एवं सफल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ।

Geeta Pandey



संदेश

डॉ० नीतू सिंह
व्याख्याता (समावेशी शिक्षा)
वरीय व्याख्याता
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया जी- 823001

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अत्त दीप' के तृतीय संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देती हूँ। "अत्त दीप" नाम हमें गौतम बुद्ध के संदेश "अप्प दीपो भव" अर्थात् "अपना दीपक स्वयं बनो" की याद दिलाता है। यह पत्रिका ज्ञान, विवेक और आत्मविश्वास के उसी प्रकाश का प्रतीक है, जो प्रत्येक विद्यार्थी के भीतर विद्यमान है।

पत्रिका का प्रकाशन विद्यार्थियों की सृजनशीलता, परिश्रम एवं आत्मनिर्भरता का प्रमाण है। मुझे प्रसन्नता है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं ने लेखन, संपादन, टंकण, फोटोग्राफी तथा अन्य कार्यों को स्वयं संपन्न कर अपनी प्रतिभा एवं सामूहिक कार्यक्षमता का परिचय दिया है।

यह जानकर हर्ष होता है कि प्रशिक्षुओं ने साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक विषयों पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। आज के समय में साहित्य एवं लेखन की ओर विद्यार्थियों का झुकाव अत्यंत सकारात्मक संकेत है। लेखन व्यक्ति में सोचने, समझने तथा आत्मविश्लेषण की क्षमता विकसित करता है।

किसी भी पत्रिका का प्रकाशन सामूहिक प्रयास का परिणाम होता है। मैं संपादक मंडल, छात्र-छात्राओं, व्याख्याताओं एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देती हूँ, जिन्होंने इस संस्करण को सफल बनाने में योगदान दिया है।

मुझे विश्वास है कि 'अत्त दीप' आने वाले वर्षों में महाविद्यालय की पहचान एवं प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित होगी। युवा जागरूक, शिक्षित एवं संवेदनशील होंगे तो समाज एवं राष्ट्र भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा। आप सभी देश के युवा नागरिक हैं, और यदि युवा जागरूक, शिक्षित एवं संवेदनशील होगा, तो समाज एवं राष्ट्र भी प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होगा। समाज में व्याप्त अन्याय, अज्ञान एवं कुरीतियों से संघर्ष करने के लिए केवल हथियारों की नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक एवं सत्य की भी आवश्यकता होती है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी कलम की शक्ति को तलवार से अधिक प्रभावशाली माना है—

**"दो में से क्या तुम्हें चाहिए, कलम या कि तलवार?
मन में ऊँचे भाव कि तन में शक्ति विजय अपार।
कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली,
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगाने वाली।
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे।"**

अंत में, मैं पुनः सभी छात्र-छात्राओं, संपादक मंडल, व्याख्याताओं एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ। ईश्वर से कामना है कि आप सभी जीवन में निरंतर प्रगति करें तथा समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं सहित।

Neetu Singh



संदेश

डा० मो० तनवीर खाँ
व्याख्याता (शारीरिक शिक्षा)
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया जी

प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों,

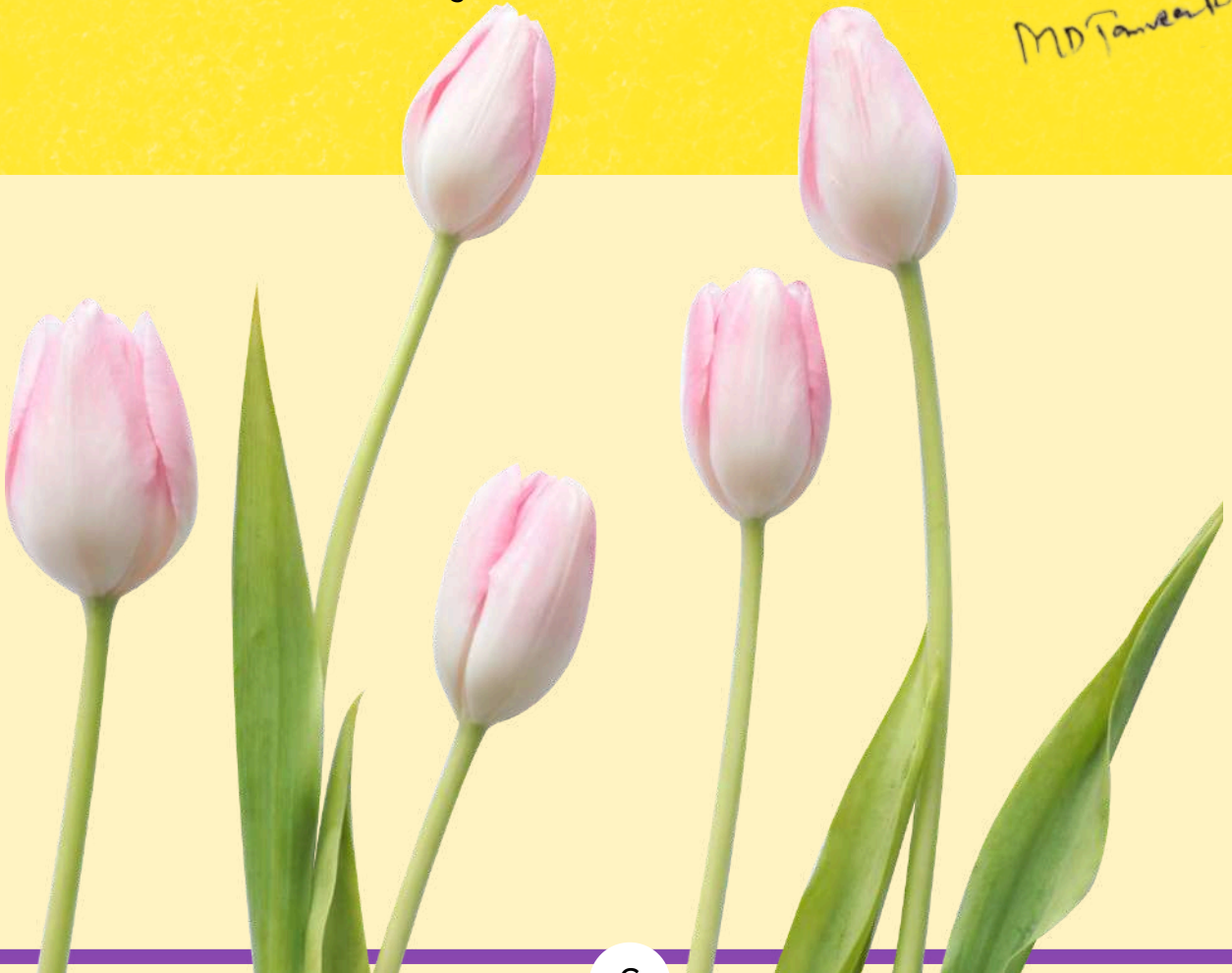
वार्षिक पत्रिका किसी भी शिक्षण संस्थान की उपलब्धियों, रचनात्मक गतिविधियों और स्मरणीय क्षणों का दर्पण होती है। यह केवल शब्दों और चित्रों का संग्रह नहीं, बल्कि पूरे वर्ष के परिश्रम, प्रतिभा, अनुशासन और सफलताओं का जीवंत दस्तावेज है।

मुझे प्रसन्नता है कि यह वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं खेल संबंधी उपलब्धियों को सुंदर रूप में प्रस्तुत कर रही है। ऐसी पत्रिकाएँ विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आत्मविश्वास तथा अभिव्यक्ति कौशल का विकास करती हैं और उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती हैं।

मैं पत्रिका के संपादकीय मंडल, शिक्षकों तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो तथा हमारा संस्थान निरंतर प्रगति और उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित करता रहे।

सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

M. Tanveer Khan





संदेश

डॉ० पूनम कुमारी

व्याख्याता (आर्ट एंड क्राफ्ट)
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी- 823001

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अत्त दीप' के तृतीय संस्करण के प्रकाशन के अवसर पर मैं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देती हूँ।

दो राहें

हर डगर की राह में
मिलेगी तुझे दो राहें,
सोचना है तुझे
तेरी मंजिल है कहाँ

तुझे जाना है किधर ।
ख्वाब जो देखे हैं तूने
उसे करनी है पूरी,
या उझूलों में बंधकर
रह जाना है इधर ।

हर कदम पर मिलेगी मुश्किलें
इरादों से पार पाना है तुझे,
हर डगर की राह में
मिलेगी तुझे दो राहें ।

जब घिरे हो मुश्किलों में
और कोई राह समझ ना आये
उलझने हों घेरे तुझको
पग - पग पे भरमाये,

तब पुकार अपने विवेक को
और कर उसके संग विचार
राह दिखाने वो जो तुझको
ले तू उसकी बाहें थाम ।
क्योंकि हर डगर की राह में

मिलेगी तुझे दो राहें ।

(शिवजी कुमार सिंह)



Poonam



संदेश

श्रीमती अमृता प्रियम

व्याख्याता (फाउंडेशन)

प्रशिक्षण प्रभारी एवं ई-मैगज़ीन प्रभारी

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय

गया जी-823001

“प्रज्ञानं ब्रह्म” – ज्ञान ही सर्वोच्च सत्य है।

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी द्वारा प्रकाशित ई-मैगज़ीन "अत्त दीप" के तृतीय संस्करण के प्रकाशन पर समस्त बी.एड. प्रशिक्षुओं, रचनाकारों एवं मार्गदर्शक व्याख्याताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि आपके चिंतन, सृजनशीलता, शैक्षिक दृष्टिकोण और व्यक्तित्व विकास का सशक्त दर्पण है।

बी.एड. प्रशिक्षु केवल भावी शिक्षक नहीं, बल्कि राष्ट्र के भावी चरित्र-निर्माता हैं। शिक्षा का उद्देश्य मात्र सूचनाएँ प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सहानुभूति, नैतिकता, सम्मान, अनुशासन और मानवीय मूल्यों का विकास करना भी है। जब शिक्षक अपने ज्ञान को मानवीय भावनाओं और संस्कारों से जोड़ता है, तभी शिक्षा वास्तव में जीवन को आलोकित करती है।

उच्च भावनात्मक बुद्धिलब्धि (Emotional Quotient) और विवेकपूर्ण चिंतन ही एक शिक्षक को श्रेष्ठ बनाते हैं। ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह हृदय को स्पर्श करे, विचारों को ऊँचाई दे और समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बने। “प्रज्ञानं ब्रह्म” का वैदिक संदेश हमें यही प्रेरणा देता है कि सच्चा ज्ञान वही है जो मानवता, करुणा और सत्य के मार्ग को प्रकाशित करे।

ऋग्वेद का यह मंत्र –

“आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः”

अर्थात् “हमारे पास विश्व के सभी श्रेष्ठ विचार आएँ” –

आप सभी को निरंतर, नवाचार करने और समाज को नई दिशा देने की प्रेरणा प्रदान करता है।

एक शिक्षक के जीवन का मूल उद्देश्य है, जो अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का दीप प्रज्वलित करता है। ई-मैगज़ीन "अत्त दीप" का यह तृतीय संस्करण आपकी प्रतिभा, अभिव्यक्ति और रचनात्मक ऊर्जा का उत्कृष्ट उदाहरण है। आशा है कि यह मंच आपके विचारों को नई पहचान देगा तथा शिक्षा और समाज के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को और अधिक सशक्त बनाएगा। आप सभी ज्ञान, विवेक, संस्कार और मानवीय मूल्यों से समृद्ध होकर ऐसे प्रेरणादायी शिक्षक बनें, जो केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के जीवन में आशा, आत्मविश्वास और सकारात्मक परिवर्तन का संचार करें।

याद रखिए –

“एक साधारण शिक्षक केवल पढ़ाता है,

एक अच्छा शिक्षक समझाता है,

एक श्रेष्ठ शिक्षक प्रेरित करता है,

और एक महान शिक्षक जीवन बदल देता है।”

आपकी कलम में विचारों की शक्ति हो, आपके व्यक्तित्व में संस्कारों की गरिमा हो, और आपके शिक्षण में ऐसा प्रकाश हो जो आने वाली पीढ़ियों का भविष्य आलोकित कर दे।

उज्वल भविष्य, सतत् प्रगति, उत्कृष्ट उपलब्धियों एवं निरंतर सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

Abhiyam



संदेश

मृत्युंजय कुमार

व्याख्याता, (जन्तु विज्ञान)
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी- 823001

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका "अत्त दीप" के तृतीय संस्करण का प्रकाशन प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं के सहयोग से किया जाना महाविद्यालय परिवार के लिए हर्ष, उल्लास एवं गर्व का विषय है। इस ई-पत्रिका का प्रकाशन प्रशिक्षुओं की क्षमता, प्रतिभा, लगन, उत्साह, सकारात्मक सोच, सृजनशीलता, कलात्मक ज्ञान, उदार दृष्टिकोण एवं उनके अथक प्रयास से ही संभव हो पाया अपने आप में चार चाँद लगाता है।

"अत्त दीप" का अर्थ होता है—अपना प्रकाश खुद बनना। यह भगवान बुद्ध का महान उपदेश है। इसका अर्थ है अपने आप को प्रकाशित करना एवं दूसरों के लिए भी प्रकाश जलाना। महाविद्यालय की पत्रिका "अत्त दीप" प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं में समाहित निबंधकार, कहानीकार, कवि, संवेदनशीलता तथा उनकी प्रबुद्ध विचारशीलता का प्रदर्शन करने का एक सशक्त माध्यम है।

NEP 2020 में अच्छादित उद्देश्यों/लक्ष्यों को इस पत्रिका के माध्यम से प्रशिक्षुओं के बीच नेतृत्व क्षमता, संगठन, कौशल भावना एवं समूह भावना के विकास का ज्वलंत उदाहरण है। साथ-ही-साथ व्यक्तित्व विकास हेतु संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक विकास पर बल देकर रचनात्मक पहल कर प्रशिक्षुओं के समग्र विकास को दर्शाती है। प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं द्वारा स्वरचित कविता, कहानी, संस्मरण, रचनात्मक लेखन उनके अंदर समाहित साहित्यिक गुणों को प्रदर्शित करता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी प्रशिक्षु आने वाले समय में एक सफल शिक्षक बनकर अपने शैक्षिक कार्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन कर सन् 2047 तक विकसित भारत बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

अंत में महाविद्यालय की ई-पत्रिका प्रकाशन में सहयोग के लिए समस्त व्याख्याताओं, संपादक मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना देता हूँ।





संदेश

श्री प्रीतम कुमार दीपक
व्याख्याता (शैक्षिक प्रायोगिकी)
अकादमिक प्रभारी
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया जी

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की वार्षिक पत्रिका "अत्त दीप" हमारे संस्थान की साहित्यिक, शैक्षिक एवं रचनात्मक गतिविधियों का एक सशक्त दर्पण है। इस पत्रिका में प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं की प्रतिभा, सृजनात्मक सोच, लेखन कौशल तथा विविध रचनात्मक अभिव्यक्तियों को स्थान प्रदान किया गया है। यह उनके ज्ञान, कल्पनाशीलता और रचनात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करने का एक प्रभावी मंच है।

इस पत्रिका के माध्यम से प्रशिक्षुओं के मध्य साहित्यिक चेतना, अभिव्यक्ति कौशल एवं नवाचार की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। प्रशिक्षुओं और शिक्षकों की रचनाएँ न केवल उनके बौद्धिक विकास को दर्शाती हैं, बल्कि समाज, शिक्षा और संस्कृति के प्रति उनकी संवेदनशीलता को भी प्रतिबिंबित करती हैं।

मुझे यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे प्रशिक्षु विभिन्न विधाओं में अपनी रचनात्मक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, लेख, संस्मरण एवं अन्य साहित्यिक रचनाएँ उनके भीतर निहित प्रतिभा और परिश्रम का परिचय देती हैं।

**" नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।"**

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी प्रशिक्षु भविष्य में एक आदर्श शिक्षक के रूप में समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। विकसित भारत के निर्माण में आपका योगदान शिक्षा के माध्यम से नई दिशा प्रदान करेगा।

अंत में, इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी शिक्षकगण, संपादक मंडल के सदस्यों तथा प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।







संदेश

श्री राम सागर यादव

व्याख्याता – भौतिक विज्ञान
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी, बिहार-823001

मैं अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी द्वारा प्रकाशित "अत्त दीप" पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ। यह पत्रिका शिक्षकों, प्रशिक्षुओं एवं विद्यार्थियों को अपने विचारों, अनुभवों तथा रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करेगी। आज के बदलते शैक्षिक परिवेश में ऐसी पत्रिकाएँ ज्ञान, संवाद एवं नवाचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक सोच, सृजनात्मकता तथा शोधपरक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करेगी। साथ ही, यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों की पूर्ति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी। यह प्रयास शिक्षा जगत में नई ऊर्जा, नई प्रेरणा और नई संभावनाओं का संचार करेगा।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी संपादकों, प्रशिक्षुओं एवं सहयोगियों को उनकी लगन, परिश्रम और समर्पण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ। आशा है कि "अत्त दीप" ज्ञान की यह ज्योति सदैव प्रज्वलित रखेगी और शिक्षा के क्षेत्र में नई उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

सादर शुभकामनाओं सहित।





संदेश

श्री राज कुमार
व्याख्याता (सामाजिक विज्ञान)
इंटरनीशिप इंचार्ज
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया जी

**“स्वप्नं पश्यति यो नित्यं, कर्मणि रमते सदा।
परिश्रमेण सिद्ध्यन्ति, लक्ष्याणि न संशयः॥”**

अर्थ:- जो निरंतर (श्रेष्ठ) स्वप्न देखता है और सदैव अपने कर्म में लीन रहता है, उसके लक्ष्य परिश्रम से निश्चित ही सिद्ध होते हैं—इसमें कोई संशय नहीं है।

प्रिय शिक्षक प्रशिक्षुओं,
आप सभी राष्ट्र के निर्माता हैं। शिक्षक का पद केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि समाज को एक नई दिशा देने का पवित्र संकल्प है। उपरोक्त श्लोक आपके इस प्रशिक्षण काल और आगामी शिक्षक जीवन के लिए एक मार्गदर्शक मंत्र है।

एक कुशल शिक्षक बनने की इस यात्रा में आपको **तीन सूत्रों** को आत्मसात करना होगा:

श्रेष्ठ स्वप्न देखना (Vision):

सबसे पहले अपनी आँखों में एक सजग स्वप्न सजाइए—एक ऐसा स्वप्न जहाँ आपका हर छात्र शिक्षित, संस्कारित और आत्मनिर्भर बने।

कर्म में रमन (Dedication):

अपने शिक्षण कौशल (Teaching Skill), पाठ योजना (Lesson Planning) और नए शिक्षण प्रयोगों में पूरी तरह रम जाइए। जब आप अपने कर्म से प्रेम करेंगे, तभी आप छात्रों में सीखने की ललक पैदा कर पाएंगे।

अथक परिश्रम (Hard Work):

ज्ञान की साधना कभी सरल नहीं होती। आपका आज का कठिन परिश्रम और सीखने की यह प्रक्रिया ही कल आपको एक 'आदर्श शिक्षक' के रूप में स्थापित करेगी। गया जी की इस ऐतिहासिक और ज्ञान की पावन भूमि पर, **College of Teacher Education (CTE), Gaya Ji.** के माध्यम से आप सभी को अपने भीतर की क्षमताओं को तराशने का जो सुअवसर मिला है, उसका पूर्ण उपयोग करें।

याद रखिए, जब एक शिक्षक निरंतर सीखता है और परिश्रम करता है, तो उसके सामने आने वाले सभी शैक्षणिक लक्ष्य अवश्य सिद्ध होते हैं। आपके भीतर असीम ऊर्जा और राष्ट्र को बदलने का सामर्थ्य है।

उज्वल भविष्य और सफल प्रशिक्षण की अनंत शुभकामनाएँ!



संदेश

श्री शिव कुमार चौधरी

व्याख्याता (फाउंडेशन कोर्स)
पुस्तकालय प्रभारी
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी- 823001

“ मनुष्य केवल शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य बन सकता है।”

- काँट

ज्ञान और बोधिसत्व की पावन भूमि पर स्थित अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय (C.T.E), गया जी के लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव का क्षण है कि ई पत्रिका "अत्त दीप" का नवीन संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। किसी भी शिक्षण संस्थान की पत्रिका, संस्थान के बौद्धिक चिंतन, रचनात्मकता एवं वैचारिक प्रगति का जीवंत दर्पण होता है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में C.T.E गया जी की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है, जहाँ पूर्व सेवा-कालीन प्रशिक्षण के साथ-साथ सेवाकालीन प्रशिक्षण भी संचालित होता है। शिक्षक से आशय डिग्री के आधार पर परीक्षा पास कर अध्यापन कार्य में संलग्न होकर छात्रों को केवल किताबी ज्ञान देना ही नहीं, बल्कि बच्चों का चहुँमुखी व्यक्तित्व विकास करना, संस्कार देना, चरित्र निर्माण करना एवं सामाजिक जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाना भी है। इसके लिए खुद संस्थान के भावी राष्ट्र निर्माताओं को कुशल शिक्षक के साथ-साथ संवेदनशील, नवोन्मेषी एवं नैतिकता से युक्त अनुशासित होना होगा, तभी छात्रों को जीवन के वास्तविक मूल्यों को सिखाने में सफल साबित होंगे।

"अत्त दीप" ई-पत्रिका को इस संस्थान के भावी राष्ट्रनिर्माताओं द्वारा कहानी, कविता, यात्रा वृत्तांत, निबंध, आलेख आदि वैचारिक अभिव्यक्ति एवं रचनात्मकता के माध्यम से पत्रिका को जीवंत कर दिया है। प्रशिक्षु छात्र-छात्राओं द्वारा प्रेरणादायी भावनाएँ अभिव्यक्त करना इस बात को बल प्रदान करता है कि नई शिक्षा नीति 2020 के सापेक्ष शिक्षण की बारीकियों को सीखकर समाज एवं देश के चुनौतियों पर चिंता के साथ चिंतन भी कर रहे हैं।

इस पुनीत कार्य में मार्गदर्शक के रूप में भूमिका का निर्वहन कर रहे आदरणीय प्र० प्राचार्या महोदया, दिन-रात एक कर इसे मूर्त रूप देने वाले आदरणीय श्रीमती अमृता मैम के साथ-साथ संपादन मंडल के सभी सदस्यों, अपनी लेखनी से पत्रिका को जीवंत करने वाले संस्थान के सभी विद्वत व्याख्यातागण एवं प्रशिक्षु छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा प्रशिक्षु छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।





संदेश

डॉ. अमिताभ बच्चन

व्याख्याता - गणित
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी-823001

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका "अत्त दीप" का तृतीय अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट मंच है। ज्ञान, नवाचार और रचनात्मकता के माध्यम से यह महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है।

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी दक्षिण बिहार का एक प्रतिष्ठित शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है। यहाँ विद्यार्थियों को एक सक्षम, संवेदनशील एवं उत्तरदायी शिक्षक बनने के लिए प्रेरित किया जाता है।

इस ई-पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी छात्र-छात्राओं, व्याख्याताओं तथा संपादकीय मंडल को मैं हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए प्रेरणादायक एवं जानवर्धक सिद्ध होगी।





संदेश

डॉ. विभा सिंह

व्याख्याता – जीव विज्ञान
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी- 823001

"जान वो सागर है जहाँ कभी भी कोई कमी नहीं रहती है।"

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं द्वारा "अत्त दीप" पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत ही रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक पहल है।

प्रशिक्षुओं द्वारा पत्रिका के माध्यम से कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, चिंतनशीलता, नेतृत्व, कुशलता सहयोग की भावना आदि अनेक गुणों को दर्शाता है जो किसी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पत्रिका का संकलन एवं सम्पादन अति प्रशंसनीय है। यह संस्थान को गरिमामय एवं उत्कृष्ट बनाता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका के सभी अभिलेख शैक्षिक संस्थाओं के विकास, छात्रों के सर्वांगीण विकास एवं शैक्षणिक गतिविधियों के परिचायक होंगे। इसके लिए सभी सम्मानित सदस्यों और सभी छात्र-प्रशिक्षुओं को ढेर सारी शुभकामनाएँ देती हूँ तथा इनके उज्ज्वल भविष्य की सदा कामना करती हूँ।

Bangla





संदेश

डॉ० अशोक कुमार

व्याख्याता, फाउंडेशन
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय
गया जी, बिहार- 823001

यह बहुत हर्षोल्लास की बात है कि अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी के प्रशिक्षु छात्र-छात्राओं के रोम - - रोम में उत्सुकता को बढ़ाने के लिए वार्षिक ई-पत्रिका "अत्त दीप" प्रकाशित की जा रहा है।

आज के समय में शिक्षा सभी के लिए जरूरी है। शिक्षा विहीन मनुष्य पशु के समान माना जाता है शिक्षा से ज्यादा समय मूल्यवान माना जाता है।

"Time is Money" अर्थात् समय ही धन है। बीता हुआ समय पुनः वापस लौटकर नहीं आता है। उसी प्रकार जिस प्रकार से धनुष से निकला हुआ बाण वापस लौट कर नहीं आता है शिक्षा और समय दोनों में अन्योनाश्रय संबंध हैं। अर्थात् शिक्षा और समय दोनों में तिरसठ (63) का संबंध है। समय के अनुसार मनुष्य को शिक्षित बनना अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आनंदायक होता है। समय के बीत जाने के बाद मनुष्य को अपने आप में शिक्षित बनने में बहुत ज्यादा कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है।

इसलिए मैं सभी बच्चों को यही सलाह देना चाहता हूँ कि समय का सदुपयोग सही तरीके से करें और समय का सही सादुपयोग कर सही समय पर पढ़ाई कर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाकर देश के लिए एक सही कर्णधार नागरिक बनें और अपने कर्तव्यों का सही रूप से पालन करें।



साक्षात्कार

डॉ० गीता पाण्डेय
प्रभारी प्राचार्या
अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय,
गया जी- 823001

महाविद्यालय की पत्रिका अत्त दीप के लिए प्राचार्या श्रीमती (डॉ.) गीता पाण्डेय का साक्षात्कार महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं द्वारा लिया गया। इस साक्षात्कार में प्राचार्या ने अपने प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के सफर तथा शिक्षा से जुड़े अपने सुझाव एवं NEP 2020 के तहत अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय के स्वरूप तथा अन्य विषयों पर बातचीत की है।

प्रस्तुत हैं साक्षात्कार के दौरान उनसे हुई बातचीत का संपादित

प्रश्न 1. प्राचार्य (Principal) के रूप में आप अपने महाविद्यालय में कौन-कौन से बदलाव देखना चाहेंगी?

शिक्षक प्रशिक्षण से सम्बंधित महाविद्यालय होने के कारण प्रभावी शिक्षक गढ़ना हमारा मूलभूत उद्देश्य है। इस हेतु प्रशिक्षु शिक्षकों को हर तरह से सशक्त बनाना नितांत आवश्यक है। प्रशिक्षु शिक्षकों का सशक्तिकरण बहुत हद तक उनके इंटरनीशिप एवं प्रायोगिक अनुभवों पर निर्भर करता है। इन अनुभवों को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। अनुसन्धान और नवाचार को प्रोत्साहित करने की भी आवश्यकता है। इसके लिए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सेमिनार का आयोजन एवं शोध पत्रिका के प्रकाशन पर ध्यान केन्द्रित करना अनिवार्य है। इन प्रयोगों के द्वारा मैं महाविद्यालय को एक जीवंत, प्रेरणादायक, सकारात्मक और समावेशी शिक्षण स्थल के रूप में विकसित देखना चाहती हूँ।

प्रश्न 2. एक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में आप अपनी क्या-क्या जिम्मेदारियाँ मानती हैं?

एक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्राचार्या होने के नाते मेरी अनेक शैक्षणिक, प्रशासनिक, नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियाँ हैं किन्तु मेरी प्रथम एवं सर्वोच्च जिम्मेदारी भावी शिक्षकों का निर्माण करना है। ये शिक्षक आने वाली पीढ़ियों को दिशा देने वाले हैं। अतः आत्मविश्वासी, संवेदनशील एवं कुशल शिक्षकों को गढ़ना सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के साथ-साथ नैतिक दायित्व भी है। इसके अतिरिक्त टीम भावना, सहयोगी कार्य संस्कृति का विकास, अनुशासन, समय-प्रबंधन, संसाधन-प्रबंधन, सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना इत्यादि अनेकों जिम्मेदारियाँ हैं जिनको भलीभांति पूर्ण करने पर ही संस्थान का सुचारु संचालन संभव है।

प्रश्न 3. पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के लिए विभिन्न सह-पाठ्यक्रम (Co-curricular) गतिविधियों को आप कितना महत्वपूर्ण मानती हैं?

शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य क्रियाकलापों का विशेष महत्व है। मेरा मानना है कि "एक अच्छा शिक्षक केवल किताबों से नहीं बनता, वह जीवन के अनुभवों, कलाओं, खेलों और सामाजिक सरोकारों से बनता है।" मैं सह-शैक्षणिक गतिविधियों को पूरक नहीं, बल्कि अनिवार्य मानती हूँ। इसके द्वारा

व्यक्तित्व के विविध गुणों यथा आत्मविश्वास, नेतृत्व, सहयोग, भावनात्मक संतुलन इत्यादि का विकास संभव हो पाता है। यह छात्रों में सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण है। एक तरह से शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

प्रश्न 4. आप छात्राध्यापकों को क्या सुझाव देना चाहेंगी ताकि वे केवल सफल शिक्षक ही नहीं, बल्कि बच्चों के मार्गदर्शक और मित्र भी बन सकें?

मैं अपने छात्राध्यापकों को यही कहना चाहती हूँ कि एक शिक्षक का काम केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं है। उसका असली काम है हर बच्चे में यह विश्वास जगाना कि तुम कुछ भी कर सकते हो और मैं तुम्हारे साथ हूँ। जब एक शिक्षक गाइड और मित्र की भूमिका में होता है तब शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, जीवन बदलने का माध्यम बन जाती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि उनकी सोच को समझें और सम्मान दें, अपना आत्म-मूल्यांकन करते रहें और अपनी संवेदनशीलता को कभी न खोएँ। संवाद की संस्कृति में हमेशा विश्वास रखें।

प्रश्न 5. समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) सभी पृष्ठभूमियों से आने वाले बच्चों को समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में किस प्रकार सहायता करती है?

समावेशी शिक्षा सभी पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए वरदान है। यह प्रश्न आपकी समानता, संवेदनशीलता एवं शैक्षिक दृष्टि को परखता है। समावेशी शिक्षा द्वारा भेदभाव एवं पूर्वाग्रह समाप्त होते हैं। सभी के आत्मसम्मान एवं गरिमा की रक्षा होती है। विविधता से सीखने का व्यापक अवसर प्राप्त होता है। अलग-अलग पृष्ठभूमि के छात्र एक-दूसरे से सीखते हैं। उनमें सांस्कृतिक विविधता की समझ विकसित होती है।

सभी छात्रों में सहानुभूति एवं सहिष्णुता का भाव जागता है। इस प्रकार समाज के विविध वर्गों के प्रति व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है। समावेशी शिक्षा केवल एक नीति नहीं, यह एक मानवीय प्रतिबद्धता है। जब हम किसी एक बच्चे को शिक्षा से वंचित करते हैं, तो हम पूरे समाज को कमजोर करते हैं और जब हम हर बच्चे को शामिल करते हैं तो हम एक ऐसे भारत का निर्माण करते हैं जहाँ हर सपने को उड़ान मिलती है।

प्रश्न 6. विद्यार्थियों के लिए अच्छे सुगमकर्ता (Facilitators) बनने हेतु आप हम सभी को क्या सुझाव देना चाहेंगी?

फैसिलिटेटर वह नहीं जो सब कुछ जानता है बल्कि फैसिलिटेटर वह है जो छात्र को स्वयं जानने का अवसर देता है। इसके लिए कक्षा में छात्रों के लिए सुरक्षित एवं खुला वातावरण बनाएँ, उसकी राय का सम्मान करें, उसे निर्णय प्रक्रिया में शामिल करें, सक्रिय शिक्षण विधियों का प्रयोग करें और सबसे महत्वपूर्ण स्वयं एक आदर्श बनें। एक फैसिलिटेटर बनना एक यात्रा है, मंजिल नहीं। हर दिन कुछ नया सीखें, हर छात्र से कुछ नया पाएँ। याद रखें जब आपका छात्र स्वयं प्रश्न पूछने लगे, स्वयं उत्तर खोजने लगे, स्वयं सोचने लगे तो समझिए आप एक सफल फैसिलिटेटर बन गए हैं और यही शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य है।



प्राचार्या महोदया- डॉ० गीता पाण्डेय एवं संपादक मण्डल (2024-26 के प्रशिक्षु)



Article

Buddhist Middle Path and Biological Homeostasis : A Comparative Study of Balance and Regulation

Amrita Priyam
(Lecturer)

Introduction

The concept of balance occupies a central position in both Biological Sciences and Buddhist Philosophy, although each approaches it through different frameworks and objectives. In Biology, mechanisms such as homeostasis, osmoregulation, hormonal regulation, and motivational systems maintain internal stability and ensure survival within changing environments. In Buddhism, the principle of the **Middle Path** emphasizes moderation, equilibrium, and the avoidance of extremes as a means of reducing suffering and cultivating well-being.

The Middle Path: A Way of Excellence, Not Mediocrity

The concept of the "**Middle Path**" is often misunderstood. Many people casually interpret it as choosing an average or compromised course between two extremes. Such an interpretation fails to capture the true depth of the principle taught by Gautama Buddha.

The Middle Path does not signify mediocrity, weakness, or a lower standard of action. Rather, it represents the **avoidance of harmful extremes** that disturb balance and well-being. Buddha advocated neither indulgence in excessive pleasures nor self-destructive austerity. Instead, he emphasized a path of wisdom, balance, and conscious living.

From a Biological and Psychological perspective, optimal functioning depends upon balance. Living systems maintain health through **homeostasis**—a state of dynamic equilibrium. Whether in physical health, mental well-being, education, or professional practice, the most effective approach is often not an extreme one but an optimal and well-regulated one.

In this sense, the Middle Path may be understood as a form of "**optimal standard practice.**" It is not a compromise with inferiority; it is a disciplined pursuit of what is most appropriate, sustainable, and beneficial. True excellence is not always found at the extremes. More often, it emerges from balance, discernment, and thoughtful action. It is a path of excellence rooted in equilibrium rather than excess. While Biology explains stability through physiological regulatory processes and Buddhism interprets balance through ethical and philosophical practice, both traditions engage with a comparable question:

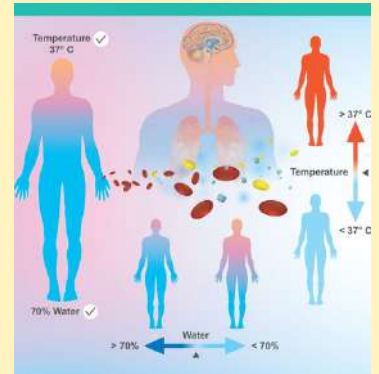
How can systems maintain equilibrium in the face of constant change?

This comparative discussion explores the relationship between biological regulation and Buddhist thought to demonstrate how scientific and philosophical perspectives together contribute to a broader understanding of balance, stability, and human existence.

Analytical Comparison of the Middle Path with Physiological Homeostasis

The Buddhist concept of the Middle Path emphasizes avoiding extremes and maintaining balanced functioning. Human physiology demonstrates a comparable principle through homeostasis, where survival depends upon

maintaining internal variables within optimal ranges rather than allowing excessive deviation. The following analytical comparison illustrates how physiological systems reflect the principle of moderation



Understanding Balance in Biology and Buddhism

Human civilization has long attempted to understand how stability and well-being can be maintained. In biological sciences, this stability is explained through physiological homeostasis, whereas Buddhist philosophy explains it through the principle of the Middle Path. Though developed in entirely different intellectual traditions, both ideas emphasize regulation, adaptation, and avoidance of imbalance. This report analytically compares these concepts through biological and Buddhist examples.

Conceptual Understanding

Physiological homeostasis refers to the body's ability to maintain relatively stable internal conditions despite external environmental changes. The survival of organisms depends upon this continuous adjustment.

On the other hand, the **Middle Path** is a philosophical principle that advocates moderation and avoidance of extreme behaviors. It proposes that neither excessive pleasure nor excessive deprivation leads to true well-being.

Biological Examples Demonstrating Homeostasis

Temperature Regulation

The normal body temperature ranges between 36.5–37.5°C. When body temperature rises above the normal range, sweating increases heat loss from the body and blood vessels dilate to release excess heat. These physiological responses help restore internal equilibrium. When body temperature decreases below the normal range, shivering generates heat through muscle activity, while vasoconstriction reduces heat loss by narrowing blood vessels. Thus, biological systems continuously work toward maintaining equilibrium rather than allowing extreme conditions to persist.

Blood Glucose Control

The normal fasting blood glucose level ranges between **70–100 mg/dL**. Following food intake, insulin secretion increases, which lowers blood glucose concentration by promoting glucose uptake into cells. During starvation or fasting conditions, glucagon secretion increases, leading to increased glucose availability in the bloodstream. This feedback mechanism prevents both glucose deficiency and excess, thereby maintaining metabolic balance.

Blood pH Regulation

The normal blood pH ranges between **7.35–7.45**. Even minor deviations from this range can disrupt cellular functioning and physiological processes, demonstrating how living systems prioritize the maintenance of balanced internal conditions.

Buddhist Examples Demonstrating the Middle Path

A. Rejection of Extremes

Gautama Buddha experienced both luxurious living and severe ascetic practices before realizing that neither extreme produced lasting understanding.

This observation led to the idea that: Excessive indulgence creates attachment and excessive deprivation creates suffering .

B. Balanced Meditation Practice

Buddhist meditation emphasizes balanced effort.

C. Everyday Human Conduct

Examples include:

Moderate eating habits , Balanced sleep cycles and Controlled emotional responses.

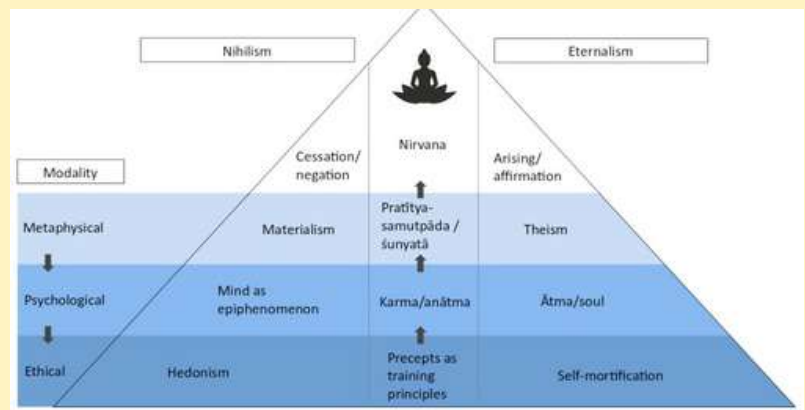
These practices demonstrate practical applications of the **Middle Path**.

Analytical Comparison

Similarities

1. Balance Functions as a Regulatory Principle

Homeostasis maintains biological stability and the Middle Path maintains psychological stability. Both suggest that functioning depends upon balanced regulation.



2. Extremes Produce Dysfunction

Biology demonstrates that Hyperthermia damages tissues and Hypoglycemia impairs brain function.

Buddhist philosophy suggests that excess desire generates suffering and excess deprivation weakens body and mind. Thus, both reject extremes as destabilizing forces.

3. Continuous Adjustment Is Necessary

Neither concept represents a fixed state. **Homeostasis constantly adjusts through feedback loops.** Similarly, the Middle Path requires **Continuous awareness and Self-regulation.**

Critical Interpretation

Homeostasis may be interpreted as balance operating at the biological level, whereas the Middle Path represents balance operating at the psychological and behavioral level.

Biological Science argues that survival depends upon regulated internal conditions. Buddhist thought argues that well-being depends upon regulated behaviour and mental states. Therefore, both systems, despite different origins, converge upon a common principle:

Sustained stability emerges through balanced regulation rather than extremes.

Conclusion

The comparative analysis demonstrates that physiological homeostasis and the Middle Path are conceptually related through their shared emphasis on equilibrium. While biology explains balance through physiological feedback systems, Buddhism explains balance through conscious moderation. Together they provide an interdisciplinary framework for understanding human health and well-being.

Source:- Wikipedia and other educational references.





मैं एक नारी, मैं एक कहानी
संघर्षों से लिखी मेरी जुबानी।

छोटे से शहर की छोटी गलियों में,
सपनों ने ली थी उड़ान।

लोगों ने रोका, कहा
" मत बढ़ो आगे, यही है पहचान"।

दो बार गिरी मैं राहों में,
आंसू भी आए आंखों में।

पर दिल ने कहा
"रुकना नहीं, अभी बाकी है आसमान"।

बंधन आए वैवाहिक जीवन के,
जिम्मेदारियों के भार।

पर हौसलों की लौ जलती रही,
न हुआ सपनों से प्यार, कम एक बार।

सुबह की किरण संग उठी मैं
रातों में भी जागी।

मेहनत की चिंगारी ने फिर
किस्मत की दिशा बदल डाली।

आज खड़ी हूँ गर्व से कहती
मैंने खुद को पहचाना है।

हार नहीं, हर बार सीखा
यह मेरी जीत का तराना है।



मैं बेटी हूँ मैं शक्ति हूँ,
मैं हार नहीं मानूंगी।

चाहे कितनी भी आए कठिनाइयां,
मैं अपने सपने को जानूंगी।

" उत्प्रेरक संदेश "

" स्त्री केवल घर की दीवारों तक सीमित नहीं
वह उन दीवारों को सहारा देने वाली शक्ति है।
(वह बेटी है- तो आशा है।
वह पत्नी है- तो विश्वास है।
वह मां है- तो संपूर्ण सृष्टि का आधार है।)



आधुनिक नारी का जज़्बा

पंखों के बिना भी उड़ना जानती है,
वह हर मुश्किल को हराना जानती है।
आज की नारी किसी से कम नहीं,
वह अपने दम पर इतिहास बनाना जानती है।

Essay

SUCCESS HAS NOTHING TO DO WITH AGE

Guriya Parween

Roll No: 10

Session: 2025-2027



We should never give up in our life .If due to some reason studies stop then we should not lose hope. Whenever nature gives us such an opportunity to do something in life, to move forward to become successful. We should become active at that very moment and move forward. There are many such examples in nature which teach us not to give up. In which one most important example is seed. If any grain gets scattered from the heap then nature keeps it in dormant state and there is so much nutrition in that grain that whenever it finds a suitable environment, it germinates and become a big plant or tree. It grows leaves, flowers bloom and eventually fruits also develop. It produces so many seeds from tree that thousands of trees or plants will grow and make our environment more beautiful. A grain which may have been tripped by many feet and also become a green plant or tree, so why can't we humans? We should ignore everyone's words and move ahead in life. We should never become weak thinking that we are scattered. We should wait for that favourable environment. That day will definitely come and one day we too will be successful. What a great thing someone has said.

If you want to erase your own existence, sometimes the grain meets the dust and becomes a flower.

(Mita de apni hasti ko agar kuchh martaba chahiye, ke daana khaak me milkar gul- e- gulzaar hota hai.)

Travelogue

The Journey of Faith and Devotion

When a river leaves its origin, it can reach the ocean. When a tree grows, it has faith in the sunlight. In human beings, when intuition grows, it becomes self-confidence. The walking tour of 105 km is also an act of self-determined belief and faith. The tour started from **Ajgaibinath Dham** to **Baidyanath Dham**, where people from different cultures joined together to show their prosperity and faith.

My experience of this walking tour was also amazing. It lasted for four to five days. On the first day in the evening, we took the **Ganga Jal** and walked around 15 km. On the next day, the tour of 35 km took us through various natural elements like trees, mountains, rivers, and plateaus which played a major role in maintaining Kavadi Yatra and helping to complete the journey. On the next morning, the walking tour of another 35 km started with drizzling rain and the shining sun in a mountainous environment. People from different states organised camps along the pathway to help the Kawariyas with food, lodging, and entertainment. On the fourth day, the journey of 105 km came to an end, when the faith of people converted into the spirituality of Shiva.



Mohit Raj

Roll: 24

Session: 2024-26





काव्य समीक्षा

विषम परिस्थितियों में संघर्ष की प्रेरणा : रामधारी सिंह दिनकर की कविताएँ

डॉ० नीतू सिंह
वरीय व्याख्याता

**“कर्मभूमि पर चलो निरंतर, थमना यहाँ निषेध है,
जीवन की हर राह कठिन है, संघर्षों का ही गेह है।
आशा मत बाँधो फल की, केवल कर्म तुम्हारा सत्य,
परिश्रम से ही खिलते हैं, सफलता के मधुर रथा।”**

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी भारतीय साहित्य में ओज, साहस, आत्मसम्मान और संघर्ष के कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनकी कविताएँ केवल शब्दों का संग्रह नहीं हैं, बल्कि वे मनुष्य के भीतर छिपी शक्ति को जगाने वाली प्रेरणा का स्रोत हैं। मैंने अपने जीवन में जब-जब निराशा, असफलता, भय या संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना किया है, तब-तब दिनकर की कविताओं ने मुझे हार न मानने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

वर्तमान समय में जब व्यक्ति मानसिक तनाव, प्रतियोगिता, आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक चुनौतियों से घिरा हुआ है, तब दिनकर की कविताएँ आत्मविश्वास प्रदान करती हैं। वीरता, कर्म, स्वाभिमान और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की प्रबल भावना उनकी कविताओं में सहज रूप से देखने को मिलती है।

**“सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है।
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते।”**

ये पंक्तियाँ मेरे हृदय को स्पर्श कर जाती हैं। कई बार जब परिस्थितियाँ मुझे कमजोर बना देती हैं और मन को व्याकुल करती हैं, तब दिनकर की पंक्तियाँ मुझे धैर्य सिखाती हैं तथा आत्मविश्वास का संचार करती हैं। मुझे सीख मिलती है कि जीवन में कोई कठिनाई स्थायी नहीं होती। यदि धैर्य एवं साहस से काम लिया जाए तो हर समस्या का समाधान संभव है।

“मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।”

राष्ट्रकवि दिनकर की इन पंक्तियों में संघर्ष की अद्भुत शक्ति दिखाई देती है। यदि कोई व्यक्ति पूरे मन से परिश्रम और प्रयास करे, तो असंभव कार्य भी संभव हो सकता है। विद्यार्थी जीवन में भी इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद मुझमें आशा का संचार होता था। अपने विद्यार्थियों को भी जब असफलता से दुखी देखती हूँ, तो इन्हीं पंक्तियों के माध्यम से प्रेरित करती हूँ। यह केवल प्रेरणा नहीं, बल्कि जीवन का सत्य है। जब व्यक्ति बार-बार असफल होता है, तब उसके भीतर निराशा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। ऐसे समय में दिनकर की कविताएँ आशा का दीपक जलाती हैं। वे हमें भाग्य पर निर्भर होने के बजाय कर्म करने के लिए प्रेरित करती हैं।

हर मनुष्य को यह गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि संघर्ष जीवन का स्वाभाविक हिस्सा है। कठिनाइयों से मनुष्य मजबूत बनता है। इसलिए हमें समस्याओं से घबराने के बजाय उनका सामना करना चाहिए। कोई भी संघर्ष व्यर्थ नहीं जाता। स्पष्ट लक्ष्य एवं सच्चे प्रयास से कठिन से कठिन परिस्थितियाँ भी बदल सकती हैं।

**“क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो।”**

इन पंक्तियों ने मुझे सिखाया कि हमें विनम्र अवश्य होना चाहिए, लेकिन इतना अधिक भी नहीं कि लोग हमारे आत्मसम्मान को चोट पहुँचाने लगे। हर बार इन पंक्तियों ने मुझे प्रेरणा दी कि अपने अधिकारों और सम्मान के लिए खड़ा होना भी आवश्यक है। विनम्रता तभी सार्थक होती है, जब मनुष्य के भीतर सामर्थ्य हो। कमजोर व्यक्ति की विनम्रता अक्सर उसकी मजबूरी समझी जाती है, जबकि शक्तिशाली व्यक्ति की क्षमा महानता मानी जाती है।

**“समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।”**

राष्ट्रकवि की यह पंक्तियाँ चेतावनी देती हैं कि अन्याय होते देखना एवं मौन रहना भी अपराध है। यदि कहीं कुछ गलत हो रहा है और हम मूकदर्शक बने रहते हैं, तो कहीं-न-कहीं हम भी उस अन्याय के भागी हैं। सही समय पर सही बात कहना और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना एक सच्चे मनुष्य का कर्तव्य है।

**“रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ, जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हमें गाँडीव-गदा, लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।”**

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्ध कविता हिमालय की ये पंक्तियाँ ध्यान आकर्षित करती हैं कि हमारे देश को केवल युधिष्ठिर की शांति और अहिंसा ही नहीं, बल्कि अर्जुन के गाँडीव और भीम की गदा जैसी शक्ति की भी आवश्यकता है। दिनकर ने कर्मशीलता और संघर्ष की आवश्यकता को दर्शाया है। केवल आदर्शवाद पर्याप्त नहीं, बल्कि जीवन में साहस और कर्म भी आवश्यक हैं। कई बार परिस्थितियाँ ऐसी आती हैं, जहाँ केवल शांतिप्रिय एवं सहनशील होना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि साहस एवं निर्णय लेने की आवश्यकता होती है।

**“सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।”**

शक्ति और सद्गुणों के संबंध को स्पष्ट करती हुई दिनकर की ये पंक्तियाँ हमें सीख देती हैं कि संसार उसी व्यक्ति के सद्गुणों का सम्मान करता है, जिसके भीतर सामर्थ्य होती है। ये पंक्तियाँ मुझे आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती हैं। जीवन में दया और विनम्रता आवश्यक हैं, लेकिन आत्मबल होना भी उतना ही आवश्यक है। जब तक व्यक्ति आत्मविश्वासी और सक्षम न हो, उसके गुणों का मूल्य नहीं समझा जाता।

**“तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतलाकर,
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना कर्तव्य दिखलाकर।”**

दिनकर जी की इन पंक्तियों का अर्थ समाज के हर व्यक्ति के लिए समझना आवश्यक है। मनुष्य का सम्मान उसके परिवार, जाति या पहचान से नहीं, बल्कि उसके कार्यों से होता है।

“जब नाश मनुष्य पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।”

रश्मिरेथी की ये पंक्तियाँ भारतीय साहित्य और दर्शन के विचारों से मेल खाती हैं कि पतन से पहले मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है। महाभारत में दुर्योधन का चरित्र इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। भगवान श्रीकृष्ण के बार-बार समझाने पर भी उसने विवेकपूर्ण मार्ग नहीं अपनाया और अंततः विनाश को प्राप्त हुआ। अतः स्पष्ट है कि जब मनुष्य पर बुरा समय आने वाला होता है, तब वह अपनी सोचने-समझने की शक्ति खो देता है और गलत मार्ग चुन लेता है। हम सभी अहंकार, क्रोध, लालच एवं मोह में पड़कर गलत निर्णय लेते हैं, जो विनाश की ओर ले जाते हैं।

दिनकर की कविताएँ केवल साहित्य नहीं हैं, वे जीवन का दर्शन हैं। वे बताती हैं कि कठिनाइयाँ जीवन का हिस्सा हैं और हमें संघर्ष करने से डरना नहीं चाहिए। साहस एवं कर्म के बल पर उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। मेरे जीवन पर दिनकर की कविताओं का गहरा प्रभाव पड़ा है। मेरे सोचने और सिखाने का तरीका बदला है। उनसे मुझे अनेक सीख मिली हैं, जैसे— हार मानना समस्या का समाधान नहीं है। जीवन में कठिनाइयाँ हमें और मजबूत बनाने के लिए आती हैं। जब भी मैं जीवन में कमजोर पड़ी हूँ, उनकी कविताओं ने मार्गदर्शन किया है।

राष्ट्रकवि दिनकर की कविताएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी उनके समय में थीं। ये कविताएँ मेरे जीवन की साथी हैं। इस लेख में उनकी कविताओं की कुछ पंक्तियों का ही उल्लेख कर पाई हूँ, जबकि उनकी हर कविता कठिन समय में प्रेरणा देती है, निराशा में आशा जगाती है और संघर्ष में आगे बढ़ने का साहस प्रदान करती है। उनकी कविताओं में ऐसी ऊर्जा है, जो मनुष्य को टूटने नहीं देती, बल्कि हर बार नए उत्साह के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। अंत में दिनकर जी की इन पंक्तियों का उल्लेख अवश्य करना चाहूँगी, जो मनुष्य को संघर्ष, साहस एवं कर्म का संदेश देती हैं—

“नित जीवन के संघर्षों से जब टूट चुका हो अंतर्मन,
तब सुख के मिले समंदर का रह जाता कोई अर्थ नहीं।
संबंध कोई भी हो, लेकिन यदि दुख में साथ न दे अपना,
फिर सुख के उन संबंधों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।
मन कटुवाणी से आहत हो भीतर तक छलनी हो जाए,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का रह जाता कोई अर्थ नहीं।”





GAURAV KUMAR
ICT INSTRUCTOR
session: 2022-24

शीर्षक: कुर्सी का सौदा और बुझते चिराग

कहानी 1: बिहार AEDO पेपर लीक पर आधारित

पटना के मुसल्लहपुर हाट की एक तंग गली के लॉज में, रात के दो बजे भी धीमे बल्ब की रोशनी में पन्ने पलटने की आवाज़ आ रही थी। गौतम पिछले कई महीनों से बिहार AEDO (Assistant Education Development Officer) की परीक्षा के लिए दिन-रात एक किए हुए था। उसने अपनी पूरी जवानी किताबों के नाम कर दी थी। वह कोई मामूली नौकरी नहीं, बल्कि बिहार के प्रशासनिक और विकास तंत्र का हिस्सा बनने का सपना देख रहा था। उसके बूढ़े पिता ने गाँव में अपनी थोड़ी सी खेती गिरवी रखकर गौतम को पटना भेजा था ताकि बेटा अधिकारी बने और पूरे परिवार की तकदीर बदल दे। बिहार के लाखों युवाओं के लिए AEDO जैसी परीक्षा सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि उनके मान-सम्मान और समाज में सिर उठाकर जीने की जंग होती है।

सिस्टम की विफलता और चंद पैसों का खेल

लेकिन जिस व्यवस्था पर गौतम भरोसा कर रहा था, वह अंदर से दीमक की तरह खोखली हो चुकी थी। कुछ सफेदपोश दलालों की मिलीभगत से, परीक्षा से ठीक पहले लाखों-करोड़ों रूपयों के सूटकेस इधर से उधर हो रहे थे। चंद रसूखदार और अमीर लोग, जिनके पास ज्ञान के नाम पर शून्य था, उन्होंने सिर्फ अपने पैसों के दम पर परीक्षा का पूरा पेपर ही खरीद लिया।

जब परीक्षा के दिन गौतम सेंटर से बाहर निकला, तो उसकी आँखों में एक चमक थी—सारे सवाल उसकी मेहनत के दायरे से आए थे। लेकिन शाम होते ही जब न्यूज़ चैनलों की पट्टियों पर चमका कि “बिहार AEDO का पेपर लीक, जांच के आदेश”, तो गौतम के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

“यह सिर्फ एक परीक्षा के पेपर का लीक होना नहीं था, बल्कि बिहार के लाखों ईमानदार युवाओं के भरोसे का कल था।”

एक सुलगता हुआ सवाल

सिस्टम की यह नाकामी हर बार मेधावी छात्रों की छाती पर मूँग दलती है। चंद पैसे वाले लोग, जो दूसरों का हक मारकर अपने नाकाबिल बच्चों को कुर्सियों पर बैठाना चाहते हैं, वे यह नहीं जानते कि वे देश के भविष्य को कितना पीछे धकेल रहे हैं। गौतम ने उस रात खाना नहीं खाया। कमरे की खिड़की से बाहर देखते हुए उसने सोचा—क्या हमारे पसीने की बूंदों की कीमत, उन दलालों के नोटों की गड़ियों से कम है?

यह कहानी बिहार के हर उस छात्र की है जो मेहनत तो कर सकता है, लेकिन भ्रष्टाचार के इस ऊंचे बाजार में अपनी काबिलियत की बोली लगते नहीं देख सकता।

कहानी 2: NEET पेपर लीक पर आधारित

पटना की एक छोटी सी बस्ती में रहने वाले पीयूष की आँखों में बचपन से ही एक सपना तैरता था—गले में स्टेथॉसकोप टांगकर मरीजों की जान बचाना। NEET की परीक्षा क्लैक करना कोई आसान काम नहीं था। फिजिक्स के लंबे फॉर्मूले, केमिस्ट्री के रिएक्शंस और बायोलॉजी की मोटी-मोटी किताबें पीयूष की पूरी दुनिया बन चुकी थीं। उसकी माँ ने अपने सोने के कंगन सिर्फ इसलिए बेच दिए थे ताकि पीयूष के कोचिंग और स्टडी मटेरियल में कोई कमी न आए। पीयूष रोज़ 14 घंटे पढ़ता था, इस उम्मीद में कि उसकी मेहनत उसके पूरे परिवार की किस्मत की लकीरें बदल देगी।

NEET जैसी अखिल भारतीय परीक्षा के लिए देश भर के 20 लाख से ज्यादा बच्चे अपनी रातों की नींद हराम करते हैं। यह देश के सबसे कठिन और पवित्र संघर्षों में से एक है।

जब रसूखदारों ने खरीदी अभ्याथियों की सीटे

लेकिन देश के एक कोने में, कुछ बेहद अमीर और भ्रष्ट लोग इस पवित्र पेशे की बुनियाद ही हिलाने में लगे थे। पेपर लीक माफियाओं ने करोड़ों रुपये लेकर NEET का पेपर उन चंद अमीरजादों के हाथों में सौंप दिया, जिन्होंने कभी ठीक से किताबों को छुआ तक नहीं था। देश के सबसे बड़े मेडिकल एंड्रेंस टेस्ट का पेपर लीक होना इस बात का सबूत था कि हमारा पूरा परीक्षा तंत्र वेंटिलेटर पर आ चुका है।



परीक्षा के बाद जब पीयूष को पता चला कि बड़े पैमाने पर धांधली हुई है और पेपर पहले ही बिक चुका था, तो वह भीतर से टूट गया। जो रैंक उसकी बरसों की तपस्या और मेहनत से उसे मिलनी चाहिए थी, वह रैंक चंद पैसे फेंककर किसी और ने बड़ी आसानी से खरीद ली थी।

“जब जीवन बचाने वाले डॉक्टर की डिग्री ही चोरी के पेपर और रिश्त के दम पर मिलने लगे, तो समझो पूरा समाज ही बीमार हो चुका है।”

दूसरों का हक खाने वाले और हमारा कल

चंद पैसे वाले लोग जो दूसरों की मेहनत का गला घोटकर अपने बच्चों को डॉक्टर बनाना चाहते हैं, वे देश के स्वास्थ्य और भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। पीयूष जैसे लड़के जो अपनी ईमानदारी के दम पर आगे बढ़ना चाहते हैं और देश की सेवा करना चाहते हैं, उनका हक मारकर ये लोग अपनी तिजोरियां तो भर लेते हैं, लेकिन युवाओं के भरोसे को हमेशा के लिए खाली कर देते हैं।

पीयूष ने अपने स्टडी टेबल पर रखी किताबों और डॉक्टर वाली एप्रन को देखा और उसकी आँखें भर आईं। कॉलेज मैगज़ीन के माध्यम से यह सवाल हर उस अमीर और भ्रष्ट इंसान से है—तुमने पैसा देकर पेपर तो खरीद लिया, लेकिन उस ईमानदार छात्र की बरसों की तपस्या और उसके परिवार के बलिदान का हिसाब कौन देगा?

जब तक दूसरों का हक खाने वाले मगरमच्छ सलाखों के पीछे नहीं होंगे, तब तक इस देश के सच्चे टैलेंट और पीयूष जैसे हज़ारों छात्रों की मेहनत के साथ ऐसे ही खिलवाड़ होता रहेगा।

Disclaimer - उपर्युक्त लेख में उल्लिखित व्यक्ति के नाम एवं पदनाम का वास्तविक पात्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।



Saloni Priya

Roll No. : 78

Session : 2024-26

एक पुराना सा सरकारी स्कूल था।
दीवार पर फीका सा लिखा था —
“शिक्षा ही देश का भविष्य है”,
और नीचे बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे।
इसी स्कूल में बी.एड. इंटर्नशिप के लिए कुछ छात्राएँ
आई थीं — सलोनी, पल्लवी, प्रीति, आरती और माधुरी।
सब बहुत एक्साइटेड थीं।

माधुरी बोली—

“यार, आखिरकार टीचर बनने का रियल एक्सपीरियंस
मिलेगा!”

तभी बरामदे से एक तेज आवाज आई—

“कौन हो तुम लोग? और यहाँ खड़े क्यों हो?”

सबने मुड़कर देखा।

एक आदमी सफेद कुर्ता पहने और हाथ में झाड़ू लिए
खड़ा था। चेहरे पर इतना कॉन्फिडेंस जैसे अभी स्टाफ
मीटिंग लेने वाला हो।

सलोनी ने विनम्रता से कहा— “सर, हम बी.एड. ट्रेनी
हैं... इंटर्नशिप के लिए आए हैं।”

आदमी ने थोड़ा सीना फुलाया और बोला— “अच्छा... मैं
श्यामलाल हूँ, इस स्कूल का प्यून।”

“2 सेकंड की ड्रामेटिक चुप्पी हो गई।

पल्लवी ने धीरे से पूछा—

“अच्छा सर...”

लेकिन श्यामलाल ने तुरंत लेक्चर शुरू कर दिया—

“सुन लो सब। यहाँ डिसिप्लिन बहुत जरूरी है। 9 बजे
मतलब 9 बजे। और स्टाफ में ज्यादा गॉसिप नहीं।”

प्रीति ने धीरे से माधुरी के कान में कहा—

“लगता है स्कूल का एचआर डिपार्टमेंट भी यही हैं।”

अगले दिन...

ट्रेनी स्टाफ रूम में बैठकर चाय पी रहे थे और थोड़ी
हँसी-मजाक चल रही थी।

तभी श्यामलाल की एंट्री होती है—

“यह क्या हो रहा है?”

आरती: “सर... चाय ब्रेक।”

श्यामलाल बोले—

“टीचर लोगों को इतना हँसना नहीं चाहिए। पर्सनालिटी
मेंटेन करो।”

माधुरी ने सीरियस चेहरा बनाकर कहा—

“सॉरी सर, आज से हम उदास टीचर बनेंगे।”

सभी ट्रेनी हँसी रोकने लगे।

एक दिन पल्लवी लेट आ गई।

गेट पर ही श्यामलाल खड़े मिल गए।

“10 मिनट लेट! इंटर्नशिप करने आए हो या
पिकनिक?”

पल्लवी बोली—

“सर ट्रैफिक था।”

“श्यामलाल बोले—

“सरकारी स्कूल में ट्रैफिक का बहाना नहीं चलता।”

प्रीति ने साइड में खड़े होकर फुसफुसाया—

“लगता है प्रिंसिपल भी इनसे परमिशन लेकर आते
होंगे।”

धीरे-धीरे ट्रेनी को एक मजेदार आदत हो गई।

जब भी श्यामलाल डॉटते—

“कुर्सी सीधी रखो!”

सब एक साथ बोलते—

“जी श्यामलाल सर!”

एक दिन तो माधुरी ने हद कर दी।

स्टाफ रूम के बाहर एक कागज चिपका दिया:

“डिसिप्लिन इंचार्ज:

श्यामलाल सर

(प्यून + प्रिंसिपल + मोरल साइंस टीचर)”

जब श्यामलाल ने देखा तो पहले गुस्सा आया...

फिर थोड़ी देर बाद खुद ही हँसने लगे।

“तुम लोग भी ना... बहुत शरारती हो।”

उस दिन के बाद श्यामलाल कभी-कभी खुद भी

ट्रेनी के साथ चाय पर बैठ जाते थे।

और जब भी कोई ट्रेनी लेट आता, वो कहते—

“चलो आज माफ कर दिया... वरना प्रिंसिपल को
शिकायत कर देता।”

सलोनी तुरंत बोलती—

“सर... प्रिंसिपल तो आप ही हो।”

श्यामलाल मुस्कुराकर कहते—

“बिल्कुल। यहाँ का अनऑफिशियल प्रिंसिपल।”

और पूरा स्टाफ रूम हँस पड़ता।



बात दशकों पुरानी है, जब तकनीक और जीवन-शैली आज की तुलना में बेहद अलग और सादगी भरी हुआ करती थी। एक छोटे से गाँव के दक्षिण टोला में मिट्टी और फूस से बना मंगरू का एक छोटा सा घर था। मंगरू के घर जब बेटे ने जन्म लिया तो उसने प्यार से उसका नाम रखा - शिबू। घर की हालत ऐसी थी कि बरसात में छप्पर टपकता, गर्मी में दीवार फटती और जाड़े में हवा हड्डी तक चीर जाती। गरीबी के मारे भात बनती तो सब्जी नहीं और हफ्तों दारा के सहारे जीना पड़ता। मंगरू के पास अपनी कोई जमीन नहीं थी, वह दूसरों के खेत में मजदूरी करता। सुबह मुर्गा बाँग देता नहीं कि मंगरू कंधे पर हल रख लेते और बैलों को लेकर खेत की ओर निकल पड़ते। वह दूसरों के खेत में दिन-भर पसीना बहाता और शाम में घर के एक कोने के ओसारा में दुकान भी चलाता, ताकि दो जून की रोटी का जुगाड़ हो सके। शिबू जैसे-जैसे घुटनों के बल से पैरों पर खड़ा हुआ, उसने गरीबी को बहुत नजदीक से देखा।

शिबू स्वभाव से सीधा एवं शर्मीला लेकिन चंचल लड़का था। वह पिता के दुख को समझता था। वह अपने पिता मंगरू का हाथ बंटाने के लिए कंधे पर रखे बैलों को हाँकते हुए खेत निकल जाता, तो कभी बैलों की रस्सी पकड़ता, कभी बैलों को पानी पिलाता, कभी खेतों में पानी मोड़ता, कभी खेत में मेड़ पर मिट्टी चढ़ाता, कभी हल जोतते समय बैलों को "हट-हट" कहकर आगे बढ़ाता, कभी धान ओसाता, कभी भुसा उड़ाता, कभी ढेंकी में धान कूटकर चावल निकालता, तो कभी शाम को पिता की थकी आँखों को आराम देने के लिए दुकान भी चलाता। खेत-खलिहान की मिट्टी और पसीना एवं दुकान उसके बचपन का हिस्सा बन चुका था। वह स्कूल भी जाता, लेकिन पढ़ाई के साथ घर की चिंता हमेशा करते रहता। लेकिन इन जिम्मेदारियों के बीच भी उसका बचपन जिंदा था।

गाँव के बाकी लड़कों की तरह शिबू भी शरारती था। काम एवं पढ़ाई के बीच जब भी शिबू को फुरसत मिलती, वह अपने हमउम्र साथियों के साथ गाँव की पगडंडियों पर दौड़ पड़ता। शाम में लुका-छिपी और गोली (कंचा) उसके जीवन के खेल का हिस्सा बन चुका था। गर्मी के दिनों में दोपहर की चिलचिलाती धूप में भी वह दोस्तों संग आम के बगीचे में घुस जाता। टिकोले (कच्चे आम) तोड़ने के चक्कर में कितनी ही बार आम के मालिक की डाँट पड़ती और कभी-कभी पीठ पर डंडे का चोट भी खानी पड़ती, पर बचपन की जिद के आगे वह दर्द हवा हो जाती। आम पकता तो साथियों संग शिबू भी पेड़ पर चढ़ जाता। कोई डाल हिलाता, कोई नीचे आम बीनता। कई बार तो बगीचे का मालिक सभी साथियों को पकड़ लेता और कहता :-

"अरे बदमाश ! फिर आम तोड़ने आ गया ?"

कभी डाँट पड़ती, तो कभी कान पकड़कर उठक-बैठक लगानी पड़ती। लेकिन अगले दिन फिर वही शरारत ! जैसे-जैसे शिबू बड़ा होता गया, उसके कंधे पर जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती गईं। गर्मी के दिनों में सुबह में विद्यालय जाता वहीं शाम के वक्त एवं गर्मी की छुट्टी में सुबह-शाम घर के मवेशियों (भैंस+बैल) को लेकर जंगल और बधार की ओर निकल जाता। भैंस की चौड़ी पीठ पर बैठकर शान से सवारी करना उसका पसंदीदा शगल था। बधार में गोबर बीनने वाली के ऊपर मवेशियों को छोड़कर शिबू और उसकी मंडली अपनी दुनिया में खो जाते। मवेशियाँ घास चरते रहता और शिबू साथियों संग खेल में मस्त रहता। वह दोस्तों संग बरगद पेड़ के नीचे गिल्ली-डंडा, डोल-पत्ता, फेदौड़ी, कबड्डी, गाना-गोटी और कौड़ियाँ आदि खेल में मशगूल रहता। पूरा मैदान बच्चों की हँसी ठिठोली से गूँज उठता। लेकिन उसकी जिंदगी में एक ऐसा आदमी था, जिससे वह सबसे ज्यादा डरता था।

वो थे - रधु दादा।

रधु दादा, शिबू की आजादी के बीच का सबसे बड़ा रोड़ा थे। रिश्ते में तो वह शिबू के दादा लगते थे, लेकिन शिबू के लिए किसी आफत से कम नहीं थे। गाँव का कौन लड़का कहाँ खेल रहा है, किसने आम तोड़ा, कौन पोखर में नहाने गया - सब पर उनकी नजर रहती। आँखें ऐसी तेज की चील भी शर्मा जाए। शिबू और उसके दोस्त जैसे ही गिल्ली-डंडा या कोई दूसरा खेल खेलने जुटते रधु दादा लाठी टेकते दिखाई पड़ जाते। रधु दादा की आँखें गाँव की हर हलचल पर रहती, खास कर शिबू पर। वह लाठी टेकते कहीं भी बैठ जाते और शिबू पर सीसीटीवी कैमरे की तरह पैनी नजर रखते। जैसे ही शिबू को खेलते देखते, वह अपनी लाठी खटखटाते हुए गरजते -

"अरे शिबूआ ! ई खेलकूद से पेट भरतौ ? पढ़े-लिखे वाला लड़का ई सब अवारागर्दी नहीं करते। चल, अभी तोहरे बाप से कहतानी।"

बस, इतना सुनते ही शिबू का कलेजा धक से हो जाता। घर पहुँचते ही रधु दादा पूरा हिसाब खोल देते - "मंगरू ! तोहर बेटवा दिनभर खेलत रहेला। भैंस दूसरे की फसल चर रही थी, अउर बबुआ गिल्ली मार रहा था।"

फिर क्या - घर लौटते ही शिबू की शामत आ जाती। कभी माँ की तीखी डाँट, कभी पिता की डाँट, तो कभी दादी का यह उलाहना कि - "कुल का नाम डुबाएगा यह लड़का।"

अब शिबू जब भी खेलता, उसकी एक आँख खेल पर और दूसरी आँख रधु दादा को ढूँढ़ती। मार और डाँट से तंग आकर शिबू अक्सर मन ही मन भगवान से विनती करता - "हे भगवान ! ई रधु बुढ़वा कब मरी ? ई मर जाता तो हम चैन से खेलते।"

वक्त का पहिया घूमा। शिबू अब आठवीं में पहुँच चुका था। उम्र के साथ उसके भीतर की समझदारी भी अंगड़ाई ले रही थी। अब वह खेल के साथ-साथ किताबों की अहमियत भी समझने लगा था।

तभी एक सुबह अचानक गाँव में खबर फैली - "रधु दादा नहीं रहे...."

पूरा गाँव उनके दरवाजे पर उमड़ पड़ा। कोई रो रहा था, कोई उनके पुराने किस्से सुना रहा था। शिबू के कानों में भी ई बात सुनाई पड़ी। दौड़े-दौड़े वह भी रधु दादा के दरवाजे पर पहुँचा और भीड़ में खड़ा हो गया। लेकिन आज शिबू के चेहरे पर उदासी था। जिस बूढ़े की मौत की दुआ वह बचपन में करता था, आज उनकी मौत पर शिबू का कलेजा कांप उठा। वह चुपके से भीड़ से हटा और गाँव के मुहाने पर बने एक पुराने कुएँ के पास जाकर बैठकर रोने लगा।

शिबू की आँखों से आँसू रुक नहीं रहे थे। उसे बार-बार वही आवाज सुनाई दे रही थी - "चल, अभी तोहरे बाप से कहतानी।"

शिबू घुटनों में सिर छुपाकर फफक-फफक कर रो रहा था।

आज उसे जीवन का सबसे कड़वा और वास्तविक सच समझ में आया था। शिबू को अहसास हो गया था कि रधु दादा दुश्मन नहीं थे। वे तो उसकी जिंदगी के सीसीटीवी थे।

शिबू को आज सच समझ में आ गया कि - "उसके जीवन का वह सीसीटीवी सदा के लिए बंद हो गया, जो हर भटकाव से बचाता था। अब अगर मैं रास्ता भटकूँगा, तो मुझे टोकने वाला, मुझ पर हक से गुस्सा करने वाला कोई नहीं बचा।"

शिबू को अहसास हो गया कि रधु दादा की वह कड़वी बातें दरअसल डाँट नहीं, बल्कि उसके भविष्य को संवारने वाली वो दुआएँ थी, जिन्हें वह बचपन के नादानपन में समझ नहीं पाया था। आज गाँव का वह जीता-जागता सीसीटीवी हमेशा के लिए बंद होने के बाद शिबू अपनी जिंदगी के रास्ते पर बिल्कुल अकेला खड़ा था।





Aadarsh Kr Soni
Roll No : 96
Session : 2025-27

एक छोटा सा गाँव था नीलगढ़, जहाँ हर साल पहाड़ों के बीच एक बहुत बड़ी दौड़ प्रतियोगिता होती थी। उस गाँव में आर्यन नाम का एक लड़का रहता था। आर्यन बचपन से ही बोल और सुन नहीं सकता था। गाँव के लोग उसे पसंद तो करते थे, लेकिन जब भी दौड़ की बात आती, तो सब कहते कि आर्यन तुम दौड़ तो सकते हो पर रेस नहीं जीत सकते। रेस जीतने के लिए कोच की सीटी और दर्शकों का शोर सुनकर जोश भरना पड़ता है, जो तुम कभी सुन ही नहीं पाओगे।

चुनौती का आगाज़

आर्यन ने तय किया कि वह इस साल की माउंटेन रन में हिस्सा लेगा। उसके पास कोई महँगा कोच नहीं था। वह रोज सुबह 4 बजे उठता और पहाड़ों की पगडंडियों पर दौड़ता था। बाकी धावक शोर मचाते हुए, संगीत सुनते हुए या कोच के चिल्लाने पर अपनी गति बढ़ाते थे। लेकिन आर्यन के पास सिर्फ खामोशी थी। उसने अपनी धड़कनों को महसूस करना सीखा। जब उसकी साँसें तेज होतीं तो वह समझ जाता कि अब उसे और जोर लगाना है। उसने पत्थरों की छुअन और हवा के दबाव से अपनी गति मापना शुरू किया।

रेस का दिन

प्रतियोगिता वाले दिन शहर से बड़े बड़े धावक आए। रेस शुरू हुई। जैसे जैसे चढ़ाई बढ़ी, धावक थकने लगे। दर्शकों का शोर चरम पर था। अचानक पहाड़ के एक मोड़ पर ज़मीन धँसने की आवाज़ हुई और एक बड़ा पत्थर नीचे गिर गया। बाकी धावक उस भयानक आवाज़ को सुनकर डर गए। शोर और चीख पुकार ने उनका ध्यान भटका दिया। वे पीछे मुड़कर देखने लगे और उनकी लय टूट गई। लेकिन आर्यन ने वह डरावना शोर सुना ही नहीं। उसे सिर्फ अपना लक्ष्य दिख रहा था और अपने पैरों की थपकी महसूस हो रही थी। जब सब डर के मारे रुक गए या धीमे हुए तो आर्यन अपनी उसी रफ़्तार से आगे बढ़ता रहा। उसे ज़मीन के कंपन से खतरे का अंदाज़ा तो हुआ, पर वह विचलित नहीं हुआ। जब वह फिनिश लाइन पर पहुँचा तो वहाँ सन्नाटा था। लोग हैरान थे कि एक लड़का जिसे कुछ सुनाई नहीं देता, उसने दुनिया के सबसे तेज धावकों को पीछे छोड़ दिया।

शिक्षा

दुनिया का शोर आपको तब तक नहीं रोक सकता जब तक आप उसे अपने अंदर जगह न दें। अक्सर हमारी कमियाँ हमें कमजोर नहीं बनातीं, बल्कि हमें उन बाधाओं से बचा लेती हैं जिनमें बाकी दुनिया उलझ कर रह जाती है। अपनी खामोशी को अपनी 'एकाग्रता' बनाइए।



हम और हमारे परिवेश से सामंजन



डॉ. विभा सिंह
व्याख्याता

“हम” का अर्थ है व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह, जिनका अपना अस्तित्व है, अपनी सोच है, समझ है यानी हमारी पहचान हमारे विचार, हमारी भावनाएँ, हमारी क्रियाएँ एवं हमारी प्रतिक्रियाओं से बनती हैं।

“हमारे परिवेश” का मतलब होता है हमारा वातावरण, हमारे चारों ओर का माहौल, हमारी क्रियाएँ करने की जगह जहाँ हम अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपने समाज के लिए अपने आप को प्रस्तुत करते हैं।

इन परिवेशों में निम्नलिखित अवयव शामिल होते हैं जैसे—

(i) प्राकृतिक परिवेश – प्रकृति के द्वारा प्रदत्त सारी चीजें जैसे पेड़-पौधे, वायु, हवा, जल, स्थल आदि।

(ii) सामाजिक परिवेश – समाज के सभी समूह जैसे परिवार, मित्र, स्कूल, समुदाय, सार्वजनिक सेवाएँ एवं नीतियाँ, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, तकनीक एवं सोशल मीडिया आदि।

(iii) सांस्कृतिक परिवेश – भाषा, विचार, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, नियम, तकनीक एवं कलाकृतियाँ शामिल हैं।

(iv) आर्थिक परिवेश – वित्तीय माहौल, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन-यापन के लिए कोई भी व्यवसाय करता है सरकारी या गैर-सरकारी संस्था में नौकरियाँ करता है, जिससे उसका एवं उसके परिवार का जीवन सुचारु रूप से व्यतीत होता है।

परिवेश से सामंजन का अर्थ है – अपने आस पास के वातावरण, परिवार, समाज, प्राकृतिक चीजों के साथ संतुलन बनाकर रहना। हमें हमेशा अपने परिवार, समाज, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहना है। हमें हमेशा अपने परिवेश के साथ संबंध बनाकर रखना चाहिए यानी अपने आप को सामंजन करना चाहिए। हमें अपने परिवेश के साथ तालमेल बनाकर रखने के लिए पर्यावरण की रक्षा करनी, पेड़-पौधों को लगाना तथा जल स्रोतों का संरक्षण करना, परिवार के लोगों, समाज के लोगों एवं अपने बड़े-बुजुर्गों के प्रति प्रेम करना और सहयोग करना चाहिए। जीव जंतुओं से अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनके प्रति दया का भाव रखना चाहिए।

जब हम अपने परिवेश के साथ अच्छा सम्बन्ध रखते हैं, सम्मान करते हैं तब हम अपने जीवन को स्वस्थ सुखी और सुरक्षित रख पाते हैं। प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश एवं आर्थिक परिवेश के बीच समंजन ही अच्छे जीवन का आधार है।

धन्यवाद

कविता



Amit Kumar Raj
Roll No : 100
Session : 2023-25

नीला स्याही और सफ़ेद राख

रात के आखिरी पहर तक जो चिराग जलता था,
वो महज़ एक दीया नहीं, मेरी आँखों का ख़्वाब था।

किताबों के पन्नों पर जो उंगलियाँ घिसती थीं,
उनसे मेरी तक्रदीर का एक नया पन्ना लिखना था।

दिन को रात किया, हर ख़्वाहिश को दफ़न किया,
कमरे की तन्हाई को ही अपना हमसफ़र किया।

माँ की बूढ़ी आँखों की उम्मीद याद थी मुझे,
बापू के पसीने की हर बूंद का हिसाब रखना था।

परीक्षा हॉल की वो दहलीज़, वो बेंच, वो कलम,
लगता था आज ख़त्म होगा बरसों का ये ग़म।

सवाल आसान थे, क्योंकि रातें मुश्किल गुज़री थीं,
हाथ काँप रहे थे ख़ुशी से, मंज़िल बेहद करीब थी।

तभी एक सन्नाटा गूँजा, एक ख़बर आई हवा में,
कि बिक गया ईमान फिर से चंद रुपयों की लालच में।

जो कागज़ मेरी किस्मत का फ़ैसला करने वाला था,
वो बाज़ार की किसी गली में पहले ही नीलाम खड़ा था।

मेरी मेहनत की इमारत एक पल में ढह गई,
सफ़ेद पन्नों की स्याही, बहते आँसुओं में बह गई।

चोर ले गए वो पद, जो मेरी रातों की कमाई थी,
मेरी आँखों के आगे बस धुंधली सी तन्हाई थी।

पूछता है ये दिल इस खोखले निज़ाम से,
क्यों खेलते हो हर बार हमारे अरमान से।

लीक कागज़ नहीं हुआ, मेरा हौसला टूटा है,
इस देश का भविष्य आज फिर सड़क पर रूठा है।



Nishi Rani
Roll No: 61
Session : 2025-27

Poem

LIVE YOUR LIFE

There's a glitch in my life,
which will turn on.
each time I aim to shine and
place the crown.

Something inside I fight with
each stride,
but I'll set it aside — no need
to collide.

This is a life I'll let it thrive in
time,
assured and strong, I'll keep it
alive.

No need to get tense,
as with time things change.

So just live your life without
any worry,
neither a thanks, nor a sorry.

The time will come when you
become great,
because you are made for
shine, not to wait.

Go build your dreams before
it's too late.

Challenges faced by an Aspirant

Surbhi Kumari

Roll No: 32

Session: 2024-26



The life of an aspirant is a journey shaped by discipline, hope and resilience. It is often marked by long hours of study, self doubt and repeated failure but driven by an unshaken belief in a better future. Aspirants especially those preparing for competitive exams live in a cycle of preparation, evaluation and improvement.

As the saying goes, success is not final, failure is not fatal. It is the courage to continue that counts. One of the biggest challenges is maintaining consistency. Despite uncertainty, unpredictable results and societal pressure, many face isolation. Financial constraints add mental stress. However, these struggles also build character and inner strength. Hardships prepare ordinary people for extraordinary destinies, reminding aspirants that difficulties are part of growth.

Another challenge is balancing patience with persistence. The journey can be long and motivation may fade. Yet those who stay committed learn the value of time, discipline and self-belief. Aspirant life teaches that success is not just about reaching the goal, but about becoming stronger in the process.

**“करत-करत अभ्यास के जड़मति होत मुजान,
रसरी आवत-जात ते मिल पर परत निशान।”**

Ultimately, the aspirant journey is not merely about achievement, but transformation. Continuous effort and perseverance turn dreams into reality.

कविता

प्रकृति और मैं

शीतल श्वास की शुद्धता में, श्वेता खोई जाती है,
पलकों पर पावन पुष्पों के, सपने बोई जाती है।

कली-कली मुस्काती है, जब मैं आँगन में आती हूँ,
धीमे-धीमे सावन की, मैं मल्हार गुनगुनाती हूँ।

मेरा आँचल फैला है, नील गगन की चादर सा,
हृदय भरा है खुशियों से, गहरे शांत समंदर सा।

ओस की ये मोती-माला, घास ने आज पहनी है,
प्रकृति की यह रंग-शाला, कितनी गहरी-घनी है।

Sweta kumari

Roll No: 46

Session: 2024-26



शर्माकर सूरज की किरणों, पेड़ों के पीछे छिपती हूँ,
हवाएँ मेरी सहेली बनकर, कानों में कुछ कहती हूँ।

मानो प्रकृति ने आज मुझे, अपनी गोद में बिठाया है,
या ईश्वर ने खुद चलकर, अपना रूप दिखाया है।

जब मैं हँसती हूँ तो ये, सारा नभ झुक जाता है,
मेरी पायल की रुनझुन से, वक्त भी रुक जाता है।

बाहर तो सन्नाटा है, पर भीतर शोर निराला है,
इस उजले अंधियारे में, प्रकृति का ही उजाला है।



Anshu Kumari Singh

Roll No: 38

Session: 2025-27

गया जी के पास एक छोटे से गाँव में रहने वाली एक छोटी सी लड़की, जो अपने घर की लाइली और पढ़ाई में अच्छी थी, लेकिन उसका स्कूल का अनुभव कुछ खास अच्छा नहीं था। स्कूल के कुछ शिक्षक बहुत सख्त थे, जो छोटी-मोटी गलतियों पर पूरे स्कूल के सामने डाँट देते थे। इससे धीरे-धीरे उसका ध्यान पढ़ाई से हटने लगा और मन में डर का बसेरा हो गया। इसका असर यह हुआ कि शिक्षक जब भी उस लड़की का नाम पुकारते, उसके हाथ-पैर काँपने लगते और वह सोचती, "क्या फिर मुझसे कोई गलती हो जाएगी?"

समय के साथ वह इतना डरने लगी कि जो लड़की पहले अपनी कक्षा में आगे की बेंच पर बैठने के लिए स्कूल जल्दी पहुँचती थी। वह अब पीछे की बेंच पर दुबक कर बैठती थी ताकि किसी भी शिक्षक की नज़र उस पर न पड़े। शिक्षक द्वारा पूछे गए सवालों से बचने के लिए वह कक्षा में हाथ उठाने से भी कतराने लगी, जबकि उसे उन प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह आते थे।

समय बीता और उसने अब स्नातक (Graduation) की पढ़ाई भी पूरी कर ली, पर उसके मन में स्कूल की यादें अब भी ताज़ा थीं। तभी उसने सोच लिया कि एक दिन वह भी शिक्षक बनेगी। तभी उसे पता चला कि शिक्षक बनने के लिए B.Ed. के Entrance Exam का Form आया हुआ है। उसने उस Form को भरा और अपनी तैयारी में लग गई। उसने Exam दी, Result आया और उसकी मेहनत रंग लाई। उसे बिहार के सबसे अच्छे Teacher Training कॉलेज में प्रवेश मिला — 'College of Teacher Education Gaya ji'।



कॉलेज के पहले दिन भी उसके मन में स्कूल के दिनों का डर बैठा हुआ था। वह सोच रही थी कि "क्या यहाँ भी मेरे साथ वही सब होगा जो स्कूल के दिनों में होता था?" उसने हिम्मत जुटाई और आगे बढ़ी। उसके लिए कॉलेज का माहौल अलग था—नए चेहरे, नई उम्मीदें...

कॉलेज का पहला दिन, पहली क्लास। चेहरे पर प्यारी सी मुस्कान लिए क्लास में **अमृता प्रियम** मैडम आईं। उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा, "अगर किन्हीं को कुछ पूछना है तो वे पूछ सकते हैं। कोई भी सवाल छोटा या बेवकूफी भरा नहीं होता। यहाँ आप लोग अपनी गलतियों से सीख सकते हैं।" उस लड़की को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि क्या सच में ऐसा होता है!

समय बीता और एक दिन अमृता मैडम ने क्लास में एक सवाल पूछा। उसे जवाब आता था, पर वह हाथ उठाकर जवाब देने की हिम्मत नहीं कर पाई। मैडम जी उसकी हालत (घबराहट) को समझ चुकी थीं, तभी वे मुस्कुराते हुए बोलीं, "**जो कोशिश करेगा, वही आगे बढ़ेगा।**" न जाने कहाँ से साहस आया और उसने पहली बार हाथ उठाया और थोड़ा घबराते हुए खड़े होकर जवाब दिया।

हाँ, उसका उत्तर कुछ अधूरा था और वह जानती थी, इसलिए वह डाँट सुनने के लिए तैयार थी। पर जो हुआ, वह उसकी सोच से बिल्कुल विपरीत था। मैडम जी मुस्कुराते हुए बोलीं, "बहुत अच्छा प्रयास है, तुम सही दिशा में सोच रही हो।" बस उसी एक पल में उसकी सोच बदल गई और उसने समझा—**हर शिक्षक डर नहीं देता, कुछ शिक्षक विश्वास भी देते हैं।**

धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास लौट आया। आज वह अपने College की तरफ से एक महीने की School Internship पर गई हुई है, जहाँ वह अपने College की सिखाई हुई बातों से School के बच्चों को आगे बढ़ने में मदद करती है।

Being Bihari:- A pride or a threat



Anjali kumari
Roll 90
Session 2024-26

Recently a boy was shot by a constable in Delhi . What was his crime ? His crime was only that he was speaking in Bhojpuri . So ,the question arises - Is speaking Bhojpuri a crime ?

We all have witnessed a lot of comments on social-media, stating "Ek Bihari 100 Bimari." The hatred for Biharis is crossing its limits , and if this is not addressed it may lead to the destruction that cannot be repaired further.

But the question is - Why so much hate for the people who are an integral part of our beloved nation? The answer is deeply rooted in the economical backwardness as well as the political history of Bihar .

Bihar, being the land of Mahatma Buddha, Mahavira, the land of enlightenment , the land of the world's oldest and the largest University ,is suddenly getting so much hate and humiliation. It is obvious that Bihar has a glorious history but the things changed. Bihar was extremely exploited during the colonial period and after independence due to policies such as Freight equalisation policy ,Bihar lacked development and after partition of Orissa and Jharkhand from Bihar it became economically backward and is still facing the severe consequences of migration and poverty . Another thing that added fuel to the fire was the political history of Bihar . During 1990s Bihar became an epicenter of crime , extortion etc . The poverty of Bihar led to the migration of people, giving them the titles such as "**Majdur**", "**Bimari**", "**Anpadh**" and humiliated. But can we imagine our life without the Construction workers who give shape to our dreams ? The answer is "NO" . So , they also deserve respect for their immense contribution for building our dream homes. Apart from that, we must not forget that we belong to land known for it's beauty of "**Unity in diversity** ." It is not our culture to humiliate people on the basis of their identity rather our culture is filled with the **love and acceptance** of every individual.

So , in conclusion we must say that it's high time that we must realize that Biharis are the **integral part of our nation** and we must keep ourselves united as enshrined in the Preamble of our Constitution "**We the people of India** " that doesn't specify divisions based on identities . Our survival is encapsulated in preserving our "**Unity in Diversity** " . This can be felt from the lines of Mohammad Iqbal :-

**" Unan -o - Mishr -o- Ruma ,sab mit gye jahan se ,
Baaki magar hai abtak naam - o - nishaan hmara ,
Kuch baat hai ki ,hasti mitati nhi hmari ,
Sadiyo raha hai dushman, Ruske - jahaan hmara."**

भगवान जी, एक बार कर्मों की फाइल री-चेक कर लो!

Bittu Kumar

Roll No : 26

Session : 2024-26



भगवान जी,

कुछ तो अच्छे कर्म किए होंगे हमने,
एक बार फाइल खोल के देख लो,
लगता है गलती से
किसी और का "पाप वाला पीडीएफ"
हमारे अकाउंट में अपलोड हो गया है।

जब भी जिंदगी सेट होने लगती है,
तभी कोई नया कांड हो जाता है,
और हमारा लक तो इतना खराब है कि
वाई-फाई भी पास आकर
"कनेक्टेड, नो इंटरनेट" हो जाता है।

सुबह जल्दी उठो तो नींद सताती है,
देर से उठो तो मम्मी ज्ञान सुनाती हैं,
और अगर टाइम पर उठ भी जाँ
तो नल में पानी नहीं आता है।

भगवान जी,
दोस्तों को देखो —
कोई प्यार में है,
कोई घूमने गया है,
और एक हम हैं...
जो रिचार्ज खत्म होने पर
व्हाट्सएप डीपी देखकर ही खुश हो जाते हैं।

जिस लड़की को देखकर
दिल में शहनाई बजती है,
वो हर बार हमें
"भैया" बोलकर चली जाती है।

इतना दर्द तो
मैथ्स की कॉपी भी नहीं देती।
पढ़ाई करते वक्त नींद आती है,
और मोबाइल चलाते वक्त
आँखों में 440 वोल्ट की बिजली।
ये कौन सा श्राप है प्रभु?

ऊपर से रिश्तेदार...
माक्स पूछते ऐसे हैं
जैसे ISRO का रॉकेट
हमें ही लॉन्च करना था।

थोड़ा सुख, थोड़ा चैन,
थोड़ी किस्मत भी दिलवा दो,
और नहीं तो कम से कम
रविवार को ही लंबा करवा दो।

Saloni priya

Roll no: 78

Session: 2024-26



उड़ान अधूरी रह गई

जब बात संतान और परिवार की आई तो
मां ने खुद को सबसे पीछे रखा।

खोल कर खजाना ममता और प्यार का
उन्होंने अपने सपनों की अलमारी बंद
कर दी।

कहते हैं शिक्षा हमें हमारे अधिकारों से
मिलवाती है,
हमने सबसे ज्यादा एक शिक्षित औरत
को त्याग करते देखा है।

वो चाहती तो ऊंची उड़ान भर सकती थी,
हमने उन्हें अपने ही चोंच से खुद का पंख
कुतर घोंसले को नरम बनाते देखा है।

Lost Childhood

I remember my childhood as if it were a yesterday's tale... every memory so fresh in my mind. We as kids didn't have smartphones to watch shorts and reels all the time and that was the best thing.

We used to play with real children not with any random virtual friends. All my childhood was spent playing with children of different religion and status. Nobody cared for safety, no fear of being harmed. Even now when I go back to my dadi's place I see those houses and I feel nostalgic. Back to today, children are addicted to phone, they play with friends from different state/country and god knows whether those friends are children or adults with bad intentions disguised as children. Now a days children are not so mischievous. They behave much older than their age. That innocence that we had in that age is missing. They know which country is in war with the other. They know about everything.



Mehar Fatma

Roll No: 07

Session: 2024-26



According to studies reviewed by Indian institutions, including the Indian Academy of Pediatrics (IAP), excessive screen time (over 2 hours daily) causes significant developmental issues in children. Key negative effects include language delays, shortened attention spans, sleep disturbances, obesity, and emotional dysregulation.

Technology has successfully spoiled childhood. Childrens watching content is not monitored by anyone. They are exposed to a lot of things that they shouldn't be watching. They are learning all the bad words and gestures. Whom should we blame? Technology, our busy life and not so caring attitude?

Famous behaviourist, **J. B. Watson** said,

"Give me a child and I will make him as you desire."

Someone has said it right: "children are like water... purest form of nature... they take shape of the container in which they are kept." Can we not make the environment much safer and loving for them?

Can we not make efforts to make them interact with real people and children?

Can we not make them behave as children should actually do?

The answer is **Yes**, we can and we must do.

Childhood is a precious phase of life that everyone should cherish all their lives. We should make a promise to ourselves that we will do every little thing to save childhood.





Anshu Kumari Singh

Roll no : 38

Session : 2025 -27

कविता



Saloni Priya

Roll no -78

Session 2024-26

CTE की लेट लतीफ रानी

CTE कॉलेज की प्यारी कहानी,
थोड़ी शरारत थोड़ी नादानी।
एक लड़की थी बहुत सुहानी
लेट आना जिसकी पुरानी कहानी।
घंटी बजती ,क्लास लगती
सब छात्र बैठ जाते लाइन से,
तभी दरवाजा धीरे खुलता।
मैडम आती मुस्कान के साथ शान से।

टीचर बोले- अरे वाह!
आज तो सूरज पश्चिम से निकला है।
मैडम आई है कॉलेज में,
लगता है चमत्कार हुआ है।

लड़की बोली- मैम माफ करिए,
रास्ते में बहुत जाम था।
टीचर बोले- हर दिन जाम ही मिलता है,
या नया कोई काम है।

टीचर कहते - बेटी समय अमूल्य है,
इसकी कीमत जानो तुम,
वो बोली। मै कल से पक्का
समय पर ही आऊंगी।
पर अगले दिन फिर वही हाल,
घंटी पहले फिर उसकी चाल।

टीचर बोले, लगता है इसकी घड़ी ,
चलती है दुनिया से अलग चाल।
गुस्सा भी था, प्यार भी था,
यही तो था रिश्ता अनोखा।
उसकी लेट एंट्री ने हर दिन,
क्लास को बना दिया हंसी का मौका।

Feminism and world

In halls of power, voices rose,
Against old wars and rigid prose.
Where states were built by hands of men,
Women stood to speak again.
From suffrage cries to peace-time songs,
They questioned who the world belongs.
Why leadership wore one face alone,
Why violence shaped the global tone.
They saw the borders, laws, and fear,
Were carved by systems year by year.
A patriarchy vast and deep,
Still teaching nations what to keep.
Yet through the silence came dissent—
A different path, a new intent.
Not strength through weapons,
pride, or might,
But justice, equal voice, and right.
Though history leaned toward the few,
Feminist thought kept breaking through:
To show the world, both far and near,
That peace begins when all can steer.

Peaceful Days of Childhood in Hatia

Some places become a part of our heart. For me, Ranchi, especially Hatia, is one such place. My childhood memories from the early 2000s, spent among its greenery and peaceful surroundings, still feel very close to me.

At that time, Ranchi was calm, clean, and full of natural beauty. Hatia was well known for the **HEC township**, with neatly planned government quarters, wide roads, and open grounds.

Every evening, we would gather with friends to play cricket and football, especially around the Dhurwa area. Those grounds were filled with laughter, excitement, and endless childhood energy. What made Ranchi truly special was its greenery. Long roads lined with Sakhua trees, quiet hills, and forested outskirts made every journey beautiful. Nature was everywhere, and it gave the place a sense of peace that is hard to find today. Weekends were always exciting. Family trips to Dhurwa dam were a regular part of life. The calm water and cool breeze made it a perfect place to relax. We also visited the Jagannath temple, which offered both peace and a beautiful view of the city. My childhood days in Ranchi are deeply tied to the vibrant Adivasi markets. These markets were a treasure of indigenous produce. I still vividly remember the seasonal wild mushroom Rugda, cherished for its rich taste. Along with it, items like Koinar saag, bamboo shoots, and various wild berries reflected the deep bond between tribal life and nature. Childhood in Ranchi was full of little adventures. During spring, the bright palash flowers covered the surroundings in fiery colors. We would collect them and play with them for hours. On the way back from school, there was a guava orchard that often tempted us. Sneaking in to pluck a few guavas and running away laughing remains one of my fondest memories.

A huge tamarind tree stood in the middle of an open field and became our favorite spot during summer holidays. We spent hours there, trying to knock down tamarind pods with sticks while cows and sheep grazed nearby. Our home garden was equally special. The jamun tree stained our tongues purple, while the mango tree made summers feel like a daily treasure hunt as we rushed out to collect fallen mangoes every morning. Almost every house in our colony had fruit trees, making the whole neighborhood feel like a small orchard.

I fondly remember enjoying local delicacies like duska and bara, which were served on sakhua leaves, which added a natural aroma and symbolized deep connection between food and nature.

Though Ranchi has changed over the years, every visit still fills me with nostalgia. The roads, the trees, and the air still seem to carry echoes of my childhood. Ranchi is not just a place I once lived in—it is a part of who I am, and it will always remain one of the most cherished chapters of my life.



Niteesh Kr Sah

Roll No: 63

Session: 2025-27



Aanchal Kumari
Session : 2023-25

महिलाओं का जीवन एक नदी की तरह है जिसे प्यार और करियर दोनों किनारों के बीच बहना पड़ता है। प्यार का मतलब है रिश्तों की मिट्टी। वह माँ-बाप का आँगन भी है और ससुराल का दालान भी। बेटी जब ब्याह कर जाती है तो दो घरों की धूप-छाँव एक साथ सहती है। बेटा अगर कुल का दीपक है तो बेटी भी बुढ़ापे का उजाला है। माँ-बाप की दवा से लेकर उनके अकेलेपन तक की जिम्मेदारी उसकी भी है। पर अक्सर प्यार के नाम पर उससे कहा जाता है कि 'एडजस्ट कर लो'। एडजस्ट करते-करते उसके अपने रंग फीके पड़ जाते हैं और कोई नहीं पूछता कि उसके कैनवास पर उसके सपने कब बनेंगे।

करियर उसके लिए सिर्फ तनख्वाह नहीं, उसकी खुद की आवाज है। जब वह क्लास में पढ़ाती है, हॉस्पिटल में मरीज बचाती है या ऑफिस में प्रोजेक्ट संभालती है, तो वह सिर्फ नौकरी नहीं करती, वह मिसाल बनती है। मगर आज भी कई रिश्ते इस शर्त पर तय होते हैं कि लड़की 'घर बैठेगी' और पति के शहर में शिफ्ट हो जाएगी। लड़का प्रमोशन के लिए बैंगलोर जाएगा, पर लड़की से उम्मीद होगी कि वह पुणे की अपनी जॉब छोड़ दे। ऐसे में उसका अपना पता क्या रहा? उसके माँ-बाप का बुढ़ापा किसके सहारे कटेगा? उसके नाम के आगे जो डिग्री लगी है, उसका क्या होगा?

प्यार और करियर आमने-सामने की कुर्सियाँ नहीं हैं। बराबरी का मतलब है कि शादी में दोनों के सपने एक ही टेबल पर रखे जाएँ, और त्याग की चादर सिर्फ एक के हिस्से न आए। जिस दिन लड़के के माँ-बाप कहेंगे कि 'बहू की पोस्टिंग जहाँ है, हम वहीं शिफ्ट हो जाते हैं', उस दिन सच में बदलाव आएगा। महिला को चुनने की छूट दो, उलझन नहीं। क्योंकि जब एक औरत अपने फैसले खुद लेती है, तभी घर की नींव भी मजबूत होती है और देश की छत भी।

कविता

मैं क्या चाहती हूँ

मैं खुशबूदार फूल नहीं,
बेखुशबू आवाज़ बनना चाहती हूँ।

मैं करोड़ों में से एक चाँद नहीं,
एक मामूली-सा सितारा बनना
चाहती हूँ।

मैं सीधी-सी राह नहीं,
टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलना चाहती हूँ।

मैं आसमानी ख़्वाब नहीं,
ज़मीनी हकीकत-सी ज़िंदगी जीना
चाहती हूँ।

मैं गानों का जुनून नहीं,
नज़्मों का सुकून बनना चाहती हूँ।

मैं सौंदर्य भरा चाँद नहीं,
उम्मीद भरा सूरज बनना चाहती हूँ।

मैं पानी की लहर नहीं,
पानी की एक बूंद बनना चाहती हूँ।

मुझे मंज़िल की चाह नहीं,
मैं बस खुद तक पहुँचना चाहती हूँ।

मैं बस यही चाहती हूँ,
मैं बस यही चाहती हूँ॥



Puja Roy
Roll No: 45
Session: 2025-27

अधिकार, अभिव्यक्ति और कर्तव्य: संतुलन या संकट ?



Sweety Kumari
Roll No: 11
Session: 2025-27

अधिकार और कर्तव्य कहने को तो छोटे-छोटे शब्द हैं, पर इन शब्दों की गहराई में उतरकर देखें तो एक ओर 'अधिकार' जो जीवन की सांसें से भी अधिक ज़रूरी है क्योंकि सांसें केवल शरीर को जीवित रखती हैं लेकिन अधिकार इंसान की आत्मा और उसकी गरिमा को जीवित रखती हैं। वहीं दूसरी ओर, 'कर्तव्य' – कर्तव्य किसी के अधिकारों की रक्षा करता है एवं उसके हनन को रोकता है। कर्तव्य का पालन किसी को वास्तव में उनके 'होने' का एहसास दिलाता है ना कि सिर्फ 'सांस चलने' या 'जिंदा रहने' का।

इसीलिए तो कहते हैं कि किसी भी आधुनिक सभ्यता की गति का मापन केवल उसके आर्थिक आंकड़ों से नहीं बल्कि इस बात से होता है कि वह अपने नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामूहिक जिम्मेदारी के बीच कैसा संतुलन बनाते आ रही है। अधिकार और कर्तव्य के बीच का संबंध कोई कानूनी विरोधाभास नहीं है बल्कि इसमें एक सहजीवी संबंध है। यह सहजीवी संबंध 'अभिव्यक्ति' को सार्थकता प्रदान करता है। यदि अधिकार अभिव्यक्ति को 'बुलंद आवाज' देते हैं तो कर्तव्य उस आवाज को 'सार्थकता की गहराई' प्रदान करके विचारों को पंख देते हैं। परंतु आजकल दावों का युग चल रहा है दायित्वों का नहीं अधिकारों की मांग जितनी मुखर हुई है, कर्तव्य के प्रति उदासीनता उतनी ही गहरी। इस असंतुलन का सबसे बुरा प्रभाव अभिव्यक्ति पर पड़ा है। आज बोलने की आजादी तो है पर उस अभिव्यक्ति में निहित नैतिकता और सत्य के प्रति जवाबदेही को पूरी तरह हाशिये पर धकेल दिया गया है।

अधिकार: स्वयं के होने की निर्भीक घोषणा

अधिकारों को केवल राज्य द्वारा दी गई रियायत के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि ये वे अनिवार्य तत्व हैं जो किसी व्यक्ति को 'उत्तरजीविता' के स्तर से उठाकर गरिमापूर्ण अस्तित्व तक ले जाते हैं। विशेष रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जो कि संविधान ने हमें भाग 3 अनुच्छेद 19(1)(अ) के रूप में दी है। ये केवल विचार प्रकट करने का माध्यम नहीं है बल्कि यह सत्ता की जवाबदेही तय करने का सबसे सशक्त लोकतांत्रिक औजार है। आज के डिजिटल युग की बात करें तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता केवल एक अधिकार नहीं बल्कि एक 'महाशक्ति' है। इसका सही उपयोग न केवल व्यक्ति को सशक्त बनाता है बल्कि पूरे समाज को नई दिशा दे सकता है। ये हमें सूचनाओं को साझा करने और दुनिया भर के विचारों को सीखने का मंच देती है। डिजिटल मंच उन लोगों को आवाज देता है जिन्हें मुख्यधारा के मीडिया में जगह नहीं मिलती। पहले अपनी बात लाखों तक पहुँचाने के लिए मीडिया हाउस की ज़रूरत होती थी परंतु आज एक साधारण व्यक्ति भी यूट्यूब, ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए वैश्विक मंच पा सकता है। यदि कहीं भ्रष्टाचार या अन्याय हो रहा है तो एक वायरल वीडियो शासन को तुरंत गतिवान बना देता है। यह सत्ता पर जनता की सीधी नजर की तरह काम करता है। परंतु डिजिटल युग में ये अधिकार "एक दोधारी तलवार" की तरह है जिसने जहाँ एक ओर नागरिकों को असीमित शक्तियाँ दी हैं वहीं दूसरी ओर समाज के लिए गंभीर चुनौतियाँ भी पैदा की हैं।

अपराधी इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग धोखाधड़ी, जासूसी और अन्य अवैध गतिविधियों के लिए करते हैं। डिजिटल मंच पर ऑनलाइन ट्रोलिंग, अभद्र भाषा और कैंसल कल्चर से व्यक्ति के आत्मसम्मान और मानसिक स्थिति को गंभीर नुकसान पहुँचता है।

अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अक्सर दूसरों की निजता और व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा का उल्लंघन किया जाता है। डिजिटल स्वतंत्रता का एक बड़ा दुष्प्रभाव यह भी है कि इससे भ्रमक सूचनाओं का प्रसार बहुत तेजी से होता है और गलत जानकारियाँ समाज में डर एवं भ्रम पैदा करती हैं। गुमनामी का लाभ उठाकर कई लोग इंटरनेट पर नफरत फैलाने वाले भाषण साझा करते हैं जो सांप्रदायिक हिंसा और तनाव को बढ़ावा देते हैं जिससे देश की सुरक्षा व्यवस्था खतरे में पड़ जाती है।

कर्तव्य : दूसरों के होने की सम्मानपूर्ण स्वीकृति

अधिकार मनुष्य को सशक्त बनाने के लिए होते हैं लेकिन जब 'अधिकार' शब्द से 'कर्तव्य' और 'विवेक' अलग हो जाते हैं तो वे समाज के लिए घातक बन जाते हैं। किसी भी अधिकार का अनुचित उपयोग उसे 'शक्ति' से प्रतिस्थापित कर एक 'दमनकारी हथियार' बना देता है। अधिकारों का अनुचित उपयोग तब शुरू होता है जब व्यक्ति यह भूल जाता है कि उसकी स्वतंत्रता वहीं समाप्त हो जाती है जहाँ से दूसरे के अधिकारों का हनन होने लगता है। जब 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' का उपयोग किसी की मानवीय गरिमा को ठेस पहुँचाने, चरित्र हरण करने या समाज में नफरत फैलाने के लिए किया जाता है तो यह लोगों तथा राष्ट्र के लिए अभिशाप बन जाता है। अधिकारों का सबसे विभत्स रूप तब दिखता है जब व्यक्ति अपने निजी या समूहगत स्वार्थ के लिए राष्ट्र की एकता और अखंडता को दांव पर लगा देता है। जब अधिकार समाज को जोड़ने के बजाय तोड़ने का काम करने लगे तो वह अपना अस्तित्व खो देता है।

अतः यह अति आवश्यक है कि हम अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों को भी समझें क्योंकि हमारे अधिकार हमें 'इंसान' बनाते हैं तो वहीं कर्तव्य हमें 'इंसानियत' का धर्म सिखाते हैं। अधिकारों का महत्व निर्विवाद है परंतु कर्तव्यों का अंकुश वह लगाम है जो समाज को अराजकता की खाई में गिरने से बचाती है। जब तक हम 'मेरे हक' के साथ-साथ 'मेरी जिम्मेदारी' को नहीं समझेंगे तब तक वास्तविक आजादी अधूरी रहेगी। अतः अधिकारों का सूरज तभी चमक सकता है जब कर्तव्यों के बादलों का अनुशासन बना रहे।

**“कर्तव्य का बीज जो बोएगा, वही अधिकार का फल पाएगा,
मर्यादित अभिव्यक्ति से, वह जग को राह दिखाएगा ॥
मत भूल कि तेरी आजादी, औरों के हक की सीमा है,
कर्तव्य की राह पर चलना ही, इंसानियत की गरिमा है ॥”**



Trophy Unlocked



Saloni Kumari
Roll No: 02
Session: 2024-26

At our renowned institution, C.T.E. Gaya Ji, a very interesting and **informative workshop was organized by the Mahindra Pride Classroom** and conducted by Nisha Ma'am. During this 7-day workshop, I realized that I had stepped out of my shell. Through this experience, I learned how to present myself with confidence.

I actively participated in various activities. I took part in a role play with my classmates, where I played the role of a teacher. I also participated in a group discussion on the topic **"Marriage vs No Marriage."** In addition, I created a PowerPoint presentation on the role of women in society and presented it in front of Nisha Ma'am, my batchmates, and my juniors.

Apart from these activities, my batchmates and I collectively prepared diagrams on chart papers and presented them together. This entire experience brought out a new version of myself.

On the last day of the workshop, I received the first trophy of my life from the hands of Neetu Ma'am.

I cannot express that moment in words. This achievement inspired and motivated me even more. At last, I would like to say:-

"First trophy, but not the last dream."



कविता

"भाई"

तेरी मैं क्या हिसाब दूँ
तू बेहिसाब है।

तेरी क्या मिसाल दूँ
तू बेमिसाल है।

तुझे मैं क्या दुआएँ दूँ
तू दुआओं का सरताज है।

तू ही तो पिताजी का सरताज है,
तू ही माँ का स्वाभिमान है।

इस खूबसूरत सी दुनिया में,
तू ही मेरी पहचान है।

मेरी ताकत, मेरी हिम्मत,
मेरा स्वाभिमान है,

तू शीशा नहीं जो तोड़ सके कोई
तू तो हीरा है, जिसका तेज
सह न सके कोई

अपनी हर दुआओं में,
तेरी कामयाबी माँग लूँ।

तेरी छोटी बहन हूँ मैं,
मैं हर जन्म के लिए तुझे बड़ा भाई माँग लूँ।



Puja Roy
Roll No: 45
Session: 2025-27



Fauziya Tabassum

Roll No: 17

Session: 2025-27

सर्द लहर की वह कड़कड़ाती रात ठंडी-ठंडी हवाएं बह रही मानो जैसे सूई की तरह शरीर में चुभ रही हो। खांसने की आवाजें आ रही थी कभी तेज तो कभी धीमी। अचानक से खांसने की आवाज रुकी तो दिल एकदम से दहल गया। नंगे पैर जैसे तैसे खुद को संभालती हुई दूसरे कमरे की ओर भागी और बुड़ी हाथों पर हाथ रखा तो एक सुकून मिला। थोड़ा पानी पिया और अपने कमरे में आकर बिस्तर पर लेटते हुए एक गहरी सोच में डूब गई। "सूफी क्या होगा तुम्हारा अगर बुड़ी दादी भी नहीं रही। मां बाप तो बचपन में ही दुनिया से चले गए। अगर दादी भी नहीं रही तो..." तुम्हारा ख्याल, तुम्हारे बारे में सोचने वाला कोई भी नहीं रहा तो ये लंबी और काँटों भरी जिंदगी कैसे कटेगी। सोचते-सोचते वह नींद की आगोश में चली गई।

"सूफी उठो, सूफी उठो कुछ खाने को दो, दिन चढ़ आया है" दादी की आवाज कानों में पड़ी तो नींद खुली। जल्दी से रसोई घर में गई और दलिया चूल्हे पर चढ़ा दी। बस कभी दलिया तो कभी खिचड़ी। काश! मैं उनके पोपली मुंह में नरम-नरम फल के टुकड़े डालती तो उनका चेहरा खिल उठता। मगर सिलाई और रिश्ते लगाने पर इतना पैसा नहीं हो पाता। दादी को दलिया खिलाई और उसके बाद दवाई। कुछ दवाईयां खत्म हों चुकी थीं। क्लीनिक में बहुत भीड़ थी तो एक मेज पर बैठ गई। चमचमाती कार से एक महंगे लिबास पहनी हुई एक औरत और उसके साथ एक और औरत उसके कपड़े से पता लग गया कि वह एक काम वाली है। थोड़ी देर तक मुझे यूँ ही देखती रही फिर पूछी "किसके लिए यहां आई हो? घर में कौन-कौन हैं? क्या करती हो? एक सांस में इतने सवाल कर दी।

मैं और एक दादी हैं वो भी बीमार रहती हैं। सिलाई और कोई बोला तो रिश्ते भी लगा देती हूँ। गहरी सांस के बाद बोली मेरा (मुमताज बेगम) एक भाई (सूफियान) है और उसकी एक चार साल की एक बेटी। पत्नी को गुजरे हुए पांच साल हो चुका हैं। मैं (मुमताज बेगम) अपना परिवार छोड़ कर यहां हूँ मगर कब तक। उसके लिए एक अच्छी लड़की की तलाश है जो घर और बेटी को संभाल सके। कुछ पैसे और अपना पता रखी और चली गई। मैं खुशी-खुशी दादी के लिए फल और दवाई लेकर घर के लिए चल पड़ी।

एक रिश्ता लेकर मैं मुमताज बेगम के घर पहुंची। घर तो बहुत बड़ा और खूबसूरत था। हॉल में पहुंची तो एक नौकरानी ने सोफे पर बैठने को बोल कर अपनी मालकिन को बुलाने चली गई। मुमताज बेगम आकर बैठी और बात शुरू हुई थी कि पीछे से "आपा... आपा (दीदी) आवाज देते हुए एक लंबा खूबसूरतब नौजवान आया और बोला मैं ऑफिस के लिए जा रहा हूँ।"

मेरी और सलमा बुआ (लड़की की मां) की आँखें फटी की फटी रह गईं। सलमा बुआ बोली घर और लड़का तो मुझे बहुत पसंद आया। मगर आप उसकी बेटी को क्यों न अपने पास रख लेती क्योंकि कोई भी लड़की दूसरी की औलाद को बर्दाश्त नहीं कर सकती। यह सुनते ही मुमताज बेगम की आँखें गुस्से से लाल हो गईं। मैं सलमा बुआ को जल्दी ही दरवाजे तक छोड़ आई और आकर माफी मांगी और कहा कि उसे सारी बात बता चुकी थी मगर आपका घर और भाई को देखकर आँखों में लालच उतर आई।

सूफियान अपनी बेटी के कमरे में आया तो वह रो रही थी। यह देखकर सूफियान तड़प उठा। उसने बोला "पापा, मुझे मम्मा चाहिए। मुझे रात में अकेले सोने में डर लगता है और रोते-रोते उसके गोद में सो गईं।" सूफियान का दिल भर आया और अपनी पत्नी की यादों में डूब गया।

आम दिनों की तरह सूफी सुबह उठी और दादी को उठाने गई "दादी सुबह हो गई उठो" मगर कोई जवाब नहीं मिला तो उसने हाथ और पैर पकड़े, अपने कानों को दादी की छाती पर रखी तो उसकी पूरी शरीर बर्फ सा जम गया। थोड़ा होश आया तो जोर से चीखी उसकी रोने की आवाजें सुन कर सारा मोहल्ला जमा हो गया। दादी का कफ़न दफ़न के बाद लोग उसे दिलासा देकर अपनी अपनी घरों में होंगे। बिस्तर पर लेटी सन् सन् करती हुई खाली घर मानो काँटने को दौड़ रही हो। अकेलापन इतना सता रहा था कि जिंदगी एक बोझ लग रही हो। खांसने की आवाजें और आहट से नींद खुली तो आंगन में एक सफेद कपड़े में लिपटी दादी टहल रही। यह मंजर देखकर कपड़े पसीने से तर बतर हो गए गिरते-पड़ते दरवाजे से बाहर दौड़ते हुए सड़क पर आ पहुंची और ऐसे दौड़ी की एक गाड़ी से जा टकराई। होश में आई तो खुद को सूफियान के घर देखी। आंसू से भरी आँखें, कपकपाते हुए होठों से अपनी जिंदगी की दास्तान और खुद की रिश्ते की बात कह डाली। यह बातें मुमताज बेगम को नागवार लगी और इसका विरोध कर दी, बोली कोई लड़की खुद का रिश्ता कैसे मांग सकती है, ऐसा समाज में नहीं होता। सूफियान ने अपनी आपा (दीदी) और समाज को नजरअंदाज करते हुए उससे शादी कर ली।

"सुनहरे सूरज की हल्की किरणों में एक खूबसूरत स्त्री लाल रंग की साड़ी पहने, फूलों से सजी बालों को लहराती हुई बाग में टहल रही थी। उसके कदमों की आहट फूलों की खुशबू के साथ घुल गई। पीछे से एक खूबसूरत नौजवान और एक छोटी बच्ची हाथ में फूलों का गुलदस्ता लिए हुए मम्मा-मम्मा पुकारते हुए उसके तरफ दौड़ रही। चारों ओर खुशियां ही खुशियां बिखरी हुई थी।" यह सूफी की एक खूबसूरत सुबह की शुरुआत हुई। समाज की पुरानी परंपरा को उसने रौंदते हुए अपनी नई सोच से अपनी नई जिंदगी की नींव डाली।

कहानी

"आखिरी सीढ़ी"

Aadarsh Kr Soni

Roll No : 96

Session : 2025-27



एक छोटे से गाँव में आरव नाम का लड़का रहता था। उसके घर की हालत ठीक नहीं थी—पिता मज़दूरी करते थे और माँ घर संभालती थीं। आरव पढ़ाई में ठीक था, लेकिन उसके पास न अच्छे कपड़े थे, न महंगी किताबें, और न ही कोई बड़ा सहारा। गाँव के बच्चे अक्सर उसका मज़ाक उड़ाते—

"तू क्या बड़ा बनेगा? तेरे बस का कुछ नहीं।"

शुरू-शुरू में आरव को बहुत बुरा लगता। वह सोचता—शायद सच में मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा। लेकिन एक दिन उसकी माँ ने उससे कहा— "बेटा, जिंदगी सीढ़ियों जैसी होती है। लोग ऊपर वालों को देखते हैं, लेकिन कोई नहीं देखता कि आखिरी सीढ़ी कितनी मज़बूत थी, जिस पर खड़े होकर वो ऊपर पहुँचे।"

ये बात आरव के दिल में बैठ गई। उस दिन से उसने ठान लिया—वो "आखिरी सीढ़ी" बनेगा, जो मज़बूत होगी। आरव के पास बिजली भी नहीं थी, इसलिए वह रात में सड़क की लाइट के नीचे पढ़ता। कई बार बारिश होती, तो भीगते हुए किताब बचाता और पढ़ता रहता। लोग उसे पागल कहते, पर अब उसे फर्क नहीं पड़ता था।

एक दिन स्कूल में परीक्षा हुई जिसमें गाँव के सारे "होशियार" बच्चे आगे बैठे, और आरव पीछे। जब रिज़ल्ट आया, तो सब हैरान रह गए— **पहला स्थान आरव का था।**

अब वही लोग जो उसका मज़ाक उड़ाते थे, उसके पास आकर बोले— "तूने कैसे किया ये सब?"

आरव मुस्कुराया और बोला— **"मैं ऊपर नहीं चढ़ा हूँ... मैं बस अपनी आखिरी सीढ़ी को मज़बूत करता गया हूँ।"**

समय बीतता गया। आरव ने आगे पढ़ाई की, शहर गया, और एक बड़ा अधिकारी बन गया। लेकिन उसने कभी अपनी जड़ें नहीं भूलीं। वह हर साल अपने गाँव आता, बच्चों को पढ़ाता, और एक ही बात कहता—

"किस्मत ऊपर से नहीं गिरती, उसे नीचे से बनाना पड़ता है... एक-एक सीढ़ी जोड़कर।"

College Trip

“Science is a beautiful gift to humanity; we should not distort it.” – A. P. J. Abdul Kalam

On **28th February 2026**, on the occasion of National Science Day, our college organized an educational trip to Dr. A.P.J. Abdul Kalam Science City. It is a world-class science center that was inaugurated on 21st September 2025 by Nitish Kumar. The main aim of this science city is to promote scientific thinking and curiosity among students and the general public.



Saloni Kumari
Roll No: 02
Session: 2024–2026

When we entered the Science City along with our teachers, we saw a beautiful statue of **Dr. A.P.J. Abdul Kalam** installed in the main hall. There were many interesting scientific models and exhibits. One of the most attractive models was the **“Virtual Ripple Tank,”** where ripples were created with every step, forming beautiful circular wave patterns.



After that, we saw a model demonstrating how signals and messages are transmitted at both national and international levels. It explained how a message travels from the sender to the receiver through communication systems.



We also observed a large pendulum hanging from the ceiling, moving continuously and demonstrating the motion of a pendulum. Apart from these, there were many other scientific models related to momentum and displays showing the fascination of large numbers mentioned in ancient Indian texts such as the four Vedas, Brahmana Granthas, Ramayana, and Mahabharata.

This trip connected us with unique and knowledge-rich scientific models. It was both educational and enjoyable. The visit will remain a memorable experience in our lives and will always inspire us to learn more about science.

“Science is a wonderful thing if one doesn’t have to earn one’s living at it.” – Albert Einstein





The trip proved to be both informative and enjoyable, leaving the students with valuable experiences and lasting memories.



Bittu Kumar
Roll No: 26
Session : 2024-26

एक साल थोड़ा सादगी से जी लेंगे

डियर प्राइम मिनिस्टर,
आपकी बातें मेरी आँखों पर.....

ना सोना खरीदेंगे,
ना शौकों का मेला होगा,
इस बार हर खर्च से पहले
देश का चेहरा होगा।

विदेशी सैरें रुक जाएँगी,
तो क्या हुआ आखिर,
अपने वतन की मिट्टी से
सुंदर कौन सा मंज़र।

विदेशी चीज़ों की चमक छोड़कर
अपने देश का बाज़ार सजाएँगे,
जो पैसा बाहर जाता था
उसे हिंदुस्तान में ही लगाएँगे।

थोड़ी बचत, थोड़ा त्याग,
अगर देश के काम आए,
तो आने वाली नस्लें भी
हम पर गर्व जताएँ।

ना बात सिर्फ पैसों की है,
ना कोई मजबूरी है,
ये उस मिट्टी से मोहब्बत की
छोटी सी ज़िम्मेदारी है।

जब देश पुकारे अपनों को,
तो अपनों को आना पड़ता है,
कुछ सपने खुद के रोककर
भारत को सजाना पड़ता है।

कविता

Smriti Kumari
Roll No: 25
Session: 2025-27



चाँद छूने की तमन्ना

बचपन की एक ख्वाहिश सीने में कहीं दबी-सी रह गई,
वक़्त की मजबूरी में वो चाहत कहीं खो-सी गई।

फिर उसी ख्वाब को हकीकत में बदलने की ठानी,
अपने दम पर चलकर हर मंज़िल को पाने की ठानी।

कभी हालात से हिम्मत यूँ ही टूट-सी गई,
कभी राहें न मिलीं तो मंज़िल छूट-सी गई।

सपनों को सच करने में ये सफ़र लंबा हो गया,
खुद को ढूँढते-ढूँढते खुद से ही फासला हो गया।

सपनों की राह में चाहे कितनी भी आंधियाँ आए,
मेरे हौसलों की लौ मगर कभी बुझ न पाए

गिरकर संभालना अब आदत - सी बन गई है,
हर मुश्किल भी अब हिम्मत से हार गई है

रोक सके जो रास्ता, अब वो दीवार नहीं,
मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं

एक दिन मेहनत भी ऐसा रंग दिखाएगा,
जिस चांद को चाहा था, वो सच में पास आएगा

“किताबों से परे: वह एक दिन”



MD TAHIR IMAM
Roll No - 97
Session - 2025-27

यह कहानी उस दिन की है, जब अनुशासन की बेड़ियाँ अचानक टूट गईं और मन मोर की भाँति प्रसन्न होकर थोड़ी आवारगी की राह पर निकल पड़ा। वह फरवरी माह की एक गुलाबी सुबह थी। कॉलेज की भारी-भरकम पुस्तकों और पाठ्यक्रम के बीच, उपस्थिति (Attendance) की चिंता किए बिना हम नौ मित्रों की दृष्टियाँ एक-दूसरे से मिलीं और बिना एक शब्द कहे “क्लास बंक” करने का मौन समझौता हो गया। कोई विशेष योजना नहीं थी, बस एक ही धुन थी—कहीं दूर निकल जाना है। हम नौ लोग और कुल तीन मोटरसाइकिलें; किसी तरह स्वयं को समायोजित कर हम कॉलेज से बुद्ध की पावन भूमि बोधगया के लिए रवाना हो गए।

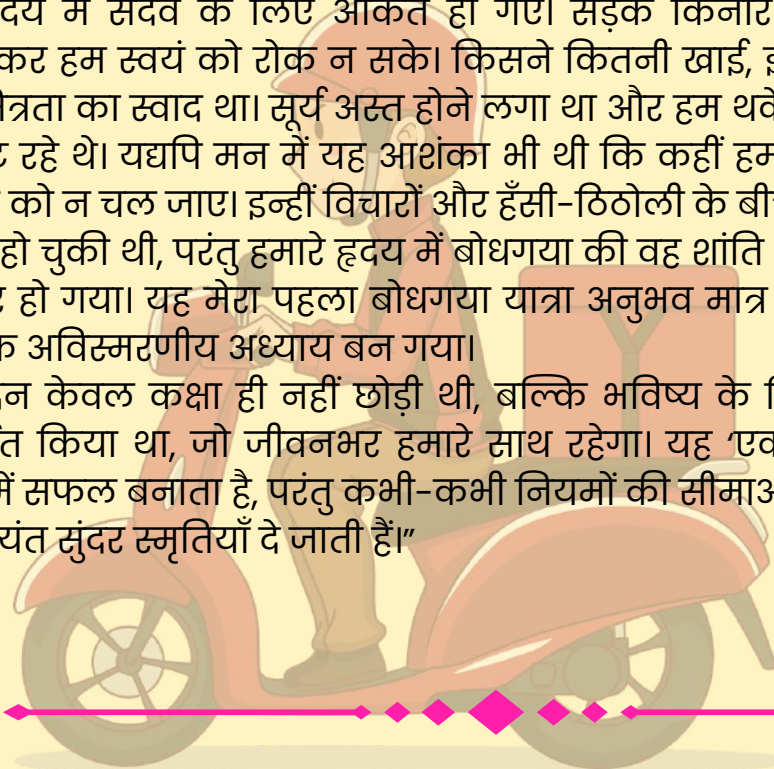
जैसे ही हम मुख्य मार्ग पर पहुँचे, ऐसा प्रतीत हुआ मानो प्रकृति स्वयं हमारा स्वागत कर रही हो। सड़क के किनारे स्थित छोटे-छोटे पहाड़ों से टकराकर आती शीतल वायु, हरियाली से आच्छादित ढलानें तथा खेतों में लहराती फसलें इस यात्रा को और भी मनोहारी बना रही थीं। हम मस्ती में आगे बढ़ते जा रहे थे कि अचानक हमारी मोटरसाइकिल लड़खड़ा गई। नीचे उतरकर देखा तो ज्ञात हुआ कि टायर पंचर हो गया है। उस सुनसान सड़क पर, जहाँ एक ओर पहाड़ों का सन्नाटा था और दूसरी ओर हमारी हँसी-ठिठोली, वहाँ किसी प्रकार मोटरसाइकिल को पंचर की दुकान तक पहुँचाया गया। टायर ठीक होने तक का वह समय, सड़क किनारे बैठकर की गई अनौपचारिक बातें और खिलखिलाहटें, संभवतः उस संपूर्ण यात्रा का सबसे अमूल्य भाग थीं।

बोधगया पहुँचते ही हम सर्वप्रथम विश्वप्रसिद्ध महाबोधि मंदिर के द्वार पर पहुँचे। मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही एक अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। मंदिर की कलात्मक नक्काशी को देखकर हम आश्चर्यचकित रह गए। बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर जब हमने ध्यान किया, तो चारों ओर गुँजते बौद्ध भिक्षुओं के मंत्रों की ध्वनि मन को गहन शांति प्रदान कर रही थी। ऐसा प्रतीत हुआ मानो भगवान बुद्ध ने भी इसी प्रकार संसार के कोलाहल से विरक्ति लेकर ज्ञान की खोज की होगी।

हमने विभिन्न देशों की संस्कृति को समेटे हुए सुंदर मठों तथा विशाल बुद्ध प्रतिमा का अवलोकन किया। तत्पश्चात निकट स्थित निरंजना (फल्गु) नदी के किनारे बिताए गए वे शांत एवं आनंदमय क्षण हमारे हृदय में सदैव के लिए अंकित हो गए। सड़क किनारे ठेले पर रखी तीखी-मीठी पानीपुरी देखकर हम स्वयं को रोक न सके। किसने कितनी खाई, इसका कोई हिसाब नहीं था; वहाँ केवल मित्रता का स्वाद था। सूर्य अस्त होने लगा था और हम थके हुए किंतु आत्मसंतुष्ट मन से वापस लौट रहे थे। यद्यपि मन में यह आशंका भी थी कि कहीं हमारी इस “गुस्ताखी” का पता किसी शिक्षक को न चल जाए। इन्हीं विचारों और हँसी-ठिठोली के बीच हम कॉलेज लौट आए।

यात्रा समाप्त हो चुकी थी, परंतु हमारे हृदय में बोधगया की वह शांति और मित्रों का वह साथ सदा के लिए अमर हो गया। यह मेरा पहला बोधगया यात्रा अनुभव मात्र एक भ्रमण नहीं था, बल्कि जीवन का एक अविस्मरणीय अध्याय बन गया।

“हमने उस दिन केवल कक्षा ही नहीं छोड़ी थी, बल्कि भविष्य के लिए स्मृतियों का एक ऐसा खजाना अर्जित किया था, जो जीवनभर हमारे साथ रहेगा। यह ‘एक दिन’ हमें सिखा गया कि अनुशासन हमें सफल बनाता है, परंतु कभी-कभी नियमों की सीमाओं से परे की गई अनियोजित यात्राएँ भी अत्यंत सुंदर स्मृतियाँ दे जाती हैं।”





Deepak Kumar

Roll No: 98

Session: 2024-26

पिछले वर्ष मुझे छठ पूजा को निकट से देखने तथा उसमें भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे लिए यह केवल एक पर्व नहीं था, बल्कि आस्था, संस्कृति तथा परिवार के साथ जुड़ाव का अत्यन्त भावपूर्ण अनुभव था। बिहार में छठ पूजा का विशेष महत्व है। इस समय सम्पूर्ण वातावरण भक्ति एवं उत्साह से भर जाता है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है—कार्तिक मास में तथा चैत्र मास में।

छठ पूजा चार दिनों तक चलने वाला महापर्व है। इसकी शुरुआत "नहाय-खाय" से होती है, जिसमें व्रती स्नान करके शुद्ध भोजन ग्रहण करते हैं। दूसरे दिन "खरना" होता है, जिसमें दिनभर उपवास रखकर रात्रि में गुड़-खीर का प्रसाद ग्रहण किया जाता है। तीसरे दिन संध्या समय डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और चौथे दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत पूर्ण किया जाता है। इस पर्व में स्वच्छता, अनुशासन और नियमों का अत्यन्त कठोरता से पालन किया जाता है।

पिछले वर्ष जब मैं घाट पर गया, तो वहाँ का दृश्य अत्यन्त मनोहारी था। चारों ओर दीपक जल रहे थे, लोग छठ के गीत गा रहे थे और नदी के तट पर श्रद्धा के साथ पूजा कर रहे थे। वातावरण में भक्ति, शांति और आस्था का अद्भुत संगम दिखाई दे रहा था। अस्ताचल सूर्य को अर्घ्य देने का दृश्य अत्यन्त शांत एवं हृदय को स्पर्श करने वाला था।

इस पर्व में सबसे विशेष बात यह लगी कि सभी लोग बिना किसी भेदभाव के एक-दूसरे की सहायता कर रहे थे। परिवार के सभी सदस्य मिलकर तैयारी करते हैं। घरों में ठेकुआ, कसार तथा अन्य पारंपरिक प्रसाद बनाए जाते हैं। सम्पूर्ण वातावरण अपनत्व, प्रेम और आनंद से परिपूर्ण रहता है।

छठ पर्व सूर्य देव और छठी मइया की उपासना का महापर्व है। इसकी मान्यता है कि यह व्रत संतान की दीर्घायु, स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि के लिए किया जाता है। इसमें उगते और डूबते सूर्य दोनों को अर्घ्य देकर समानता और कृतज्ञता का संदेश दिया जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, महाभारत काल में कर्ण प्रतिदिन जल में खड़े होकर सूर्य देव की आराधना करते थे, जिससे उन्हें अपार शक्ति प्राप्त हुई। पांडवों ने भी अपने खोए हुए राज्य की प्राप्ति हेतु सूर्य देव की उपासना की थी। रामायण काल में भगवान श्रीराम और माता सीता ने अयोध्या लौटने के बाद रामराज्य की स्थापना हेतु सूर्य उपासना की थी।

यह पर्व प्रकृति और स्वास्थ्य से भी गहराई से जुड़ा है। इसमें बाँस की टोकरी (दउरा) और मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग किया जाता है। सूर्य की किरणों में अर्घ्य देने से शरीर को ऊर्जा मिलती है और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। यह पर्व पूर्णतः सात्त्विक और प्राकृतिक जीवनशैली को दर्शाता है।

बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में यह चार दिवसीय महापर्व अत्यन्त श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसे एक कठिन तपस्या के समान माना जाता है।

यद्यपि भीड़ और स्वच्छता जैसी कुछ समस्याएँ देखने को मिलती हैं, फिर भी लोगों की आस्था और श्रद्धा में कोई कमी नहीं आती। यदि घाटों की व्यवस्था और स्वच्छता और बेहतर हो जाए, तो यह पर्व और भी सुन्दर रूप में मनाया जा सकता है।

मेरे लिए यह अनुभव अत्यन्त अविस्मरणीय रहा। इसने मुझे हमारी संस्कृति, परिवार की एकता और प्रकृति के महत्व को गहराई से समझने का अवसर प्रदान किया।





Basant kumar

Roll No- 91

Session - 2025-27

Principal Ma'am :---

गीता मैम, ज्ञान की वह दीपशिखा,
जो हर मन में जला दें शिक्षा की रेखा।
Pedagogy की गूढ़ विधाएं सिखाए,
सरल शब्दों में गहरी बातें बताएं।
आपके पढ़ाने का है अंदाज अनमोल,
हर कठिन पाठ भी लगे सरल और गोल।
संवेदनशीलता और अनुशासन का संयोग
बनाएं,
हर छात्र के दिल में आत्मसम्मान जगाएं।
ना कभी गुस्सा, ना कभी थकान,
आपसे ही सीखा धैर्य और सम्मान।

Nitu Ma'am :---

नीतू मैम ,आप हो स्नेह की मूरत,
CTE गया की सबसे सुंदर सूरत।
हर शब्द आपका बने प्रेरणा की कहानी,
हर शब्द में छुपी हो समझदारी और रवानी।
Childhood & Growing up जब लगता
भारी,
आपने सीखाया,ना हारो,करो जमकर तैयारी।
आपकी नजरों में था विश्वास गहरा,
हर छात्र को आपने समझा एक सितारा सुनहरा।
आपसे ही सीखा हमने Inclusive Education
की पाठ,
धन्य है हम सब, जो पाए आपका साथ।

Amrita Ma'am :---

अमृता मैम, आप हो दीपक - सी ज्योति,
ज्ञान की राह में बिखेरती रौशनी छोटी-छोटी।
बी.एड कालेज की आन-बान-शान हो आप,
शिक्षा का सबसे सुंदर वरदान हो आप।
Subject है आपका learning & Teaching,
आपके क्लाश में एक भी बच्चा नहीं रहता
missing,
पढ़ाती न केवल आप पाठ्यक्रम की बातें,
बल्कि सीखा देती है जीवन की वो सभी सौगातें।
सम्मान, समझदारी और संस्कार,
इन मूल्यों को देती आप पहले उपहार।
शब्दों से नहीं, दिल से है ये वंदन,
आपकी जैसी गुरु मिले मुझे हर जनम।

Poonam Ma'am :---

पूनम मैम, आप है पूर्णिमा की चांदनी,
गीत गाए ऐसे, जैसे कोई रागिनी।
हर बात में आपकी झलकती है समझदारी,
आपसे सीखा हमने मूर्ति बनाने की
कलाकारी।
आप सीखाती है हमें भावों की भाषा,
आपसे ही जाना हमने प्रेम की परिभाषा।
ड्रामा के मंच पर जब आप सिखलाए,
तो भावनाएं खुद अभिनय बन जाए।
हर हृदय में आपकी छवि उभर आए,
कला की देवी बन, आप हर मन को भाए।

Bibha Ma'am :---

बिभा मैम, आप हो ज्ञान की बाती,
हर अंधेरे को करें उजियारा, जैसे प्राची।
Gender, School & Society का पाठ
पढ़ाती,
सामाजिक बुराइयों से हमें लड़ना सिखाती।
कक्षा में जब आप मुस्कुरा कर आती,
हर बच्चे के चेहरे पर प्रसन्नता लाती।
लिंग -भेद की ग्रन्थियां जब सुलझाती,
समानता की राह हमें दिखलाती।
आप कहती, स्कूल/कालेज केवल भवन
नहीं होता,
वह समाज का आईना, विचारों का नयन
होता।

Ramsagar Sir :---

रामसागर सर हैं वो गुरु ,जो हर मन को जान दे,
विज्ञान की गहराई को भी, सरल शब्दों में बांध
दे।

शब्दों में गूँजे जिनकी वाणी की गूढता,
ज्ञान का हर मोती जिनसे पाए शिष्टता।
गुरुत्वाकर्षण से लेकर ऊष्मा की बात,
उनके हर लहजे में विज्ञान की सौगात।
प्रेरणा है आप मेरे, आदर्श की मिसाल,
आपसे ही सीखे ऐसे शिक्षक बनने का कमाल।
आप समझाएं, शिक्षा का असली रूप,
जहां ज्ञान हो, संवेदना का भी स्वरूप।

Shiv Kumar Sir :---

शिवकुमार सर हैं शिक्षा का वो दर्पण,
जिसमें दिखें विचारों का समर्पण।
जैसे आसमान में टिमटिमाते तारे -सितारे,
सर आप है हम सब बच्चों के प्यारे।
वुड डिस्पैच, वर्धा, कोठारी या मुदालियर की
बातें,
माध्यमिक शिक्षा की हर पहलू पर आप दृष्टि
फैलाते।
संविधान की मूल भावना से करवाते हैं
साक्षात्कार,
न्याय,समता और अधिकारो पर होता है विचार।
आपका धैर्य, आपका स्नेह, आपका सम्मान,
बना देता है आपको सबसे अलग, सबसे महान।

Amitabh Sir :---

कक्षा में जब आते हैं अमिताभ बच्चन सर,
हर जगह दिखने लगता है गणित का असर।
सर कहते हैं जब, हमको गणित पढ़ाने नहीं
आता,
उनका यही Dialogue हम सब को भाता।
जहां औरो को दिखें गणित के डर का साया,
वहां सर की एक मुस्कुराहट ने सबकुछ
सुलझाया ।
Teaching method हो या pedagogy की
बात,
हर Concept में वो भरते उत्साह और जज्बात।
कक्षा में जब सर मुस्कुराते हैं,
हर छात्र के दिल को छू जाते हैं।

Preetam Sir:---

CTE में जिनका अद्वितीय स्थान,
प्रितम सर , आप हैं गुरु महान्।
न केवल computer और digital की बातें,
बल्कि आप सिखाए ICT की सौगातें।
PowerPoint की slide में जब कहानी सजती
हैं,
Internet की लहरों में आपकी रवानी दिखती है।
आपके शब्दों में होती है प्रेरणा की आग,
मन में भर दे उमंग, जैसे जीवन में नया फाग।
आपका धैर्य, आपका मुस्कान,
हर छात्र के जीवन की सबसे सुंदर पहचान।

Mukesh Sir :---

मुकेश सर हैं वो अद्भुत प्रकाश,
जो छात्रों में भरते हैं अनुशासन का उल्लास।
सबसे ज्यादा Intersting होती है उनकी क्लास,
क्योंकि पढ़ाने का स्टाइल है उनका एकदम
झकास।
कक्षा में उनका आना होता जैसे प्रभात
जहां चारों ओर होती Knowledge &
Curriculum की बात।
अनुशासन हो या विषय जिसकी समझ गहरी,
उनकी सोच लगे जैसे कोई समुद्र की लहरें
ठहरी।
आपके जैसे गुरु मिल जाए अगर,
तो ज्ञान बने जीवन का सबसे सुंदर सफर।

Mrityunjay Sir:---

संवाद में शांति, व्यवहार में कुशलता,
मृत्युंजय सर आप हैं,सच्चे गुरु कि शीतलता।
सादगी, निष्ठा और दृढ़ता का प्रतीक,
जिनकी प्रेरणा से मिलती है, जीवन की सीख।
Biology के हर पन्ने में जीवन का गीत सुनाते
हैं,
बच्चों को उन अंगों के बारे में सरलता से
समझाते हैं।
आप न केवल अध्यापक, बल्कि मार्गदर्शन के है
सच्चे,
आपने ही तो सिखाया,कि कैसे बने हम अच्छे।
आपकी छाया में हम सब मंजिल खोज पाते हैं,
आपके जैसे गुरु से , हम जीना सीख जाते हैं।

Tanveer Sir :---

तनवीर सर नाम है उस प्रेरणा का,
जो हर कदम पर दीप जलाएं रौशनी का।
Physical education के आप उस्ताद
हैं,

हर हरकत में हुनर, हर बात में जज्बात
है।

कक्षा में जब आप मुस्कान के संग आते
हैं,

Health education की बात बताते हैं।

कभी खेल, कभी दौड़, कभी व्यायाम,
हर सबक में छिपा होता है तंदुरुस्ती का
पैगाम।

कसरत की हिम्मत हो या योगा की बात,
आपकी तालीम से मिलती हैं स्वस्थ
शरीर की सौगात।

Ashok Sir :---

अशोक सर सिर्फ नाम नहीं, बल्कि एक सम्मान है,
हर दिल की गहराईयों से उठती एक पहचान है।

Language across curriculum का जो पाठ
पढ़ाते हैं,

शब्दों की दुनिया में हम सबको आगे बढ़ाते है।

हर छात्र के मन में बसते हैं आप,

जैसे मंदिर में दीपक की शांति का ताप।

सादगी में जिनकी ज्ञान झलकती है,

वाणी में मिठास और दृष्टि में दृढ़ता बस्ती है।

हर छात्रों के सपनों को नई उड़ान दिलाते हैं,

सच्चे गुरु बनकर सबको मंजिल तक पहुंचाते हैं।

CTE का गौरव, हमारी शिक्षा की शान।

सभी गुरुजनों को समर्पित, यह कवितामय
प्रणाम॥

" 🙏 🙏 "



Meenakshi Kumari
Session:2023-25

झंडा ऊंचा रहे हमारा

झंडा ऊंचा रहे हमारा
जैसे नभ चाँद सितारा
इस झंडे के नीचे निर्भय
है स्वराज यहाँ अविचल निश्चल
विश्व प्रेम का जब तक प्यारा
यह जीवन द्युति मान हमारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा, जैसे नभ में चाँद सितारा ।
ऊँच नीच के भेद मिटावें
हिल-मिल हिल-मिल प्रेम बढ़ावें
अपनी नैया आप चलाए
स्वावलम्ब हो ध्येय हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा, जैसे नभ में चाँद सितारा
आओ सब मिल झंडा फहराये
मिल-जुल मिल-जुल मान बढ़ाये
अपनी सुर को आप दे वाणी
विश्वगुरु का धुन हो हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा, जैसे नभ में चाँद सितारा....

कविता

Ritik Raj

Roll No: 87
Session: 2025-27



CORRUPTION

Sorry to interrupt,
but the system is corrupt.
Someone must raise their voice,
silence is no longer a choice.

Blaming others is not enough,
now we must stand strong and
tough.

We pay our taxes every day,
yet watch them steal our rights
away.

We must fight from deep inside,
not just complain and try to hide.

Stand together, bold and brave,
let corruption dig its own grave.

जन्म और मृत्यु के पीछे छिपा ब्रह्मांडीय रहस्य



Anshu Kumari Singh
Roll No: 38
Session: 2025-27

यह केवल एक 'रहस्यमयी' कल्पना और दार्शनिक सिद्धांत है - ऐतिहासिक या वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्य नहीं। लेकिन जब हम इन तीनों महान वैज्ञानिकों की जन्म और मृत्यु की तिथियों को जोड़ते हैं, तो एक अद्भुत पैटर्न (Pattern) दिखाई देता है।

यह पैटर्न देखिए:

8 जनवरी 1642 गैलीलियो गैलिली (Galileo Galilei), जो अपनी पीढ़ी के सबसे महान वैज्ञानिक थे, उनकी मृत्यु हुई। गैलीलियो की मृत्यु के ठीक 300 साल बाद, **8 जनवरी 1942** को स्टीफन हॉकिंग (Stephen Hawking) का जन्म हुआ, जो उस पीढ़ी के महान वैज्ञानिक बने। इसके अलावा, **14 मार्च 1879** को अल्बर्ट आइंस्टीन (Albert Einstein) का जन्म हुआ था और हॉकिंग की मृत्यु की तिथि भी **14 मार्च** ही है, जिस दिन आइंस्टीन का जन्म हुआ था। शायद आत्मा हर पीढ़ी (Generation) में एक अलग शरीर और अलग नाम से जन्म ले रही है। लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि आइंस्टीन और हॉकिंग दोनों एक ही समय पर 13 साल तक एक साथ जीवित थे (1942 से 1955 तक)।

तो एक ही आत्मा दो शरीरों में कैसे रह सकती है? आइंस्टीन की मृत्यु 1955 में हुई और हॉकिंग को ALS की बीमारी 1963 में हुई। मानो एक की मृत्यु के बाद दूसरे ने कार्यभार संभाला हो; ऐसा लगता है कि जब आइंस्टीन की मृत्यु हुई, तब ब्रह्मांड (Universe) ने हॉकिंग का शरीर तैयार किया और उन्हें शारीरिक रूप से अक्षम कर सिर्फ "सोचने" के लिए विवश (Force) किया। पुनर्जन्म केवल शरीर का हस्तांतरण नहीं होता, क्योंकि कभी-कभी यह ज्ञान और सिद्धांतों का हस्तांतरण भी होता है।

कुछ अन्य तथ्य:

आइंस्टीन और हॉकिंग दोनों का **IQ समान** था। दोनों की दो शादियाँ हुई थीं। दोनों की मृत्यु 76 वर्ष की आयु में हुई। क्या सच में अपने-अपने समय के इन तीनों महान वैज्ञानिकों के बीच कोई आंतरिक जुड़ाव है? सच तो यह है कि इस ब्रह्मांड के बहुत से ऐसे राज हैं जो हमारे सामने हैं, लेकिन हम उन्हें देख नहीं पाते। इन तीनों को देखकर लगता है मानो एक ही चेतना तीन अलग-अलग जन्मों में अपना अधूरा काम पूरा कर रही हो:

गैलीलियो ने **ब्रह्मांड** को देखा।

आइंस्टीन ने **समय** को समझा।

हॉकिंग ने **कंपन (Vibration), आवृत्ति (Frequency) और ब्लैक होल (Black Hole)** का रहस्य खोला।

The Tibetan Reincarnation Tradition (तिब्बती पुनर्जन्म परंपरा):

तिब्बत में सदियों से यह परंपरा रही है कि किसी महान लामा की मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म खोजा जाता है। जब **13वें दलाई लामा** की मृत्यु हुई, तब भिक्षुओं ने संकेतों, सपनों और ध्यान के आधार पर छोटे बच्चों को खोजा, जो बाद में **14वें दलाई लामा** बने। कहा जाता है कि उस बच्चे ने ऐसी वस्तुएं पहचान लीं जो पिछले दलाई लामा की थीं, जबकि उसे वे वस्तुएं पहले कभी नहीं दिखाई गई थीं। इसे कई लोग '**आत्मा के एक ही चेतना रूप में लौटने**' का प्रमाण मानते हैं। शायद इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हम सच में जीवन - मृत्यु के चक्र में फंसे हैं जहां हर जीव का अपने अपने कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म होता है।



Pallavi Rani

Roll No: 9

Session: 2024-26

आसमान से भी आगे....

मैं अक्सर दूर क्षितिज को देखता था,
सोचता था कि एक सपना आखिर
कितनी दूर जा सकता है।

आगे का रास्ता बहुत लंबा लगता था,
और आसमान इतना ऊँचा कि
जैसे छू पाना असंभव हो।
लेकिन मेरे शांत दिल के भीतर
एक धीमी-सी आवाज़ जन्म लेने लगी।
वह धीरे से कहती थी....
उठो, चाहे दुनिया कितनी भी भारी क्यों न
लगे।
उड़ो, चाहे तुम्हारे पंख कमजोर ही क्यों न हों।

मैंने बादलों के ऊपर उड़ते पक्षियों को देखा,
जो खुले नीले आकाश में स्वतंत्रता से
उड़ रहे थे।
उन्होंने कभी हवा से अनुमति नहीं माँगी,
और न ही आसमान की विशालता से डरे।
उन्होंने बस अपने पंखों पर भरोसा किया
और साहस को अपना रास्ता बनने दिया।
कभी-कभी यह सफर बहुत अकेला
लगता है....

कभी रास्ता बहुत लंबा प्रतीत होता है।
अचानक तूफान भी आ सकते हैं,
और संदेह दिन को अंधेरा बना सकता है।
लेकिन हर तूफान एक दिन थम जाता है,
और हर रात के बाद एक नई सुबह आती है।
ऐसे भी पल आते हैं जब दुनिया तुम
पर सवाल उठाती है....
जब कुछ आवाजें कहती हैं....
"तुम नहीं कर सकते।"

लेकिन याद रखो....

महान ऊँचाइयाँ कभी भी
डर की बात सुनने वालों ने हासिल नहीं की।
हर सपने देखने वाले के भीतर
एक अदृश्य ताकत छिपी होती है।
एक ऐसी ताकत जो हर गिरने के बाद
फिर उठती है।
जो असंभव लगने पर भी हार नहीं मानती।

एक बार फिर आसमान की ओर देखो....
वह इतना विशाल है कि हर सपना
उसमें समा सकता है,
इतना खुला है कि हर उम्मीद को
जगह मिल सकती है,
और इतना धैर्यवान है कि हर यात्रा का
इंतज़ार कर सकता है।

एक दिन, कदम-दर-कदम,
पंखों की हर हलचल के साथ,
तुम संदेहों से ऊपर उठ जाओगे,
शोर से ऊपर और उन सीमाओं से भी ऊपर
जो दूसरों ने तुम्हारे लिए तय की थीं।

और जब वह क्षण आएगा....
जब तुम्हारे सपने सच में बादलों को छू लेंगे,
तब तुम्हें एक सुंदर सच्चाई समझ आएगी-
आसमान कभी बहुत ऊँचा नहीं था,
वह तो बस इंतज़ार कर रहा था
कि तुम खुद पर विश्वास करो।

इसलिए चलते रहो, सपने देखते रहो,
और उठते रहो।
क्योंकि कहीं उस क्षितिज के पार
तुम्हारा आसमान तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।

वो सवाल जिसका जवाब आज तक नहीं मिला

Manish Kumar

Roll No: 37

Session: 2025-27



इंसान को अगर किसी चीज़ ने सबसे ज़्यादा आगे बढ़ाया है, तो वह है—**सवाल**।

हर खोज, हर आविष्कार और हर नई शुरुआत के पीछे किसी न किसी सवाल की चिंगारी छिपी होती है। लेकिन दुनिया में कुछ सवाल ऐसे भी हैं, जिनका जवाब आज तक नहीं मिल पाया। ऐसा ही एक सवाल है—

क्या इस पूरे ब्रह्मांड में हम सच में अकेले हैं?

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें असंख्य तारे दिखाई देते हैं। ये तारे केवल छोटे-छोटे चमकते बिंदु नहीं हैं, बल्कि इनमें से बहुत से तारे हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़े हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार ब्रह्मांड में **दो ट्रिलियन** से भी ज़्यादा **आकाशगंगाएँ** हो सकती हैं, और हर आकाशगंगा में अरबों-खरबों तारे मौजूद हैं। इतनी विशाल दुनिया में यह सवाल और भी गहरा हो जाता है—

क्या कहीं और भी जीवन हो सकता है?

दिलचस्प बात यह है कि वैज्ञानिक कई सालों से इस सवाल का जवाब खोजने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए अंतरिक्ष में रेडियो सिग्नल भेजे जाते हैं, शक्तिशाली टेलीस्कोप से दूर-दूर के ग्रहों को देखा जाता है और यह पता लगाने की कोशिश की जाती है कि कहीं जीवन के संकेत मिलते हैं या नहीं।

साल 1977 में एक ऐसी रहस्यमयी घटना हुई जिसने वैज्ञानिकों को हैरान कर दिया। अमेरिका के एक रेडियो टेलीस्कोप ने अंतरिक्ष से एक अजीब और शक्तिशाली सिग्नल पकड़ा। यह सिग्नल इतना अनोखा था कि जिस वैज्ञानिक ने इसे देखा, उसने कागज़ पर 'Wow!' लिख दिया। तभी से इसे **'Wow Signal'** कहा जाने लगा। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि यह सिग्नल केवल **72** सेकंड तक ही मिला और फिर कभी दोबारा नहीं मिला। आज तक वैज्ञानिक यह नहीं जान पाए कि यह सिग्नल आखिर आया कहाँ से था। यह घटना आज भी एक रहस्य बनी हुई है और हमें फिर से उसी **सवाल** के सामने खड़ा कर देती है। लेकिन अगर हम थोड़ी गहराई से सोचें, तो पता चलता है कि रहस्य सिर्फ ब्रह्मांड में ही नहीं, बल्कि हमारी अपनी ज़िंदगी में भी छिपे होते हैं। कभी-कभी हम भी अपने आप से पूछते हैं— **मैं कौन हूँ, मेरी असली मंज़िल क्या है, क्या मैं वही बन पाऊँगा जिसका मैंने सपना देखा है?**

शायद ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत सच यही है कि हर **सवाल** का जवाब तुरंत नहीं मिलता। कुछ जवाब समय के साथ मिलते हैं, और कुछ जवाब खोजने के लिए पूरी ज़िंदगी लग जाती है। लेकिन यही सवाल इंसान को आगे बढ़ने की ताकत देते हैं। अगर दुनिया में कोई रहस्य ही न होता, तो शायद खोज करने का जुनून भी खत्म हो जाता। इसलिए हो सकता है कि उस सवाल का जवाब आज तक न मिला हो, लेकिन शायद यही सवाल आने वाले समय की सबसे बड़ी खोज बन जाए। और जब अगली बार आप रात के शांत आसमान को देखें, तो एक पल के लिए ज़रूर सोचें—

क्या इस अनंत ब्रह्मांड में कहीं कोई और भी है, जो ठीक इसी तरह आसमान की तरफ देखकर यही सवाल पूछ रहा होगा?

होम बाउंड



Sunny Kumar

Roll No: 34

Session: 2024-26

हाल ही में मैंने एक बहुत ही भावुक और दिल को छू लेने वाली फिल्म देखी, जो जीवन की कड़वी सच्चाइयों को दर्शाती है। फिल्म की शुरुआत दो दोस्तों – चंदन, जो एक दलित संघर्षशील युवक है, और शोएब, जो एक मुस्लिम लड़का है – की कहानी से होती है। दोनों बचपन के दोस्त होते हैं और गरीबी से बाहर निकलकर सम्मानजनक जीवन जीने के लिए पुलिस बल में भर्ती होने का सपना देखते हैं। वे उत्तर भारत के एक छोटे से गाँव में रहते हैं, लेकिन काम के लिए गुजरात के सूरत शहर में प्रवासी मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। अपने परिवारों की बेहतर जिंदगी के लिए वे कड़ी मेहनत से पढ़ाई करते हैं और पुलिस कांस्टेबल की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते हैं।

जब वे रेलवे स्टेशन पर उम्मीदवारों की भारी भीड़ देखते हैं, तो एक पल के लिए उनका हौसला टूट जाता है, लेकिन वे हार नहीं मानते और अपने सपनों को पूरा करने के लिए लगातार मेहनत करते रहते हैं। कुछ कारणों से उनके परिणाम रोक दिए जाते हैं। चंदन लिखित परीक्षा में सफल हो जाता है, लेकिन दुर्भाग्यवश शोएब सफल नहीं हो पाता। परिणाम में देरी होने के कारण दोनों फिर से फैक्ट्री में काम करने लौट जाते हैं। मार्च 2020 में जब देशभर में सख्त लॉकडाउन लगाया जाता है, तब उनकी फैक्ट्री बंद हो जाती है और उनकी जमा पूंजी भी जल्दी खत्म होने लगती है। मजबूर होकर वे हजारों प्रवासी मजदूरों के साथ अपने गाँव लौटने का फैसला करते हैं। सार्वजनिक परिवहन बंद होने के कारण वे एक भीड़भाड़ वाले ट्रक में सफर करते हैं। यात्रा के दौरान चंदन गंभीर रूप से बीमार पड़ जाता है। कोरोना वायरस के डर से अन्य यात्री उन्हें मध्य प्रदेश के एक हाईवे के किनारे छोड़कर चले जाते हैं।

शोएब अपने दोस्त को अकेला छोड़ने से इनकार कर देता है और उसे अपनी पीठ पर उठाकर चलने लगता है। अपनी पूरी निष्ठा और दोस्ती निभाने के बावजूद वह चंदन को बचा नहीं पाता, और अंततः चंदन की मृत्यु हो जाती है। इसके बाद शोएब गाँव लौटता है और चंदन के दुखी परिवार का सहारा बन जाता है। फिल्म का अंत एक भावुक मोड़ के साथ होता है, जब डाक विभाग चंदन के नाम पुलिस कांस्टेबल की नियुक्ति पत्र लेकर पहुँचता है। यह दृश्य मुझे अंदर तक झकझोर देता है। इसके बाद शोएब अपनी पढ़ाई पर ध्यान देता है और अपने तथा चंदन के साझा सपने को पूरा करने का संकल्प लेता है। फिल्म में ईशान खट्टर (शोएब) और विशाल जेठवा (चंदन) ने अपने अभिनय से किरदारों में जान डाल दी है। यह फिल्म वर्ष 2026 के 97वें अकादमी पुरस्कार (ऑस्कर अवॉर्ड्स) के लिए शॉर्टलिस्ट भी की गई थी।

यह फिल्म हमें जीवन की सच्चाइयों से परिचित कराती है और दिखाती है कि आज भी लोग जाति, धर्म और गरीबी के आधार पर भेदभाव का सामना करते हैं।

“एक समृद्ध समाज के लिए व्यापक गरीबी को समाप्त करना आवश्यक है।” – एडम स्मिथ





Shweta Sinha
Roll no: 41
Session: 2024-26

Sweta Kumari
Roll No: 46
Session: 2024-26



नारी शक्ति : तुम अनंत हो

कदम-कदम पर कृपा करती, तुम करुणा का रूप हो,
जीवन के सूने मरुथल में, तुम शीतल-सी धूप हो।

पल-पल जग को सींच रही तुम, सहकर सारे कष्ट-क्लेश,
धीरे-धीरे बदल रही तुम, इस अंबर का पूरा भेष।

संकट में तुम खड़ी हुई हो, एक सुदृढ़ चट्टान-सी,
इस धरती के माथे पर तुम, चमक रही मुस्कान-सी।

सहनशीलता की तुम सरिता, ममता का तुम मधुवन हो,
नेह की अखंड ज्योति हो तुम, जीवन का सुंदर उपवन हो।

जब तुम आगे बढ़ती हो तो, मंज़िल भी मुस्काती है,
हवाएँ रास्ता छोड़ खड़ी हों, ऐसी आंधी आती है।

मानो साक्षात् दुर्गा बनकर, तुमने दुखों को संहारा है,
या तुम ही हो वह कशती, जिसने डूबते जग को उबारा है।

तुम्हारी एक हुँकार मात्र से, ये पर्वत भी डोल जाते हैं,
जो बंद थे सदियों से बंधन, वे धागे खुल जाते हैं।

तुम कोमल हो, पर भीतर से वज्र-सी भारी हो,
तुम शांत दिखने वाली सब पर, पड़ने वाली भारी हो।

डिजिटल युग: उँगलियों पर दुनिया

कंप्यूटर की किरणों में अब, कल का सपना पलता है,
मशीनों के इस महाजाल में, आज का मानव चलता है।

पल-पल की सब खबरें मिलतीं, इस छोटे से पर्दे पर,
लाइक-लाइक के चक्कर में हम, बैठे हैं बस घर के भीतर।

पूरी दुनिया सिमट गई है, एक छोटे से गाँव जैसी,
पर अपनों की दूरी लगती, धूप में तपते पाँव जैसी।

यह इंटरनेट का माया-बाज़ार ही अब हमारा संसार है,
यहाँ भावनाओं के सौदे हैं, और गैजेट्स का व्यापार है।

स्मार्टफोन की घंटी बजते ही, नींद अचानक जाग जाती है,
और हमारे अपनों की बातें, नोटिफिकेशन बनकर भाग जाती हैं।

मानो हर कोई इस आभासी भीड़ में, अपनी पहचान ढूँढ़ रहा,
सच्चे रिश्तों को पीछे छोड़, बस 'फॉलोअर्स' की संख्या गिन रहा।

एक क्लिक पर सात समंदर पार का चेहरा सामने आ जाता है,
पूरी सृष्टि का सारा ज्ञान, एक सेकंड में मिल जाता है।

लाखों आँखें देख रही हैं, पर कोई हाल पूछता नहीं,
इस डिजिटल दुनिया में, अपनापन कहीं सूझता नहीं।



The Transformative Role of Teachers in the 21st Century Classroom



Abhishek Kumar

Roll No: 58

Session: 2025-27

In the **21st century**, the role of a teacher has expanded beyond traditional teaching. As a B.Ed. student, I understand that teachers are not just knowledge providers but facilitators who guide students in their overall development. A **learner-centered classroom** encourages **participation, critical thinking, and active learning instead of rote memorization.**

Technology has become an important part of education. Teachers must use **digital tools** to make learning engaging while maintaining a proper balance. **Inclusive education** is also essential, where every student, regardless of background or ability, feels valued and supported.

Teachers also play a key role in **shaping values** like respect, empathy, and responsibility. Modern assessment focuses on **continuous evaluation** through activities and projects rather than only exams.

Thus, teaching is a **dynamic profession** that requires innovation, understanding, and dedication to build responsible and capable future citizens.



Poem



Deepak Raj
Roll No: 82
Session: 2025-27

A PLEA FOR TOMORROW

Tomorrow will be morning again,
But what is the point if it goes in vain?
I wonder why, after wasting so much water,
We are the ones who still crave for rain.

We are humans who wish to be sages,
Yet carry storms of anger through the ages.
Is it not strange that with wisdom we claim,
We still burn forests in the name of gain?

We cut the trees that give us air,
Then search for shade that is not there.
We poison rivers, dark and wide,
Then pray for purity with folded pride.

The sky once blue now fades to grey,
While silent mountains watch decay.
The winds still whisper a gentle plea,
"Protect the earth, protect the sea."

A drop of water, a breath of air,
Are treasures far beyond compare.
But blinded by our endless need,
We forget the cost of every deed.

Tomorrow the sun will rise once more,
Knocking softly on nature's door.
But will we listen, will we care,
Or leave behind a world unfair?

For Earth is patient, calm, and wise,
Yet even patience slowly dies.
So before tomorrow slips away,
Let kindness guide the path we lay.

Divya Prakash Singh

Roll No: 15
Session: 2025-27



ज़िन्दगी

ये जन्म दिया मालिक ने हमें
इस जन्म को सफल बनाने को
हमने समझा इसका यह मतलब
मिली बस धन दौलत ही कमाने को॥

जिंदगी की दौड़ में सब दौड़े
एक कागज़ के टुकड़े के लिए
कुछ दौड़े परिवार के खातिर
रोटी,मकान और कपड़े के लिए ॥

मूल मकसद इस जिन्दगी का हम
सदियों से भूले बैठे हैं
हर कर्म किया खुद के खातिर
बस प्रभु को भूले बैठे हैं॥

जब अंत समय आयेगा तो
गठरी हम सब की खाली होगी
किया न भजन प्रभु का तो
कहां इस मुख पे लाली होगी॥

जिंदगी एक कोमल फूल है तो
इसको प्रभु चरणों में अर्पित करदो
और क्या दुःख फिर तुमको होगा
इस तन को तुम गुरुद्वारा, चर्च, मंदिर,
मस्जिद करदो॥

जब काज हमारा ये पूरा होगा
क्या धन दौलत से कमाएंगे
फिर मालिक के प्यारे होंगे हम
जनम-मरण से मुक्ति पाएंगे॥

A Trip to Heaven



Sunny Kumar
Roll No: 34
Session: 2024-26

On 12th February 2026, I visited Sikkim, a breathtaking Himalayan state and India's 22nd state (since 1975), with my friends. Sikkim is India's first 100% organic state, as well as one of the cleanest and second smallest states in the country.



We started our journey from Gaya Ji and travelled through Patna and Siliguri to reach Sikkim. From Siliguri, a bus took us to **Gangtok, the capital of Sikkim**. The route to Gangtok was extremely scenic, passing through beautiful Himalayan valleys. The natural beauty of Sikkim, along with its tea gardens, rivers, and mountains, made the journey truly picturesque and unforgettable.

The next day, we continued our journey and reached **Lachung, a beautiful mountain village** close to the Tibetan border. This village is famous for the 19th-century Buddhist Lachung Monastery, surrounded by apple orchards. On the way, several waterfalls mesmerized us with their breathtaking beauty and soothing sound.

The next day, we visited **Zero Point (Yumesamdong)** in North Sikkim. It is a high-altitude tourist destination located at approximately 15,300–15,700 feet near Lachung. This place is known for its year-round snow, stunning mountain views, and low oxygen levels. It offers a serene and untouched landscape where road connectivity ends. Due to the high altitude, oxygen levels are low, so it is important to move slowly and stay hydrated to avoid altitude sickness. It is considered the last point of civilization and offers a truly adventurous and unforgettable experience for travelers.

The culture of Sikkim is a vibrant and harmonious blend of traditions from its three main ethnic groups – **the Lepchas, Bhutias, and Nepalese**.

It was a mesmerizing journey for me as I got the opportunity to experience the local culture and explore the wonderful places of Sikkim. I wish to visit again in the future to discover even more beautiful destinations.





Saloni priya

Roll no -78

Session 2024-26

नया शहर हमेशा थोड़ा सा डराता है।
अनजान सड़कें, अनजान लोग... और एक छोटा सा
कमरा, जहाँ से एक नई जिंदगी शुरू होती है।

ऐसी ही एक नई जिंदगी लेकर आई थी आराध्या।
गाँव की एक नटखट, थोड़ी सी झल्लि सी लड़की, जो
बी.एड. की पढ़ाई करने अपने घर से दूर इस नए
शहर में आई थी। पहली बार घर से इतनी दूर। पहली
बार सब कुछ खुद संभालना।

जब उसने अपना छोटा सा किराए का कमरा देखा,
तो एक पल के लिए उसका दिल घबरा गया।
ना माँ की आवाज़...
ना घर की चहल-पहल...
बस एक खामोशी।

लेकिन आराध्या ने मुस्कुराते हुए खुद से कहा—
“चलो... यहीं से अपनी कहानी शुरू करते हैं।”

अब उसकी जिंदगी में हर दिन एक नया सबक था।
कभी गैस सिलेंडर भरवाना...
कभी सुबह-सुबह बाजार जाकर सब्ज़ी खरीदना...
कभी खुद खाना बनाना...
पहले दिन उसने दाल बनाई... पर दाल इतनी
नमकीन हो गई कि खुद ही हँस पड़ी।
एक पल के लिए उसे माँ की याद आई।
फिर वही नमकीन दाल खाते हुए उसने खुद से कहा
—

“सीख रही हूँ... एक दिन सब ठीक से बन जाएगा।”

कभी पैसे कम पड़ जाते, कभी पढ़ाई का दबाव बढ़
जाता।

कभी रात को चुपके से घर की याद भी आ जाती।
लेकिन हर मुश्किल के बाद आराध्या को अपने अंदर
एक नई ताकत महसूस होती।

उसे समझ आने लगा था कि आज़ादी सिर्फ अपनी
मर्जी से जीना नहीं होती...
बल्कि अपने पैरों पर खड़ा होना भी होती है।

कॉलेज में भी आराध्या अलग ही थी।
कभी क्लास में सवाल पूछना,
कभी दोस्तों को हँसाना,
कभी पूरे उत्साह से प्रेजेंटेशन देना।

लोग अक्सर कहते—

“तुम इतनी परेशानियों में भी इतनी खुश कैसे
रहती हो?”

आराध्या मुस्कुराकर कहती—

“क्योंकि मुझे पता है, ये संघर्ष मेरी कमजोरी
नहीं... मेरी ताकत बन रहा है।”

धीरे-धीरे उसे एहसास हो गया था कि जिंदगी की
असली खुशी आराम में नहीं...
अपने दम पर आगे बढ़ने में होती है।

एक रात पढ़ते-पढ़ते उसने अपनी डायरी में लिखा
—

“आज मैं थकी हुई हूँ... पर हार नहीं मानूंगी।
आज मैं अकेली हूँ... पर कमजोर नहीं हूँ।
आज संघर्ष है... लेकिन कल सफलता भी होगी।”

और उसी पल उसे लगा—

वो सिर्फ बी.एड. की छात्रा नहीं है...
वो अपने सपनों की निर्माता है।

शिक्षक सिर्फ किताबें नहीं पढ़ाता...

वो लोगों को जीना भी सिखाता है।

और आराध्या को विश्वास था—

एक दिन वह अपने छात्रों को यह जरूर बताएगी
कि अगर एक झल्लि सी लड़की नए शहर में
अकेले संघर्ष कर सकती है,
तो इस दुनिया में कोई भी अपने सपने पूरे कर
सकता है।

क्योंकि हिम्मत हमेशा परफेक्ट लोगों में नहीं
होती...

कभी-कभी वो झल्लि सी लड़कियों में भी होती है।



Vishal Sharma
Roll No: 45
session: 2023-25

भारतीय समाज और कानून का संबंध अत्यंत गहरा, जटिल और ऐतिहासिक रूप से निर्मित है। कानून केवल नियमों और दंड की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह समाज की शक्ति-संरचनाओं, नैतिक मूल्यों और असमानताओं को भी प्रतिबिंबित करता है। भारत में आधुनिक विधिक ढाँचे की नींव औपनिवेशिक शासन के दौरान पड़ी, विशेषकर ईस्ट इंडिया कंपनी के काल में। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक न्याय आधारित राज्य की परिकल्पना की। किंतु आलोचनात्मक दृष्टि से देखने पर स्पष्ट होता है कि कानून और सामाजिक वास्तविकताओं के बीच अभी भी गहरी दूरी बनी हुई है।

भारतीय समाज सदियों से जाति, वर्ग, लिंग और धर्म के आधार पर विभाजित रहा है। संविधान ने समानता का अधिकार प्रदान किया, अस्पृश्यता को समाप्त घोषित किया और आरक्षण जैसी नीतियों के माध्यम से ऐतिहासिक अन्याय को सुधारने का प्रयास किया। इसके बावजूद दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के विरुद्ध हिंसा और भेदभाव की घटनाएँ निरंतर सामने आती रहती हैं।

यह प्रश्न उठता है कि यदि कानून समान है, तो असमानता क्यों बनी हुई है? इसका एक प्रमुख कारण यह है कि कानून की पहुँच और उसका लाभ सभी तक समान रूप से नहीं पहुँच पाता। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए न्यायालय की प्रक्रिया महँगी और लंबी होती है।

इस प्रकार विधिक समानता व्यावहारिक असमानता में परिवर्तित हो जाती है।

कानून को अक्सर तटस्थ माना जाता है, किंतु वह सत्ता से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होता। औपनिवेशिक काल में बनाए गए कई दमनकारी कानून आज भी प्रभाव में हैं। कई बार इनका उपयोग असहमति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

राज्य के पास कानून के माध्यम से दंड देने की शक्ति होती है, परंतु जब यह शक्ति असंतुलित या पक्षपातपूर्ण ढंग से प्रयुक्त होती है, तब कानून लोकतंत्र के लिए चुनौती बन सकता है। इसलिए कानून की वैधता केवल उसके अस्तित्व में नहीं, बल्कि उसके न्यायपूर्ण और निष्पक्ष प्रयोग में निहित है।

भारतीय न्यायपालिका ने समय-समय पर नागरिक अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनहित याचिका की व्यवस्था ने आम नागरिक को न्याय तक पहुँचने का अवसर दिया। पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार और पारदर्शिता के मामलों में न्यायालयों ने सक्रिय हस्तक्षेप किया है।

फिर भी न्यायालयों में लंबित मामलों की संख्या, निर्णय में देरी और न्यायिक संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ कानून की प्रभावशीलता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। न्याय में विलंब, न्याय से वंचित करने के समान माना जाता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति लंबे समय तक असमान रही है। दहेज, घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न के विरुद्ध कानून बनाए गए हैं। इन कानूनों ने महिलाओं को अधिकार और सुरक्षा प्रदान की है, परंतु सामाजिक मानसिकता में अपेक्षित परिवर्तन अभी भी अधूरा है।

कानून व्यवहार को नियंत्रित कर सकता है, परंतु सोच को नहीं बदल सकता। जब तक समाज में

पितृसत्तात्मक संरचना कायम है, तब तक केवल विधिक प्रावधानों से वास्तविक समानता स्थापित नहीं हो सकती।

भारतीय समाज में कई बार कानून और परंपरा के बीच टकराव देखने को मिलता है। विवाह, उत्तराधिकार और धार्मिक प्रथाओं से जुड़े व्यक्तिगत कानूनों के संदर्भ में यह विवाद अधिक स्पष्ट होता है। समान नागरिक संहिता का प्रश्न इसी द्वंद्व का उदाहरण है। यहाँ कानून केवल विधिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श का विषय बन जाता है।

आलोचनात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि भारतीय कानून सामाजिक न्याय का आदर्श प्रस्तुत करता है, किंतु उसका क्रियान्वयन सामाजिक संरचनाओं से प्रभावित रहता है। कानून तभी प्रभावी होगा जब वह समाज के कमजोर वर्गों के लिए सुलभ, पारदर्शी और उत्तरदायी बने।

अतः आवश्यक है कि कानून और समाज के बीच संवाद स्थापित हो, नागरिकों में विधिक जागरूकता बढ़े और संस्थाएँ निष्पक्ष रूप से कार्य करें। तभी कानून वास्तविक अर्थों में सामाजिक परिवर्तन और न्याय का साधन बन सकेगा।



Rajeev Kumar

Roll No: 48

Session: 2024-26

हाल ही में मुझे ककोलत जलप्रपात घूमने का अवसर मिला। यह यात्रा मेरे लिए केवल मनोरंजन का साधन नहीं थी, बल्कि प्रकृति, पर्यावरण, भूगोल तथा स्थानीय संस्कृति को समझने का एक शिक्षाप्रद अनुभव भी रही। घने जंगलों एवं पहाड़ियों के मध्य स्थित यह जलप्रपात अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ठंडे जल तथा पौराणिक महत्व के कारण बिहार के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिना जाता है।

ककोलत पहुँचते ही सबसे पहले यहाँ का शांत वातावरण, हरियाली तथा चट्टानों से गिरता जल मन को अत्यंत आकर्षित करता है। गर्मी के मौसम में भी यहाँ का पानी अत्यधिक ठंडा रहता है, जो इस स्थान की सबसे विशेष बात है।

जलप्रपात के प्रमुख तथ्यात्मक आँकड़े इस प्रकार हैं — इसका स्थान गोविंदपुर प्रखंड, नवादा जिला, बिहार में है। नवादा शहर से इसकी दूरी लगभग 33 किलोमीटर तथा पटना से लगभग 150 किलोमीटर है। थाली बाजार से इसकी दूरी लगभग 4 किलोमीटर है। जलप्रपात की ऊँचाई लगभग 150-160 फीट मानी जाती है। यह दक्षिणी पठारी एवं वन क्षेत्र में स्थित है। यहाँ का प्रमुख आकर्षण वर्ष भर ठंडा रहने वाला जल है। प्रवेश शुल्क लगभग 10 रुपये प्रति व्यक्ति है। पर्यटन का समय सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रहता है तथा मंगलवार को यह बंद रहता है। भ्रमण के लिए अप्रैल से अगस्त का समय उपयुक्त माना जाता है। यह इको-टूरिज्म एवं प्राकृतिक पर्यटन का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ स्नान करने से सर्प योनि से मुक्ति मिलने की मान्यता भी प्रचलित है।

जब मैं ककोलत जलप्रपात पहुँचा, तब पहाड़ियों से गिरता हुआ जल तथा उसके चारों ओर फैली हरियाली अत्यंत मनमोहक लगी। रास्ते में घने पेड़-पौधे एवं प्राकृतिक दृश्य यात्रा को और अधिक रोचक बना रहे थे। यहाँ बड़ी संख्या में परिवार, विद्यार्थी तथा पर्यटक पिकनिक मनाते एवं जलप्रपात में स्नान करते दिखाई दिए। गर्मी के मौसम में भी यहाँ का ठंडा पानी शरीर एवं मन दोनों को ताजगी प्रदान करता है। मुझे यह स्थान बिहार के सबसे शांत एवं प्राकृतिक पर्यटन स्थलों में से एक लगा।

ककोलत जलप्रपात बिहार के दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है, जो छोटानागपुर पठार प्रणाली से जुड़ा माना जाता है। यहाँ की चट्टानी संरचना तथा पहाड़ी ढाल भूगोल के अध्ययन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। मेरे अनुभव के अनुसार जलप्रपात का निर्माण जल अपरदन की प्रक्रिया से हुआ है। इस प्रकार का क्षेत्र स्थानीय तापमान को नियंत्रित करने में सहायक होता है। पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार एवं आय की प्राप्ति होती है। पर्यावरण संरक्षण पर्यटन के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है तथा यह क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

स्थानीय लोगों के अनुसार ककोलत जलप्रपात का संबंध महाभारत काल से है। मान्यता है कि एक राजा को ऋषि के श्राप के कारण अजगर बनना पड़ा था। वनवास के दौरान पांडव यहाँ आए तथा उस राजा को श्राप से मुक्ति दिलाई। इसी कारण यह विश्वास प्रचलित है कि यहाँ स्नान करने से व्यक्ति को सर्प योनि से मुक्ति मिलती है। कुछ लोककथाएँ इस स्थान को भगवान श्रीकृष्ण से भी जोड़ती हैं।

मेरे अनुभव के अनुसार इस जलप्रपात की मुख्य विशेषताएँ आकर्षक प्राकृतिक दृश्य, स्वच्छ एवं ठंडा जल, शांत एवं हरियाली से भरपूर वातावरण तथा विद्यार्थियों के शैक्षणिक भ्रमण हेतु उपयुक्त स्थल होना है। यह स्थान पर्यावरण एवं भूगोल अध्ययन के लिए भी उपयोगी है तथा इको-टूरिज्म के विकास की अच्छी संभावना रखता है।

यात्रा के दौरान मैंने कुछ समस्याएँ भी देखीं, जैसे छुट्टियों में अत्यधिक भीड़, प्लास्टिक कचरे की समस्या, स्वच्छता की कमी, होटल एवं आवास की सीमित व्यवस्था तथा पार्किंग एवं यातायात का दबाव।

सन् 2024 में इको-टूरिज्म विकास परियोजना के अंतर्गत यहाँ कई नई सुविधाओं का विकास किया गया है, जिससे पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्राप्त हो सके।

यह यात्रा मेरे लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक रही। ककोलत जलप्रपात भूगोल, पर्यावरण अध्ययन, पर्यटन प्रबंधन, सतत विकास तथा सांस्कृतिक लोककथाओं के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह यात्रा पुस्तकीय ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ने का एक उत्कृष्ट माध्यम सिद्ध हुई।



Basant kumar
Roll No- 91
Session - 2025-27

कविता

Bittu Kumar
Roll No: 26
Session: 2024-26



बचपन

वह बचपन भी क्या जमाना था,
जिसमें हर पल खुशियों का खजाना था।
चाहत तो सागर को तैर जाने की भी थी,
पर नदियों का रिश्ता पुराना था।

खबर न थी कुछ खाने-पीने की,
न वक्त का ठिकाना था।
परेशानी तो रोज स्कूल जाने से थी,
पर होमवर्क नहीं बनाना था।

स्कूल से थककर आना था,
पर खेलने भी ज़रूरी जाना था।
डर तो ज़रूर घर वालों से था,
पर दोस्तों संग घूमने ज़रूर जाना था।

न कोई चिंता थी, न कोई सफर था,
बस सपनों से भरा छोटा-सा एक घर था।

सोच तो कुछ बनने की इतनी बड़ी थी,
जिसमें न कोई दिखावा था, न कोई
बहकावा था।

अगर आज के दिन की तुलना करें उस
बचपन से,
तो वह बचपन भी क्या प्यारा था,
वह बचपन भी क्या न्यारा था।

वह बचपन तो सच में हमारा था,
वह बचपन तो सच में प्यारा था॥

वक्त की धूप में दोस्ती की छाँव

वक्त की धूप जब तेज़ हुई,
तो दोस्ती की असली छाँव नज़र आई।

कुछ दोस्त थे, जो हालात बदलते ही
शहर, कमरा और अपना पता तक बदल
गए,
और बदल लिया उन्होंने खुद को भी...

लेकिन कुछ ऐसे भी थे,
जिन्होंने सब कुछ बदलते देखा,
पर खुद कभी नहीं बदले।

वो खड़े रहे हर मोड़ पर सहारा बनकर,
कभी वक्त दिया, कभी कंधा,
कभी थाम लिया हाथ चुपचाप,
तो कभी बिना कहे ही दर्द बाँट लिया।

कुछ लोग कहते रहे –
“तू कर, सब ठीक हो जाएगा,
पैसे भी आ जाएंगे...”

और जब मैंने कदम बढ़ाया,
तो वो भी साथ चल पड़े।

उन्होंने यकीन दिलाया –
“हम जीवन भर तेरे साथ खड़े रहेंगे...”

तब समझ आया...
कह देने वाले दोस्त
और हर मुश्किल में साथ निभाने वाले दोस्त
में
बहुत फर्क होता है...
हाँ,
बहुत फर्क होता है॥



SUNNY KUMAR SINGH

Roll No: 21

Session: 2025-2027

**" गुण मिले तो होवे शादी ,
अवगुण मिले तो बड़े दोस्ती। "**

यह कथन तब गलत साबित हो जाती है जब मैं बैडमिंटन कोर्ट में होता हूँ। जी हाँ मैं बात कर रहा अपने सबसे पसंदीदा खेल, मेरे तनाव मुक्ति का सहारा 'बैडमिंटन' की। एक वही समय है जब मेरे हाथों में फ़ोन नहीं होती। जहाँ मैं संविधान की अनुच्छेद 15 , 17 और 18 का बख़ूबी पालन करता हूँ।

दुनिया की सबसे तेज गति से खेली जाने वाली खेल में सबसे तेज स्मैश करने का विश्व रिकॉर्ड भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी सात्विकासाइराज रन्किरेड्डी ने 565 कि मि / घंटा का आंकड़ा छु कर बनाया। इतनी तेज गति से आनेवाली शटल पर प्रतिक्रिया देने के लिए आपके प्रतिद्वंदी का प्रतिक्रियात्मक समय भी नैनो सेकंड तक ही होती है।

यह खेल सिंगल, डबल्स और मिक्स डबल्स में होता है। इस पुरे 3 सेट के खेल में स्टिकल 30 % और 70 % मानसिक खेल का है। कोर्ट को कवर करने के लिए तेजी, फुर्तीली हरकत, जिसमें अक्सर विस्फोटक छलांग और कूद की आवश्यकता होती है। वही अगर डबल्स की बात करे तो आप और आपका पार्टनर दो शरीर और एक दिमाग बन जाते हैं। इस खेल के कई फायदे हैं। जैसे स्वास्थ्य में सुधार, शारीरिक शक्ति और स्फूर्ति का बढ़ना, वजन घटने में सहायक और सबसे महत्वपूर्ण बात मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि।

इसमें कोई दो राय नहीं कि मेरी पहचान मेरे कॉलेज में बैडमिंटन से बनी है। क्योंकि यहां मेरी पसंदीदा जगह क्लास कम कोर्ट ज्यादा है। मैं प्रिंसिपल मैम, वाईस प्रिंसिपल मैम, अपने स्पोर्ट्स सर का पार्टनर रह चुका हूँ और साथ ही सारे कॉलेज स्टाफ मेंबर्स के साथ खेल चुका हूँ, तो जाहिर सी बात है मेरी इन सबो से सम्बन्ध टीचर - स्टूडेंट कम दोस्त जैसे ज्यादा हैं।

ठण्ड के समय में मैंने लगभग 10 से 11 घंटे प्रति दिन कॉलेज में बिताए हैं और कोई भी ऐसा दिन न बिता हो जब मैंने (लेडी हिटलर से) डॉट न सुनी हो। मेरे पढ़ाई को लेकर, मेरे वजन में आई कमी को लेकर। उनका सबसे पसंदीदा उदहारण ही बैडमिंटन बन चुका है। एक का कहना है "तुम एक दिन गायब हो जाओगे खेलते-खेलते" तो वहीं दूसरी का कहना है "ये लड़का खेलने के कारण कोई एग्जाम फॉर्म नहीं भरता है"। उन्हें काफी फ़िक्र है मेरी पर फिर भी इतना सुनना तो बनता है अपने बैडमिंटन के लिए।

आप अपने लाइफ में कोई भी एक खेल चुन लो जो आपके स्वास्थ्य , आपके मानसिक स्थिति को मजबूत बना सके, ताकि आप कभी भी अपने आप को अकेले महसूस न कर सको। एक बार ऐसे किसी ने मुझसे पूछा " आप इतना बैडमिंटन क्यों खेलते हो ?" तो मैंने मुसकुरा कर जवाब दिया " देख भाई बैडमिंटन खेलने से सिर्फ शटल टूटता है, किसी का दिल नहीं।"

**I WAS LOOKING FOR LOVE , THEN REALISED THAT THIS GAME STARTS FROM –
LOVE ALL PLAY .**



Prince Kumar
Roll No: 72
Session: 2025-27

कभी कभी शांत मन

इन फूलों की वादियों में,
इनकी महक में मुग्ध हो जाता है।
पतझड़ के रुखेपन में,
गर्म हवाओं से झूठ हो जाता है।

आब-ए-रहमत में मन झूम जाता है,
सर्दी के कोहरे में यह खुद को भूल जाता है,
कभी - कभी शांत मन,
एकदम से व्याकुल हो जाता है॥

एक शख्स जिससे कभी मिला नहीं,
उसकी तलाश में कहीं खो जाता है,
एक खुशबू जिससे कभी रुबरु ना हुआ,
मेरा मन उस खुशबू की आबरु बन जाता है।

एक अश्रुत सी आवाज़ जो कभी सुनी नहीं,
उस की धुन में मन मस्त - मगन हो जाता है ।
कभी-कभी शांत मन,
एकदम से बेचैन हो जाता है ।

वैसे तो मैं, कोई फिरदौसी नहीं,
मेरा मन कोई फिरदौस नहीं..!2
मगर, मेरा मन जन्नत से कम भी नहीं॥
यहां शाम का ढलता सूरज,
मेरे घर लौटने तक मेरी राह देखता है।

सुबह की मेरी नींद न खराब हो,
इसका भी बखूब ख्याल रखता है,..!
यह चांद अपने सितारों से कितना दूर है,
मेरे मन के आसमां में भी एक चांद है,
जिसका सितारों संग समागम लगा रहता है..॥

कभी - कभी शांत मन यूं ही तसव्वुर में खोया रहता है॥
वैसे तो यहां कोई मेरा अपना नहीं,
और , मैं भी यहां किसी का परवाना नहीं।
मगर, कुछ बा-अदब किरदारों से प्रेम हो ही जाता है..!

कभी - कभी अज़नबी राहों पर रवाना हो जाता है,
अनायास ही वहां किसी का दीवाना हो जाता है ।
कभी - कभी शांत मन,
एकदम से बेचैन हो जाता है..॥2

एक तलाश जो अब तक खत्म नहीं हुई,
उस एक तलाश की एक अनसुनी दास्तां है,..!
एक सवाल जो अब तक हल नहीं हो पाया,
उस सवाल का एक मगलूब शख्स पैग़ाम है,..!

एक शख्सियत जो अब तक समझ न आया,..!2
वो उलझा हुआ किरदार मेरे खुद का है..!
जानें मैं खुद से कब मिलूंगा..?!
शायद एक दिन जरूर,या फिर कभी नहीं..!!

जानें मैं खुद को कब परखूंगा..?
शायद उस रोज़ जब सबकी दुआएं मुकम्मल होंगी,
या शायद मेरा ये सवाल उलझा ही रहेगा,..!!
गर मिल गया मैं मुझको,
मेरी तलाश भी खत्म होगी उस रोज़ ।

जो किरदार तब तक भटक रहा था,
वो शख्स बखूब उभरेगा उस रोज़..!!
और फिर शांत मन बेचैन न होगा ।
शायद शांत मन शांत ही रहेगा उस रोज़..

या शायद उस रोज़ से,..
कभी शांत मन बेचैन नहीं होगा..!





Rishu Kumari
Roll No: 85
Session: 2025-
27

कविता

दादी माँ की मुस्कुराहट

(एक स्नेहमयी स्मृति)

प्रेम और कृतज्ञता के साथ

दादी माँ की आकर्षक प्यारी-सी मुस्कुराहट में, छिपा था मेरा सारा अमूल्य, कोमल-सा बचपन। मिलता था नीरनिधि-सा अथाह गहन प्यार, चाहे हो जाए, मुझसे अक्षम्य गलतियां हजार।

जब माँ जाती मुझसे दूर, पूरी करने को अपने कर्तव्य रोते बिलखाते तब मेरे निराश चित्त को। मुझको बैठा वो अपने करुणासागर- सा गोद में, अनंत खुशियों से भर देती मेरे अंतर्मन को।

अपनी कठिनाइयों को भुलकर, संग मेरे खेल-कूदकर मेरे चंचल चितवन को बहलाया करती। बाल्यावस्था की हर वो छोटी ख्वाहिशों को, मेरी हर आदंभ अभिलाषा को पूरी करती।

संग उनके जो समय बीता, वो अबोध-सा लड़कपन, किलकारी खेल-कूद, कोलाहल भरा वो आँगन।

निश्चल मन की चितवन सा झुर्रियों वाला चेहरा उनका समय की कहानी कहता था। पर उस मुखमंडल की हर लकीर में बस सुकून ही सुकून रहता था।

खड़ा काल था कर्म प्रशस्त वो अरुणोदय जब उनकी श्वास छूट रही थी, मन को कौंधते हुए नयन सिंधु से अश्रु की लहरें फुट रही थी।

करती हुई अवनी को नमन, रवि संग बैकुंठ को चली गई, देकर जग का समस्त दुःख, मेरे हृदय में भर गई।

ममतामयी दादी माँ के अनंत स्नेहिक गोद में बैठकर, लगता था संपूर्ण करुणामयि-सा जग अपना है। उनकी मनमोहक मुस्कुराहट से ही मेरा बचपन मोहक रसिक जीवंत-सा सपना है।

सफर जारी है...

Rity Kumari

Roll NO: 52
Session: 2024-26



जब जनवरी आयेगा तो चलो शून्य से शुरुआत नहीं करते है उसी सफर को आगे बढ़ाते है पिछले साल कुछ मुकाम छोटे थे कुछ दिन चुनौतियों से भरे थे फिर से नयी हर कोशिश आजमाते है कहीं ना कहीं ये हाथ पाँव थकता है। इस मेहनत की आँच से दिमाग हार माना नहीं है। जानता है अब कोई बड़ा प्लान नहीं अब कोई नई शुरुआत नहीं अगला साल हर दिन बेहतर बनते है क्योंकि सफर नतीजे से नहीं लगातार कदम चलने से बनते हैं।



Pallav Shivam

Roll No: 69

Session: 2025-27

संदीप हर रोज़ की तरह शाम को घर लौटने के लिए ऑटो पर बैठा। बाकी सवारियाँ लेने के बाद ऑटो चल पड़ी। संदीप ऑटो ड्राइवर के बगल में ही बैठा था। ऑटो जब गर्दनीबाग पहुँचा तो जाम लग गया।

संदीप ने जीभ चटकाते हुए कहा —

“अरे यार, फिर जाम! सुबह जाते समय भी था, इसलिए देर हो गई। अब लौटते समय भी है, तो घर भी देर से ही पहुँचेंगे।”

तब ऑटो ड्राइवर ने कहा —

“चिंता की बात नहीं है। जाम गर्दनीबाग से अनिसाबाद तक ही है। हर 7 मिनट में खुल रहा है। ना हो तो घड़ी से मिला कर देख लीजिए, 3 बार में गोलंबर पार कर लेंगे।”

संदीप ने कुछ नहीं कहा, पर घड़ी पर ध्यान देने लगा। बात सच निकली। हर 5-7 मिनट पर जाम खुलता और ऑटो ड्राइवर आड़े-तिरछे रास्तों से, गाड़ियों के बीच और सड़क के किनारे से गाड़ी निकालते हुए 23 मिनट में गोलंबर पार करा ले गया। इस बार संदीप ने बात छोड़ी —

“क्या भैया, एकदम सही अंदाज़ा लगाया! 23 मिनट में गोलंबर पार। बड़ा अनुभव है आपका, सालों से ऑटो चला रहे हैं क्या?”

ऑटोवाला हल्की मुस्कान के साथ बोला —

“ऐसे तो 8 साल हो गया, लेकिन पिछले 6 साल से फुल टाइम चला रहे हैं।”

संदीप ने पूछा — “मतलब?”

ऑटोवाले ने बताया कि वह पहले बैंक में ठेके पर काम करते थे, लेकिन नौकरी छोड़नी पड़ी। यह बात संदीप के लिए नई नहीं थी। उसने पहले भी कई ऐसे उदाहरण सुने थे जहाँ बैंकों में सहयोग कार्य के लिए ठेके पर लोग रखे जाते थे।

संदीप ने पूछा — “तो नौकरी छोड़कर ऑटो चलाना शुरू कर दिए?”

ऑटोवाले ने कहना शुरू किया —

“नहीं भैया, 2 साल नौकरी के साथ ऑटो चलाए। यह ऑटो भी अपने बैंक से लोन लेकर खरीदे थे। तीन साल से काम कर रहे थे। सबसे अच्छी पहचान हो गई थी, खासकर मैनेजर सर से। हालांकि उनका ट्रांसफर हो गया। नए मैनेजर भी ठीक थे। लेकिन चार आदमी रहेंगे तो चार बातें होंगी ही। हम सुबह ऑटो निकालते थे, तो कभी-कभी बैंक पहुँचने में 10-15 मिनट की देर हो जाती थी। एक दिन रिज़र्व में दीघा चले गए थे, लौटने में देर हो गई। उस दिन 11 बजे बैंक पहुँचे। अंदर गए तो मैनेजर सर सबके सामने डाँटने लगे। खराब इस बात का नहीं लगा कि सर डाँट रहे थे — गलती तो हमारी थी। लेकिन सारे कर्मचारी और बैंक में आए लोग देखने लगे, यह बहुत बुरा लगा।

उसी में उन्होंने कह दिया — ‘आने की जरूरत नहीं, जाकर ऑटो चलाओ। तुम्हारे जैसे बहुत मिलेंगे।’”

ऑटोवाले ने आगे कहा — “हम भी निकल गए। दोपहर में कैशियर सर का फोन आया —

‘चित्रंजन, आज ठीक नहीं हुआ। तुम नहीं थे, फाइल नहीं मिल रही थी, इसलिए मैनेजर सर भड़क गए। नौकरी मत छोड़ना, पुराने कर्मचारी हो।’

लेकिन बाद में हमने खुद सोचा कि दो नाव पर सवारी करना ठीक नहीं। ऑटो चलाने में गुज़ारा हो ही जाएगा, तो यही करेंगे।”

ऑटोवाला थोड़ा चुप हुआ तो संदीप बोला — “जाने दीजिए, जो होता है अच्छे के लिए होता है। काहे किसी के नीचे काम करना?”

ऑटोवाले ने हँसते हुए कहा — “जानते हैं, 15-20 दिन बाद मैनेजर सर का फोन आया। हम तो अचकचा गए कि ये क्यों फोन कर रहे हैं! हमने प्रणाम किया। वो हालचाल पूछने लगे, फिर बोले — ‘चित्रंजन, उस दिन सबके सामने डाँट दिए, बाद में बहुत बुरा लगा। गुस्से में निकल गया। मिश्रा जी ने फोन किया था न?’

हम बोले — ‘जी सर।’ फिर वो दोबारा बैंक आने के लिए कहने लगे।” तभी संदीप ने थोड़ा भावुक होकर कहा —

“छोड़िए, बड़े आए नौकरी देने वाले! अब अपनी नौकरी रखिए।

अब तो आप खुद मालिक हैं, आज़ाद हैं। ये लोग काम करने वालों को कुछ भी बोल देते हैं और बाद में कह देते हैं कि गुस्से में निकल गया।”

ऑटोवाले ने सहज भाव से मुस्कुराते हुए कहा —

“ना-ना, ऐसा क्यों कहना! बड़े आदमी हैं, मैनेजर हैं, और आगे बढ़ेंगे। हम क्या हैं — आज ऑटोवाले हैं, आगे भी रहेंगे। वो अफसर लेवल के आदमी हैं। ‘काहे किसी के दो घड़ी में कही गई चार बात को ज़िंदगी भर का घाव बना लें?’ काम नहीं हुआ था, इसलिए गुस्से में बोल दिए। हम लोग भी तो कभी-कभी गुस्से में बोल देते हैं। आज भी उनका नंबर सेव है। उनका ट्रांसफर हो गया है, लेकिन परिवार यहीं रहता है। कहीं आना-जाना होता है तो फोन कर लेते हैं। हाल-समाचार पूछ लेते हैं। अब क्या चाहिए — एक जुड़ाव बना हुआ है, उसी को कायम रखना है।

मेरे टेढ़ा बोलने से उनका क्या नुकसान होता? उल्टा मैं ही उनकी नज़रों से गिर जाता।”

बातों-बातों में रास्ता कट गया। संदीप अपने गंतव्य तक पहुँच चुका था। उसने ऑटोवाले को पैसे दिए। दोनों मुस्कुराते हुए विदा हुए। अब जब संदीप अकेला था, तो वह ऑटोवाले की बातों को सोचने लगा। उसे बहुत अच्छा लगा कि कैसे चित्रंजन ऑटोवाले ने बातों ही बातों में उसे जीवन की कई बड़ी सीख दे दी।

कहानी

सुकून का राज



Dharmendra Kumar Sharma

Roll No: 98

Session: 2025-27

एक बार की बात है जब हनुमान जी लंका विजय के बाद अयोध्या आये। यहाँ सुख, सुविधाएँ एवं वैभव था जो किसी साधारण व्यक्ति के लिए स्वर्ग से कम नहीं था, लेकिन लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने पर हनुमान जी को सुकून भरी नींद नहीं आ रहा था।

एक रात इसी सोच में हनुमान जी महल के बाहर निकल गए जहाँ बाग-बगीचे में सुंदर-सुंदर फूल थे जो रात की चाँदनी में बहुत खूबसूरत लग रहा था। वहीं बगीचे से महल को देखने पर चाँदनी रात में देखने से चाँद की तरह चमक रहे थे। कुछ देर बगीचे में टहलने के बाद हनुमान जी आगे महल से दूर निकल गए। रास्ते में सोचते-सोचते वह एक श्मशान जा पहुँचे। जहाँ चिताएँ जल रही थीं और कोने में बैठकर देखने लगे और फिर से अपने गहरे सोच में डूब गए।

उन्हें किष्किंधा में सुग्रीव के साथ बिताए वह पल याद आया जब वे पहाड़ों में एक साथ रहते थे तो सुग्रीव ने कहा था कि दिन भर का संघर्ष ही आपको रात में सुकून भरी नींद देता है। लंका विजय के समय बहुत संघर्ष के कारण तथा किष्किंधा में जंगलों एवं पहाड़ों पर रहने के कारण उन्हें बहुत सुकून की अनुभूति होता है। लेकिन जब से वे अयोध्या आये, उनका संघर्ष खत्म हो गया, जीवन आसान हो गया और सुकून भरा नींद कम होते चले गया।

ये सब बातें सोचते-सोचते उन्हें श्मशान में ही नींद आ गया और जब वे जागे तो उन्हें आज बहुत दिन बाद सुकून सा महसूस हुआ। पूरा शरीर हल्का महसूस कर रहा था और चेहरे का भाव बहुत शांत हो गया था, फिर धीरे-धीरे चलते-फिरते अयोध्या वापिस आ गये। अब उन्हें सुकून का राज पता हो गया।

उलझे सपने



Vandna Kumari

Roll no - 81

Session - 2024-26

सपनों का बोझ कंधों पर उठाए चले थे हम,
एक नई पहचान बनाने निकले थे हम।
किताबों की दुनिया में खुद को खोया था,
भविष्य के लिए हर लम्हा संजोया था।

सोचा था—मंज़िल अब दूर नहीं होगी,
मेहनत की राह कभी मजबूर नहीं होगी।
पर किस्मत ने ऐसे मोड़ दिखा दिए,
हर कदम पे नए नियम ला दिए।

कभी टीआरई, कभी बीपीएससी का नाम,
हर बार बदलता रहा ये इम्तिहान।
कभी कहा—“मौका आसान होगा”,
फिर बोला—“अब मेंस भी देना होगा।”

समझ न पाए ये खेल कैसा है,
हर बार बदलता ये मेला कैसा है।
दिन किताबों में, रातें चिंता में बीती,
हर कोशिश जैसे अधूरी ही रीती।

माँ की आँखों में उम्मीदें झलकती हैं,
पिता की खामोशी भी बहुत कुछ कहती है।
“बस थोड़ा और सह लो”, वो कहते हैं,
पर ये “थोड़ा” कब खत्म होगा, हम ही सहते हैं।

दोस्त भी अब राह बदलने लगे हैं,
कुछ सपनों से धीरे-धीरे हटने लगे हैं।
पर हम अभी भी उसी जगह खड़े हैं,
जहाँ सवाल और उम्मीदें आमने-सामने पड़े हैं।

सरकारें बदलतीं, फैसले नए आते,
पर हमारे सवाल वहीं रह जाते।
कुर्सियाँ बदलतीं, चेहरे बदल जाते हैं,
पर छात्रों के हाल नहीं बदल पाते हैं।

फिर भी दिल में एक जिद जिंदा है,
हार न मानने की एक जंग जिंदा है।
गिरेंगे, संभलेंगे, फिर चल पड़ेंगे,
अपने सपनों को सच कर देंगे।

क्योंकि अंधेरे चाहे जितने गहरे हों,
एक दिन उजाले भी ठहरे हों।
और उस दिन हमारी जीत होगी,
सपनों की दुनिया फिर से करीब होगी।

साहस



Aarti Sinha

Roll : 01

Session: 2024-26

रुकना नहीं, झुकना **नहीं**,
किसी दाँव में फँसना **नहीं**।
छोड़े कोई, टूटना **नहीं**,
कि किसी से तू **डरना नहीं**।।

तू जो इतना सह रहा,
किसी से भी न कह रहा।
थम जाएगा जो हो रहा,
तू क्यों है ऐसे जी रहा?

पा जाएगा, जो खो रहा,
कर कायाकल्प, सिद्धांत
अचल,
तू निरंतर अपने पथ पर चल।।
कहीं डिग न जाए तेरा पटल,

कर यह तू संकल्प अटल।
होता नहीं समय एक-सा,
होता है अंत सब **नेक-सा**।।
रख हौसला, वह दिन भी
आएगा,
जब इस जहाँ में तू छा जाएगा।।

Happy Mind, Healthy Life The Importance of Mental Wellness



Anshu Kumari

Roll No: 16

Session: 2025-27

In today's fast-moving and competitive world, mental wellness has become more important than ever. Mental wellness means having a healthy and balanced state of mind where a person can manage emotions, handle stress, think clearly, and maintain positive relationships with others. A healthy mind helps us face life's challenges with confidence and optimism.

For students and young people, mental wellness plays a very important role. Academic pressure, examinations, social expectations, and future goals can sometimes create stress and anxiety. Therefore, it is essential to take care of our mental health just as we take care of our physical health.

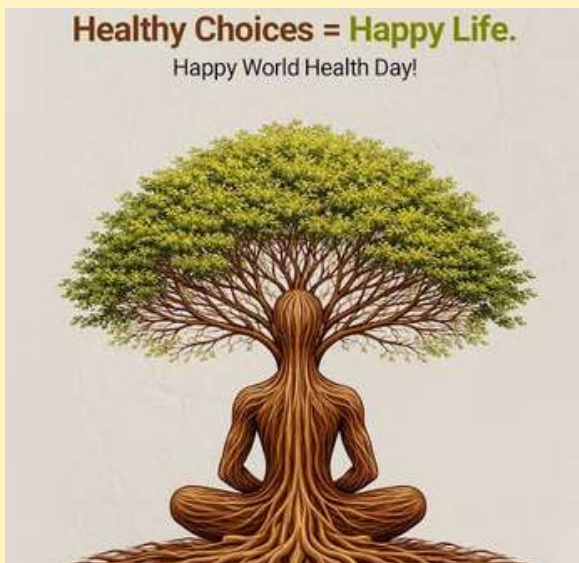
There are many simple ways to maintain mental wellness. Practicing yoga and meditation can help calm the mind and improve concentration. Getting enough sleep, eating a balanced diet, and exercising regularly also contribute to better mental health. In addition, spending quality time with family and friends and sharing our thoughts and feelings can reduce stress and provide emotional relief.

Another important factor in mental wellness is positive thinking. When we develop a positive attitude, we become able to overcome difficulties and stay motivated in our daily lives. Reading inspirational books, setting small goals, and celebrating achievements can also boost confidence and happiness.

Mental wellness reminds us that a strong mind creates a strong life. When we take care of our mental health, we become more productive, creative, and satisfied with our lives.

Remember:

"A healthy mind is the foundation of a happy and successful life."



Story

Safety Vs Freedom: The Dual Struggle of Indian Women



Ankita Kumari

Roll No.: 69

Session: 2024–2026

Ananya, a young woman, hesitates before booking a cab. Her office presentation was flawless, and her confidence was applauded. Yet, at this moment, her professional success dissolves into a familiar anxiety. Will the driver take the correct route? Should she call someone and stay on the line? Should she share her live location?

This story depicts the existence of her freedom, but it is always negotiated with fear.

So, the question arises: Is women empowerment possible without ensuring women safety?

The answer is certainly “No.” Women empowerment and women safety are two sides of the same coin. Both are necessary for the holistic development of women.

Now another question arises: How can we ensure it?

The answer is simple yet effective – through community participation. Society must ensure the safety of women as its moral duty.

Along with this, we must provide self-defense training to women so that they can protect themselves during such situations.

Moreover, to protect women, the government must ensure that strict laws are being framed against such offences and that their effective implementation is guaranteed.

As it is rightly said by Swami Vivekananda:

“There is no chance for the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is not possible for a bird to fly on one wing.”

These lines depict that women’s safety is not an option; rather, it is a necessity for the welfare of society and for achieving the goals of Viksit Bharat @2047.

Now coming back to Ananya – she has reached home safely, with a smile on her face and hope in her heart. She says to herself:

“One day I will walk without rehearsed fear,
Without keys clenched between my fingers,
The city will no longer test my courage daily,
And freedom will arrive without conditions.”





Neeraj Kumar

Roll No: 44

Session: 2025-27

वर्तमान में जिस तेजी से दुनिया तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ रही है, लोगों के अंदर सामाजिक भावनाएँ उसी तेजी से कम होती जा रही हैं। आज के इस तकनीकी युग में लोग “सामाजिकरण” नाम के शब्द और उसके महत्व को भूलते जा रहे हैं।

यदि हम पुराने भारतीय समाज और वर्तमान समाज का गहन अवलोकन करें, तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि तब का समाज और आज के समाज में कितना बड़ा अंतर आ चुका है। पहले लोग जिस बंधुत्व और एकता की भावना के साथ रहते थे, आज वह भावना कहीं खोती हुई प्रतीत होती है।

आज इस तेजी से बदलती दुनिया में लोगों के पास केवल अपने फायदे के बारे में सोचने के अलावा, समाज की इन घटती सामाजिक भावनाओं पर विचार करने तक का समय नहीं है। लोग समाज के विकास को नजरअंदाज करते हुए केवल अपने व्यक्तिगत विकास की ओर भाग रहे हैं, जो अत्यंत विचारणीय विषय है।

सवाल उठता है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? क्यों लोग एक-दूसरे के बारे में नहीं सोचते? क्यों लोग केवल अपने स्वार्थ के पीछे अंधाधुंध भाग रहे हैं? पहले जो आपसी समरसता समाज में थी, वह कहाँ गुम हो रही है?

यदि हम इसके कारणों पर ध्यान दें, तो पाएंगे कि इसका एक प्रमुख कारण सोशल मीडिया का बढ़ता दुरुपयोग है। आज ज्यादातर लोग सोशल मीडिया का गलत तरीके से उपयोग कर रहे हैं। उनके पास समय नहीं है कि वे एक-दूसरे से वास्तविक रूप में मिलें, एक-दूसरे की खुशियों में शामिल हों और दुखों में सहारा बनें।

वे धीरे-धीरे अपने ही डिजिटल संसार में सीमित होते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि सोशल मीडिया पूरी तरह बुरा है, लेकिन इसका अत्यधिक और गलत उपयोग लोगों को वास्तविक जीवन से दूर कर रहा है और उन्हें अकेलेपन की ओर ले जा रहा है।

मैं यह नहीं कहता कि सोशल मीडिया बुरा है, बल्कि मैं केवल इसके समाज पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव को बताना चाहता हूँ, ताकि लोग इसके दुरुपयोग से बचें और इसके सही उपयोग पर ध्यान दें तथा सामाजिकता की भावना को पुनः विकसित करें।

वर्तमान परिदृश्य में सामाजिक भावनाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है। तकनीकी विकास के साथ-साथ इसके सही उपयोग को बढ़ावा देना भी जरूरी है।

अतः मेरी आपसे एक छोटी सी अपील है कि आप अपने रिश्तों और समाज के महत्व को समझें और इसे सुंदर एवं मजबूत बनाए रखें।





Pragya Kumari
Roll No: 39
Session: 2025-27

बात पिछले होली की है। जीवा एक चंचल और खुशमिजाज बच्ची थी। हर साल की तरह इस साल भी उसने पूरे दिन अपने दोस्तों के साथ होली खेली।

रंगों से सराबोर होकर जब शाम हुई, तो वह अपने दोस्तों की टोली के साथ घर-घर जाकर बड़ों और पड़ोसियों को गुलाल लगाने निकल पड़ी।

जहाँ भी वे जाते, लोग उन्हें बड़े प्यार से बैठने के लिए कहते और खाने-पीने को पूछते। कोई उन्हें मेवे देता, तो कोई चॉकलेट। सभी बच्चे उन चीजों को इकट्ठा कर लेते और बाद में मिल-जुलकर खाते। इस तरह जीवा की होली हर साल की तरह इस बार भी बहुत खुशी और उत्साह से बीत गई। लेकिन होली के कुछ दिनों बाद एक दुखद खबर आई। पड़ोस में रहने वाली वह आंटी, जो हर साल बच्चों को चॉकलेट देती थीं, काफी समय से बीमार चल रही थीं। उनका इलाज भी चल रहा था, लेकिन इस बार वे बच नहीं सकीं और उनकी मृत्यु हो गई।

यह बात सुनकर जीवा बहुत उदास हो गई। उसे बार-बार आंटी की याद आने लगी। वह सोचने लगी कि जो आंटी कुछ दिन पहले तक हँसते-मुस्कुराते बच्चों को चॉकलेट दे रही थीं, वे अचानक कैसे इस दुनिया से चली गईं।

एक दिन उसने अपनी माँ से पूछा—

“माँ, जब हर इंसान को एक न एक दिन मरना ही होता है, तो फिर लोग जीवन को लेकर इतना परेशान क्यों रहते हैं?”

माँ ने प्यार से जीवा को समझाया—

“बेटी, जीवन भगवान का दिया हुआ अनमोल उपहार है। इसलिए हर इंसान चाहता है कि वह इसे खुशी से जिए, अपने सपने पूरे करे और अपने अपनों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताए। मृत्यु जीवन का सच है, लेकिन इसी सच के कारण हमें हर पल की कद्र करनी चाहिए।”

माँ की बात सुनकर जीवा कुछ देर तक चुप रही। फिर उसने सोचा कि सच में, जीवन छोटा ही सही, लेकिन इसे प्यार, खुशी और अच्छे कामों से भर देना ही सबसे बड़ी बात है।

किसी ने क्या खूब कहा है—

**“आओ खुद को ढूँढ लें इन खोई हुई राहों में,
एक दिन तो सोना ही है मौत की बाहों में।”**





Bittu Kumar

Roll No: 26

Session: 2024-26

मध्य प्रदेश की एक शांत शाम...

आसमान में बादल थे। नर्मदा नदी पर बने बरगी डैम (Bargi Dam) में 30 अप्रैल 2026 की शाम को एक बड़ा हादसा हुआ।

रीना... और उसकी गोद में उसका छोटा सा बेटा आरुष।

आरुष माँ के सीने से लगा हुआ था, जैसे दुनिया की हर सुरक्षा उसे वहीं मिलती हो।

रीना मुस्कुरा रही थी... उसे क्या पता था कि कुछ ही पलों में सब बदल जाएगा।

अचानक... संतुलन बिगड़ा, और देखते ही देखते चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई... पानी अंदर भरने लगा... और मौत धीरे-धीरे करीब आने लगी।

रीना ने बिना एक पल गंवाए, अपने बेटे को सीने से कसकर पकड़ लिया।
वो जानती थी... अब वक्त बहुत कम है।

उसने पूरी ताकत से आरुष को ऊपर उठा दिया, जैसे उसे जिंदगी की आखिरी ऊँचाई दे रही हो—

“डूबती साँसों में भी दुआएँ चलती रहीं,
माँ थी वो... मौत से भी लड़ती रही...”

पानी बढ़ता गया...

रीना की साँसें कमजोर होती गईं...
लेकिन उसकी पकड़ ढीली नहीं पड़ी।

उसकी आँखों में डर नहीं था... बस एक ही जिद थी—

“मेरा बच्चा बच जाए...”

लेकिन किस्मत शायद आज बहुत कठोर थी।

लोग जब तक मदद के लिए पहुँचे...
तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

रीना अब शांत थी...

और उसकी बाहों में आरुष... भी खामोश।

“माँ ने तो हर कोशिश में जान लगा दी थी,
पर किस्मत ने ही आज हार दिखा दी थी...”

हर किसी की आँखें नम थीं...

उस दिन ऐसा लगा जैसे ईश्वर भी रो पड़ा हो,
सोचकर कि उसने यह किस्मत इतनी कठोर क्यों लिखी।

क्योंकि यह सिर्फ एक हादसा नहीं था...

यह ममता की हार नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी जीत थी।

रीना आखिरी पल तक माँ बनी रही...

उसने अपने बच्चे को अकेला नहीं छोड़ा।

“माँ का दिल कभी खुद के लिए नहीं धड़कता,
वो जीती भी बच्चे के लिए है... और मरती भी उसी के लिए...”

उस दिन लोगों ने एक बात समझी—

माँ सिर्फ एक रिश्ता नहीं होती...
वो खुद में पूरी दुनिया होती है।

और कभी-कभी...

वो दुनिया अपने ही साथ डूब जाती है।

“ममता कभी हारती नहीं...

बस कभी-कभी, किस्मत उससे जीत जाती है...



Saurav Singh
Roll NO: 31
Session: 2025-
27

कविता

Smriti Kumari
Roll No: 25
Session: 2025-27



“पिता और मैं”

मेरे हर ख्वाब की पहली गवाही तुम ही तो थे,
मेरे डर की चुपचाप निगरानी तुम ही तो थे।
मैं गिरा, टूटा, भटका — तुमने कुछ कहा नहीं,
मेरे हर मौन सवाल की कहानी तुम ही तो थे।

मैं जब रोया छुपकर, तो तुमने आवाज़ नहीं की,
मेरी हर हार पर कोई नाराज़ नहीं की।
तुमने बस मेरी पीठ पर हाथ रखकर इतना कहा—
“थक जाना बुरा नहीं, रुक जाना ठीक नहीं।”

तुम्हारे हाथों की सख्ती में भी स्नेह बहता था,
डॉट के हर शब्द में भविष्य रहता था।
मैं जीत गया तो तुम मुस्कुराकर चुप रह गए,
मैं हार गया तो सारा हौसला तुम्हारा था।

तुम्हारे जूतों की धूल में मेरी उड़ान छुपी थी,
तुम्हारी थकी आँखों में मेरी पहचान छुपी थी।
मैं स्कूल से घर लौटा, हर दिन एक सपना लेकर,
और तुम हर रोज उस सपने पर चुपचाप यकीन करते थे।

तुमने अपने सपनों को मेरी जेब में डाल दिया,
खुद के हिस्से का उजाला मेरी राह में उछाल दिया।
आज जो खड़ा हूँ थोड़ा सा दुनिया के सामने,
वो तुम्हारी कोशिशों ने मुझे संभाल दिया।

आज लोग कहते हैं — “तुम बहुत मजबूत हो”,
काश उन्हें पता होता, मेरी मजबूती के पीछे एक पिता का
हाथ था
जिसने मुझे कभी कमजोर नहीं पड़ने दिया।

अगर कभी ऊपर से देख पाओ मुझे,
तो बस इतना जान लेना —
मैं आज जब भी डरता हूँ, तो सबसे पहले आपको ही याद
करता हूँ।

अब जब मैं समझदार कहलाने लगा हूँ,
तो मुझे एहसास हुआ कि सबसे गहरी दोस्ती मैंने आपके
साथ ही निभाई थी।

एक साल की तलवार

मेरी ज़िंदगी में सब कुछ ठीक ही था,
पर हर मोड़ पर एक तुलना खड़ी थी।

मेरे अपने होने की कोई पहचान नहीं,
बस किसी और से मेरी कीमत जुड़ी थी।

कभी मेरे हुनर को देखा ही नहीं गया,
न मेरे सपनों की आवाज़ सुनी गई।

थोड़े कम अंक क्या आ गए,
जैसे सारी मेहनत अधूरी मानी गई।

हर समय गले पर एक तलवार लटकती रही—
“यह आखिरी साल है, कुछ कर दिखाओ।”

पर कोई यह समझ न पाया कभी,
कि एक साल में तो बस रास्ता ही बन पाता है।

पाठ्यक्रम पूरा होता है मुश्किल से,
ख्वाबों को समय चाहिए खेलने का।

पर हर बार फिर वही डर,
एक और साल फिर से सँभलने का।

अब स्वयं से एक प्रश्न पूछता हूँ,
कहीं उत्तर भी स्वयं में ही छिपा है—

क्या मेरी मेहनत ही कम पड़ जाती है,
या किस्मत ने ही साथ नहीं निभाया है?

शिक्षक की भूमिका



**Name -Pragya
Kumari**

Session -2025-27

Roll no-39

एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। एक का नाम प्रतीक था और दूसरे का नाम निश्चय। दोनों साथ-साथ विद्यालय जाते और साथ में खेलते-कूदते भी थे और मन लगाकर पढ़ाई भी करते थे। प्रतीक और निश्चय दोनों ही अच्छे विद्यार्थी थे। उन्हें सभी शिक्षक बहुत पसंद करते थे। एक शिक्षक उन दोनों के प्रिय शिक्षक थे।

प्रतीक थोड़ा शांत और शर्मीले स्वभाव का था, वहीं निश्चय बहुत मिलनसार था। प्रतीक का सिर्फ निश्चय ही एक दोस्त था, जबकि निश्चय के मिलनसार स्वभाव के कारण विद्यालय में उसके कई अन्य दोस्त बन गए, इसलिए वह अब प्रतीक के साथ कम समय बिताता है। इससे प्रतीक को बहुत बुरा लगता है और वह खुद को अकेला महसूस करने लगता है। धीरे-धीरे प्रतीक के मन में यह भावना उत्पन्न होने लगी कि कोई उसे पसंद नहीं करता, जबकि निश्चय सबका प्रिय है। वहीं निश्चय इन सब बातों से अनजान अपने अन्य दोस्तों के साथ रहता है। लेकिन उनके प्रिय शिक्षक इस बात पर ध्यान देते हैं कि प्रतीक अब अकेला रहने लगा है। एक दिन वे दोनों को बुलाते हैं और प्यार से समझाते हैं। वे प्रतीक से कहते हैं कि दोस्ती हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उसे अपने दोस्तों के साथ रहना चाहिए, खेलना-कूदना चाहिए और अपने बचपन को मीठी यादों से भरना चाहिए।

फिर वे निश्चय को समझाते हैं कि नए दोस्तों के साथ-साथ हमें अपने पुराने दोस्तों को भी नहीं भूलना चाहिए और उनकी भावनाओं की कद्र करनी चाहिए। जब भी आपका दोस्त उदास हो, तो उसका साथ देना चाहिए। फिर वे उन्हें अपने बचपन के दोस्तों के किस्से सुनाते हैं कि कैसे वे बचपन में मस्ती किया करते थे। कभी-कभी उनमें झगड़े भी होते थे, लेकिन फिर वे साथ हो जाते थे।

आज भी वे दोस्त उनकी किसी भी मुसीबत में साथ देते हैं और उनका तनाव कम करते हैं।

दोनों उनकी बात को समझते हैं और फिर से एक-दूसरे के अच्छे दोस्त बन जाते हैं। निश्चय, प्रतीक के स्वभाव को समझने का प्रयास करता है और उसे अपने अन्य दोस्तों से मिलाता है। धीरे-धीरे प्रतीक भी सभी से मिलना और बात करना शुरू करता है और अब उसके भी दोस्त बनने लगते हैं। इस प्रकार उनकी दोस्ती और भी गहरी हो जाती है, जिसे वे बड़े होने के बाद भी निभाते हैं।



कफ़न

नहीं मिलता हर किसी को कफ़न वसन का,
खुशनसीब हैं वो लोग जिनको मिलता है कफ़न रसम
का..॥

कौन देता होगा उन्हें कंधे,
जिनके रहने का भी कोई ठिकाना नहीं..?
कौन देता होगा उन्हें मुखाग्नि,
किनसे नसीब होती होगी उन्हें मुट्टी भर धूल,
जिनका कहने को यहां कोई अपना नहीं..?

जिनके अपने हैं, वो तो उनके अपने हैं..॥
मगर उनका क्या जिन्होंने पूरी ज़िंदगी गुजारी अकेले
है..??
जिनके पास देने को चार कंधे तक नहीं हैं..
उनके कफ़न को 4 पैसे दे भी तो कौन,?
जिन्होंने पूरी ज़िंदगी जो कमाया,
वो सब गंवा दिया होने से पहले ही मौन॥

नदियों, सड़कों, जंगलों, पहाड़ों और जानें किन जगहों
पर,
मिली उन लावारिश लाशों का क्या..?
उनके मृत शरीर को कर्ज दे भी तो कौन..?
और कर्ज किस बात का,
मात्र दो मीटर वसन का..?
और कोई कर्ज दे भी तो क्यों..?
आखिर ये उनके हैं ही कौन..?
और फिर क्या उनकी रूह कर्ज से दबी उस कफ़न से
मुक्त हो पाएगी??
या फिर इस जहां में सदियों तक भटकेगी..?
और शायद श्मशान की सुनी सरहद पर इंसाफ की
भीख मांगेगी..!!

ना कोई रोने वाला आयेगा,
ना ही कोई आखिरी दुआ देने आयेगा,..!!
कफ़न का वो दो मीटर कर्ज शायद एक उलझा
सवाल ही रहेगा,..!!

Prince Kumar

Roll No: 72

Session: 2025-

27



जिन्हें उम्र भर दो गज़ ज़मीन भी मयस्सर न हुआ,
मौत उन्हें एक मुकम्मल सुकून का घर दे जाएगी...!!
मिट्टी की कब्र या श्मशान की आग उसके ज़िस्म को
मिटाएगी,
फ़िर रूह कोई दूसरी काया ढूंढेगी या,
फ़िर इस संसार रूपी माया से मुक्त हो जाएगी...!!

"तलबगार"

शोहरत, इबादत, इनायत, मोहब्बत, शिकायत...!
मैं इनमें से किसी का भी तलबगार नहीं हूँ॥

कुछ हसीन पल मिल जाए ज़िंदगी में,
जिन्हें मैं जी भर कर जी लूँ...॥
हाँ, मैं उन पलों का तलबगार हूँ॥

माना मुझे भीड़ में रहना पसंद नहीं,
मगर भीड़ से सजी एक महफ़िल का मैं तलबगार हूँ...॥

जीना चाहता हूँ और खूब जीना चाहता हूँ,
मगर बिना किसी उलझन के...॥

हाँ, जानता हूँ एक दिन मरना भी है,
मगर इस क्रदर नहीं कि मेरा कोई वजूद ना हो।
हाँ, मेरे मरने पर मैं अपने काफ़िले का तलबगार हूँ...॥

टूट चुका है अब हर शख्स से भरोसा,
और शायद मैं भी अंदर से...॥
मगर एक वफ़ादार शख्स के साथ का
मैं अभी भी तलबगार हूँ...॥



मेरा गिल्लू

कितना निर्मल रूप हो सकता है ईश्वर का—वह रूप मेरी आँखों में बस गया। मेरा अनमोल गिल्लू... उसकी मासूम बंद उभरी आंखें, उसके छोटे-छोटे जुड़े हाथ मानो मौन होकर भी मुझे आशीष दे रहे थे। उसके चेहरे की उजली रौनक मेरे मन को रौशन कर रही थी। उस क्षण लगा, जैसे ईश्वर ने अपने सबसे कोमल स्पर्श को एक नन्हे जीवन का रूप देकर मेरी हथेली में उतार दिया हो। वह किसी साधारण जीव सा नहीं, मेरे जीवन में आया एक पवित्र ईश्वरीय वरदान था—निष्कपट, निःस्वार्थ और आत्मा तक को प्रेम से भिगो देने वाला उसके आशीर्वाद की मुद्रा में जुड़े हाथ और चेहरे पर असीम रौनक। भला ईश्वर का रूप इससे इतर क्या होगा? नहीं जानती थी कि पंद्रह मई दो हजार छब्बीस से तेईस मई दो हजार छब्बीस तक मुझे इस रूप में प्रभु मिलेंगे।

कई महीनों से मेरे कमरे की ए.सी. से लगातार “कुतर-कुतर” की आवाज आती रहती। कभी थर्मोकॉल के छोटे टुकड़े फर्श पर बिखरे मिलते, तो कभी प्लास्टिक की कतरनें। सफ़ाई करते समय रोज़ यही सोचती कि ये... गिलहरी है शायद जो मेरे एयर कंडीशनर (ए.सी) को खराब करने पर तुली है।

गया शहर में मार्च का महीना शुरू होते ही गर्मी की तल्खी महसूस होने लगती है। इसलिए ए.सी सर्विसिंग करवाना तो था साथ ही यह भी उम्मीद थी कि शायद उस अनचाही मेहमान—गिलहरी—का ठिकाना भी हट जाएगा। मैंने कहा कि ए.सी से कुछ आवाज आती है तो सर्विसिंग एजेंट थोड़ा घबराकर बोला -
मैडम जी सही-सही बताइए... इसमें कहीं साँप-वाँप तो नहीं रहता? कई लोगो के घर में ए.सी से साँप निकला है। मैंने कहा -

“नहीं भाई, इतनी ऊँचाई पर साँप कैसे चढ़ेगा! आस-पास गिलहरियाँ बहुत हैं, वही होंगी। रोज़ थर्मोकॉल कुतरा हुआ गिरता है।”

इसी दौरान उसने बताया कि ए.सी आउट बॉक्स के पास जो छेद किया गया है जिससे पाइप बाहर आया है, को बंद कर देना होगा, नहीं तो फिर गिलहरी घुस जाएगी। उसने कहा -

“कुछ कपड़े के टुकड़े दीजिए मैडम, तब तक ठूस देता हूँ। लेकिन बाद में इसको बंद करवा लीजिएगा।”
मैंने तुरंत कपड़े का टुकड़ा दिया और देखती रही कि गिलहरी इतनी ऊँचाई पर कैसे चढ़ती होगी। लेकिन उस समय बस यही राहत थी कि चलो गिलहरी के घुसने का रास्ता बंद हुआ, अब गंदगी से मुक्ति मिली। रोज़-रोज़ फर्श गंदा तो नहीं मिलेगा, सफ़ाई के बाद भी।

पर आज सोचती हूँ तो लगता है, हम मनुष्य इस संसार के सबसे अधिक आत्मकेन्द्रित प्राणी हैं। अन्य जीव अपने छोटे-से जीवन में भी ऋतु, आकाश, वृक्ष और अपने साथियों के साथ किसी अदृश्य आत्मीयता में बँधे रहते हैं; पर हम ऐसे भागते चले जा रहे हैं मानो ठहरना ही भूल गए हों। हमारे आस-पास न जाने कितने जीवन साँस लेते रहते हैं—मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़, स्मृतियाँ... पर हमारी व्यस्तताओं के शोर में उनकी उपस्थिति तक धुँधली पड़ जाती है। हम देखते तो सबको हैं, किन्तु भीतर कोई आत्मीयता नहीं जागती, कोई जुड़ाव नहीं जागता दिन भर हम उन्हीं कार्यों में डूबे रहते हैं जिनसे न आत्मा का कोई संबंध होता है, न प्रेम का; केवल आवश्यकता उन्हें महत्त्वपूर्ण बना देती है। और इसी आवश्यकता की निरंतर दौड़ में संवेदनाएँ जैसे धीरे-धीरे मन के किसी कोने में सुषुप्तावस्था में बैठ जाती हैं। नीरस ज़िंदगी, बेतुकी हँसी, बेबुनियाद रिश्ते और बेमतलब का दिखावा।

लेकिन चलो... सर्विसिंग के बाद ऐ.सी के पास गंदगी बंद हुई.. थोड़ी राहत भी महसूस हुई.. पर ये सुकून ज्यादा दिन न टीका। इधर कुछ दिनों से फिर से थर्मोकोल और प्लास्टिक के छोटे टुकड़े फर्श पर गिरे मिलते। पर इनकी मात्रा इतनी कम होती कि लगता कहीं से उड़कर आ गया हो। पाँच मई रविवार का दिन था। कॉलेज बंद था, इसलिए प्रातः देर तक सोती रही। जागने पर देखा, फर्श पर थर्मोकोल के कुछ छोटे-छोटे कण बिखरे पड़े हैं और कुटूर-कुटूर की आवाज आ रही है। कुटूर-कुटूर की आवाज से क्षणभर को मन में आशंका जागी—कहीं गिलहरी फिर भीतर तो नहीं आ गई? पर अगले ही पल स्वयं को समझा लिया कि शायद ऐ.सी. की दीवारों से चिपके पुराने टुकड़े होंगे, जिन्हें पंखे की हवा उड़ाकर नीचे ले आई होगी। अब गिलहरी भला अंदर कैसे आ सकती है।

उसी दिन संध्या के समय बालकनी में टहलते हुए मैंने देखा कि दीवार का वह छेद जिसे कपड़े से बंद कर दिया गया था। उसमें से कपड़े का एक सिरा बाहर झाँक रहा था। अच्छा गिलहरी लगता है कपड़े निकाल कर दुबारा घुसती है। तुरंत इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने पर जाले साफ करने वाली लंबी छड़ दिखाई दी। उसी की सहायता से मैंने उस निकले हुए कपड़े को धीरे-धीरे भीतर ठूसना आरम्भ किया, ताकि कोई रिक्त स्थान न रह जाए। पर लगातार रोज़ कुछ दिन कतरनें गिरती रहीं और मैं सोचती रही कि शायद पहले की ही कतरनें होंगी, जो हवा से उड़कर गिर रही होंगी क्योंकि अब तो गिलहरी के आने का रास्ता ही नहीं बचा।

ऐसे ही सात दिन व्यतीत हुए और अगले ही दिन रविवार था, कॉलेज बंद था, यानी देर से उठने का दिन। आँख खुली भी नहीं थी कि ऐ.सी. के अंदर तेज़ कुतरने की आवाज़ें आने लगीं। मैं हड़बड़ाकर उठ गई। यह क्या गिलहरी फिर घुस गई? तेज़ गुस्सा आया। तुरंत ऐ.सी सर्विसिंग का रजिस्ट्रेशन किया। पर रोज़ एजेंट आज-कल, आज कल करता रहा। मैं बारह मई से चौदह मई तक रोज़ कई बार सर्विसिंग एजेंट से अपॉइंटमेंटका प्रयत्न कर रही थी पर कोई आ नहीं रहा था। मुझे उस कुतुर-कुतुर की आवाज से ही बड़ा गुस्सा आता था।



उस दिन पंद्रह मई था—मेरा जन्मदिवस। मैं ऐ.सी सर्विस सेंटर कई बार कॉल कर चुकी थी कि जल्दी आकर ऐ.सी की सर्विसिंग करे क्योंकि इसके पूर्व की सर्विसिंग में बहुत खर्च आया था। पूरा पाइप गिलहरी काट चुकी थी। साथ ही थर्मोकोल के कतरन से फर्श को बार-बार साफ करने की जहमत उठानी पड़ती। चिढ़ सी होने लगी थी। मैंने दिनभर में कई प्रयास किए पर कोई आने को तैयार न था। पता नहीं क्यों गिलहरी से इतनी खीझ हो रही थी कि मैंने रात्रि के आठ बजे के लगभग उस एजेंट को कॉल किया जो पूर्व में सर्विसिंग करके गया था। मुझे थर्मोकोल की कतरन और कुटूर-कुटूर की आवाज दोनों बड़ी अप्रिय लग रही थी। ऐसा लग रहा था कि कोई जल्दी से गिलहरी को भगा दे तभी मुझे चैन मिलेगा और आने वाले रविवार को मैं चैन से सो सकूँगी। मैंने उसको कॉल किया और कहा कि - “बेटा, आज ही आकर सर्विसिंग कर दो।”

उसने मना करते हुए कहा कि- मैडम मैं कल ही आ पाऊँगा आज तो रात के साढ़े आठ बज गए हैं और मैं घर आ चुका हूँ। पर पता नहीं मुझे इतना गुस्सा था की लग रहा था कोई जल्दी से आकर गिलहरी को भगा दे। कुछ देर न नुकुर के बाद वह इस शर्त पर आने को तैयार हुआ कि मैं कंपनी को उसका नाम न बताऊँ और पर्सनली उसे पैसे दे दूँ। मैं मान गई। लगभग साढ़े आठ बजे रात को वह सर्विसिंग के लिए आया। ऐ.सी. खोलते ही उसने धीमे स्वर में कहा- “मैडम जी, कोई बर्तन दीजिए... इसमें गिलहरी के बच्चे हैं, नीचे गिर जाएँगे...”

मैं तुरंत दौड़कर डस्ट पैन ले आई। गिलहरी का घोंसला उन्हीं कपड़े से बना था जिन्हें मैंने छेद में ठूसा था। इतनी मेहनत की एक-एक रेशे को कपड़े से अलग कर एक जालीनुमा घर जैसा एक छोटा-सा घोंसला बना लिया था। उसी नरम बिछावन पर तीन गुलाबी, आँखें बंद किए, चूहे के बच्चों जैसे छोटे-छोटे गिलहरी के बच्चे पड़े थे। इससे पहले कई बार चूहों के बच्चे देखे और हटाए थे, इसलिए आरम्भ में कोई विशेष स्नेह-भाव नहीं जागा। मन में बस यही प्रश्न था कि इन्हें किसी प्रकार उनकी माँ तक कैसे पहुँचाया जाए।

जब तक सर्विंसिंग का कार्य चलता रहा, वे बच्चे बाहर डस्ट पैन में चुपचाप पड़े रहे। इस बार वह व्हाइट सीमेंट भी साथ लाया था। जेट सर्विंसिंग समाप्त होने के बाद उसने दीवार का वह छेद पूरी तरह सीमेंट से बंद कर दिया। अब वे तीनों नन्हे बच्चे मेरे पास थे। मैं उन्हें उठाकर भीतर ले आई। वे इतने छोटे थे कि लगता था मानो उसी दिन जन्मे हों। फिर भी उनकी पीठ पर बनी तीन हल्की धारियाँ उनके गिलहरी होने का परिचय दे रही थीं। अब उन छोटे बच्चों पर इतनी दया और स्नेह आ रहा था कि कैसे इनकी जान बचाऊँ।



मैंने जल्दी-जल्दी कुछ मुलायम कपड़े इकट्ठे किए और उनके लिए एक छोटा-सा बिस्तर बना दिया। फिर उन बच्चों और उनके टूटे घोंसले को सावधानी से उस पर रखकर बाहर ए.सी. के आउटबॉक्स के नीचे एक डिब्बे में इसप्रकार व्यवस्थित कर रखा और डिब्बे का मुँह खुला छोड़ा कि केवल गिलहरी ही भीतर आ सके। मुझे लगा रात को या किसी समय गिलहरी अपने बच्चे तक पहुंचने की कोशिश में आएगी तो जरूर।

रातभर वह डिब्बा बाहर रखा रहा। मन में एक ही आशा थी—शायद उनकी माँ लौट आए और अपने बच्चों को अपने साथ ले जाए। पर पूरी रात बाहर कोई हलचल नहीं हुई। रात भर बच्चों की चिंता में सो न सकी थी। सुबह चार बजे ही उठकर बच्चों को अंदर कमरे में ले आई। तीनों बच्चे थोड़ा थोड़ा रेंगने जैसी गति कर रहे थे। दिन के उजाले में उनका कोमल शरीर और पराश्रिता ने मेरे मन को द्रवित कर दिया। मैं उन्हें बचाने का जतन मनोयोग से करने लगी। किसी तरह दूध को रुई के फाहे से बारी-बारी से तीनों को चटाना शुरू किया। दिल भय और घबराहट से भरा हुआ था—इन तीनों नन्हे प्राणों को कैसे बचाऊँ? उनकी आँखें अब तक खुली न थीं। नाक और मुख के बीच का अंतर भी स्पष्ट नहीं होता था। वे केवल अपनी छोटी-सी जीभ से दूध की बूँदें चाट लेने का प्रयास कर पाते थे। अब हर क्षण यही चिंता बनी रहती—किस समय इन्हें दूध दूँ, कैसे सुरक्षित रखूँ, कैसे जीवित बचाए रखूँ।

मैंने घबराहट में जल्दी-जल्दी खोजकर पढ़ना शुरू किया कि नवजात गिलहरी के बच्चों की देखभाल कैसे की जाती है। ज्ञात हुआ कि गाय का दूध नहीं देना चाहिए, उन्हें गर्म रखना आवश्यक है, और आरम्भ में इलेक्ट्रॉल (ओ. आर. एस.) का घोल अधिक उपयोगी होता है। मैंने तुरंत अपनी एक ऊनी शॉल निकाली। बाहर पड़े कुछ पुराने स्वेटरों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उनके लिए एक नरम बिस्तर बनाया, मानो अपनी समस्त असमर्थता के बीच उन्हें थोड़ी-सी ऊष्मा दे सकूँ। तीनों गिलहरी बच्चों को सुरक्षित कर जैसे ही शयनकक्ष में लौटी, ए.सी. के भीतर से फिर कुटूर कुटूर के साथ कड़-कड़ की आवाज़ सुनाई दी। ध्यान से देखा तो किनारे की एक सँकरी दरार से किसी छोटे पंजे की आकृति क्षणभर को बाहर उभरी। मैं सिहर उठी—तो क्या कोई एक बच्चा अभी भी भीतर रह गया है?

मैंने तुरंत उस सर्विंसिंग वाले लड़के को फोन किया, पर उसने असमर्थता जताई—वह शहर से बाहर जा चुका था और रात में लौटने वाला था। तब मैंने सर्विस सेंटर पर बार-बार आग्रह कर किसी को शीघ्र भेजने की विनती की। बहुत अनुरोध करने पर एक दूसरा एजेंट आया। उसने ए.सी. खोलकर देखा और सहज भाव से कह दिया, “कुछ नहीं है, मैडम जी।”

पर मैं आश्चस्त थी कि मैंने अपनी आँखों से वह पंजा देखा है। मैंने उससे कहा, “ए.सी. ठीक से देखिए... बाहर लगा व्हाइट सीमेंट भी तोड़िए। शायद बीच में कहीं बच्चा फँसा हो।”



वह बोला,

“अभी तो सब ठीक लग रहा है, कल आराम से देख लीजिएगा। कोई गिलहरी नहीं है।”

किन्तु मेरे भीतर का संशय शांत नहीं हुआ। अब मुझे ए.सी. की नहीं, उन जीवों की चिंता थी। मैंने उससे कहा कि पूरा ए.सी. खोलकर बाहर रख दे। उसने सर्विस सेंटर में फोन कर अपने मालिक को बताया कि ए.सी. पूरी तरह खोलना पड़ेगा, गैस लीक होने की भी संभावना है। पर मैं अपने आग्रह पर अडिग रही। उसने ए.सी. खोल कर दुबारा इंस्टॉल करने की फीस बताई जो सर्विसिंग चार्ज के अतिरिक्त देना होता और गैस लीक होने का खतरा अलग। मैंने कहा कोई दिक्कत नहीं भाई मुझे विश्वास है इसके अंदर एक नन्हा बच्चा छूट गया है जल्दी निकाला न गया तो वह मर जाएगा। उसने ए.सी. खोलने की तैयारी शुरू की और अपना चार्ज फिक्स किया पर थोड़ी ही देर में ए.सी. अभी पूरी तरह खुला भी न था कि वह अचानक ज़ोर से चौंककर बोला,

“अरे! इसमें तो बड़ी गिलहरी छुपी है!”

तभी समझ में आया—बच्चों की माँ स्वयं ए.सी. के भीतर बंद रह गई थी। वह रात बच्चे से क्यों न मिलने आई थी। छेद सीमेंट से बंद हो जाने के कारण वह बाहर निकल ही नहीं पा रही थी। वही व्याकुल होकर पंजे मार रही थी। साथ ही आश्चर्य भी हो रहा था कि जेट पाइप से इतनी तेज धार से सर्विसिंग के बावजूद अंदर गिलहरी छुपी कहां थी। शायद अपने बच्चों के मोह में किसी कीमत पर निकलने को तैयार न थी। रात को पानी से भींगी तो ज़रूर होगी पर इस उम्मीद में होगी कि मेरे बच्चे इसी ए.सी. में हैं तो मैं कैसे भाग जाऊं। मैं मां की ममता से विह्वल हो गई। कोई रास्ता न बचा था मां ए.सी. में बंद और तीन निरीह बच्चे मेरे डाइनिंग हॉल में एक डब्बे में। उसको निकालने का एक ही रास्ता था कि व्हाइट सीमेंट को तोड़ा जाये। जैसे ही रास्ता खुला, वह ऊपर से सीधे नीचे ऑगन में कूद गई। तीन मंज़िल की ऊँचाई से भय से कूदते देखकर क्षणभर को हृदय रुक-सा गया—कहीं वह मर न जाए। पर अगले ही पल वह फुर्ती से उठी और भाग गई। ये सारी घटनाएं कुछ इसप्रकार घटित हो रही थी कि मैं भीतर से विचलित हो गई।

अब इन शिशुओं को मां से कैसे मिलाऊं। इतना अपराध बोध की वर्णन नहीं कर सकती। मैं लज्जित थी अपनी आत्मकेंद्रिता पर की ए.सी. जैसे सिर्फ मेरे आराम की वस्तु हो। मैं इतना असंवेदनशील कैसे हो सकती हूँ मुझे ये ख्याल क्यों न आया कि इसमें जो गिलहरी है वो मेरी ए.सी. को तोड़ने के लिए नहीं है बल्कि हिंसक जानवर और पक्षियों से अपने बच्चों की रक्षा के लिए निरंतर मेहनत कर एक छोटा आशियाना तैयार कर रही है। मुझे बड़ी तकलीफ हुई कि बस थोड़े से पैसों की ए.सी. की सुरक्षा के लिए एक सुंदर मां बच्चे का परिवार अलग हो गया। मैं गिलहरी को सिर्फ भगाना चाहती थी मुझे अनुमान न था कि इसमें इनके बच्चे भी होंगे। मुझे लग रहा था कि अपने कुतरने के स्वभाव के कारण वो लगातार कुतर रही है। ये पता न था कि वो गर्भवती गिलहरी दिन रात इतनी मेहनत से अपना आशियाना बना रही है ताकि अपने शिशुओं को सुरक्षित स्थान पर जन्म दे सके। मेरी इस असंवेदनशीलता ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मेरे पास कोई उपाय न बचा।

अब मेरे पास केवल वे तीन नन्हे निरीह बच्चे रह गए थे। मां उसकी डरकर निकल चुकी थी दुबारा ए.सी. में बच्चों को कैसे रखा जाए ये पता न था। गिलहरी ने उतने कम स्थान में कैसे ये व्यवस्था की समझ न आया। फिर किसी ने बताया कि आदमी अगर छू ले तो गिलहरी और कई पशु अपने बच्चे तक को छोड़ देते हैं। अंत में बाहरी छेद को पुनः सीमेंट से बंद कर दिया गया ताकि कोई गिलहरी फिर से वहां अपना बसेरा न बना ले। गिलहरी अपने नन्हें शिशु अब मुझे दे गई या मेरे भरोसे छोड़ गई या डर गई समझ न सकी। मैंने जैसे उसके भरोसे का मान रखना चाहा या ये संदेश उस मन तक देने की कोशिश करने लगी कि मैं इतना सोच न पाई थी पर तुम्हारे बच्चे मेरे बच्चे के समान ही अनमोल हैं। अब वे निरीह बच्चे मुझे अपने बच्चे से प्रतीत होने लगे। मैं भूल गई कि मुझे ऑफिस जाना होता है, बेटे को स्कूल भेजना होता है। मैं बस उन बच्चों की नींद से सोने जागने लगी। बस कैसे भी इन बच्चों को मां की कमी न होने दूं। पर मैं कितनी भी कोशिश कर लूं उनकी मां तो नहीं बन सकती थी शरीर से हां मन से वे मुझे अपने ही बच्चे लग रहे थे ये। हर घड़ी उन्हें निहारती उस समय मुझे अपनी सुध तक न रही। मेरी जिंदगी ही बदल गई कॉलेज से छुट्टी ले ली हर घंटे इलेक्ट्रल पाउडर का घोल बनाकर बूँद-बूँद उन्हें चटाना, उन्हें गर्म रखना, डिब्बे को सुरक्षित रखना—यही दिन-रात का एकमात्र कार्य बन गया। कभी दूध में थोड़ा

पानी मिलाकर देती, कभी बहुत सावधानी से कुछ और। वे तीनों निरीह प्राणी, आँखें बंद किए, केवल अपनी नन्ही जीभ से जीवन की बूँदें पकड़ लेने का प्रयास करते रहते। उन्हें देखते हुए न जाने क्यों बार-बार बाल मनोविज्ञान की वे सारी अवधारणाएँ स्मरण हो आतीं जिन्हें कभी पुस्तक के पृष्ठों में पढ़ा था। जीवन अपने आरम्भिक क्षणों में कितना असहाय, कितना पूर्णतः पराश्रित होता है! चूँकि गाय का दूध नहीं देना था इसलिए इलेक्ट्रॉल पाउडर का घोल दूसरे दिन अर्थात् सोलह मई को देती रही। धीरे-धीरे मैंने उन्हें थोड़ा-सा मिल्क लैक्टोजन प्रो देना शुरू किया—बस बूँद-बूँद। रात में उन्हें ऐसी जगह रखती जहाँ उनकी माँ यदि लौटे तो सहज ही उन्हें पा सके। पर शायद वह फिर कभी नहीं आई। और तब मेरा अपना ममत्व ही उन पर भारी पड़ गया। अब मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी। बच्चों को अपने पास ही रखने लगी। वे तीनों बारी-बारी से रुई के फाहे से दूध पीते, इलेक्ट्रॉल का घोल चाटते, और दिन-रात मेरे साथ बने रहते। सोलह मई तक यही क्रम चलता रहा।

सत्रह मई की सुबह भी मेरी आँख खुलते ही पहला ध्यान उन्हीं पर गया। रात भर में भी हर डेढ़-दो घंटे पर उठकर उन्हें थोड़ा दूध या इलेक्ट्रॉल का घोल देती रहती। कभी-कभी लगता, जैसे उनकी माँ उन्हें मेरी गोद में छोड़कर चली गई हो—मानो कह गई हो, “लो, अब इन्हें संभालो... देखो, कहीं छूट न जाएँ।”

उन्हें जन्म देना शायद सहज था, पर उन्हें जीवित बचाए रखना कितना कठिन।

इतने कोमल, इतने निरीह शिशुओं को संभालने का अवसर मुझे पहले कभी नहीं मिला था। अपने पुत्र के अतिरिक्त इतना छोटा जीव मैंने शायद कभी हथेलियों में उठाया भी न था। पर न जाने कब मेरा समूचा ममत्व इन तीनों नन्हे प्राणों पर इस प्रकार न्योछावर हुआ कि अब दिन-रात का सारा भाव-जगत उन्हीं के इर्द-गिर्द सिमट आया। स्थिति यह हो गई थी कि घर में भोजन बनाने तक की सुध न रहती। किसी प्रकार कुछ बना देती, ताकि पुत्र भोजन कर सके; पर मन तो हर समय उन्हीं तीनों के पास अटका रहता। वे इतने असहाय थे कि लगता, यदि समय पर कुछ बूँदें न मिलें तो शायद जीवन की डोर ही छूट जाए। आँखें अब तक बंद थीं, शरीर में कोई स्पष्ट गति नहीं, और माँ के अतिरिक्त उनका इस संसार में कोई अपना भी तो नहीं था—वही जो उन्हें अपनी देह की ऊष्मा में छिपाकर जीवित रखती।

कभी-कभी मन व्याकुल होकर सोचता—मैं कहाँ से लाऊँ उनकी माँ? मैं इनकी मां बनने की कोशिश में खुद को भूलने लगी। किसी से बात करने की फुर्सत नहीं होती। इधर कुछ महीनों से रक्तचाप बढ़ा रहता था, इसलिए औषधियों के साथ प्रतिदिन नौ हजार कदम चलने का नियम बना लिया था। चार महीनों से वह क्रम बिना रुके चल रहा था; पर अब छत पर जाने की भी इच्छा नहीं होती। लगता, यदि क्षणभर के लिए भी दूर हुई तो ये नन्हे प्राण कहीं छूट न जाएँ। सत्रह मई की वह सुबह बच्चों के साथ मेरा दूसरा दिन था। माँ उनके पास नहीं थी, उनका कोई संरक्षक नहीं था, फिर भी उनके शरीर पर गिलहरी जैसी महीन मूँछों की छोटी-छोटी रेखाएँ उभरने लगी थीं। तब लगा, चमत्कार कहीं बाहर नहीं, ईश्वर की सृष्टि के भीतर ही सबसे अधिक घटित होते हैं।

अठारह मई को उनकी नाक का उभार कुछ स्पष्ट हुआ। उन्नीस को कानों की आकृति बनने लगी। फिर धीरे-धीरे मुख का आकार उभरने लगा। ऐसा लगता था मानो प्रतिदिन ईश्वर अपनी अदृश्य उँगलियों से उन नन्हे शरीरों को नया रूप दे रहा हो, और मैं विस्मय से वह सृजन-प्रक्रिया देख रही हूँ। बायोलॉजी का जेनेटिक कोड बाह्य वातावरण से नियंत्रित न दिखा। वो हर दिन उन शिशुओं को गढ़ कर उन्हें मेरा प्यार गिल्लू बना रहा था।



किन्तु इसी बीच एक चिंता और भय की बात हुई । उन तीनों में से दो बच्चे जब दूध पीने का प्रयास करते, तो अचानक बहुत बड़ा मुँह खोल देते और उनका छोटा-सा शरीर क्षणभर के लिए तनकर कठोर हो उठता। वे ठीक से दूध पी ही नहीं पाते थे। तब भय से मन काँप उठता—क्या मैं इन्हें सचमुच बचा पाऊँगी?

इसके साथ ही एक और कठिनाई सामने आने लगी। तीनों ही शिशु ठीक प्रकार से मलत्याग नहीं कर पा रहे थे। उनके छोटे-छोटे पेट फूले रहते और उन्हें देखकर मन में चिंता भर जाता । तभी मेरे महाविद्यालय की एक प्रिय सहकर्मी डॉ पूनम कुमारी , जिन्हें पशुओं से विशेष स्नेह था, ने सलाह दी कि बच्चों को किसी वेटनरी डॉक्टर को दिखाना चाहिए। उसी रात हम लगभग आठ बजे आसपास के सरकारी पशु चिकित्सालय पहुँचे। वहाँ के एक कर्मचारी ने डॉक्टर साहब से मेरी बात कराई। मैंने बच्चों की सारी स्थिति और लक्षण बताए। उन्होंने कहा कि पेट साफ न होने के कारण बच्चों को कष्ट हो रहा है। फिर बड़ी सावधानी से तीनों को एनीमा दिया गया, ताकि उनका पेट साफ हो सके। उसके बाद वे कुछ हल्के और पहले से थोड़े शांत लगे।

अब मेरा पूरा समय उन्हीं शिशुओं की देखभाल में बीतने लगा। रातों में भी हर डेढ़-दो घंटे पर उठकर उन्हें दूध या इलेक्ट्रॉल के घोल की बूँदें चटाती रहती। उस रात भी नौ बजे उन्हें इलेक्ट्रॉल का घोल पिलाकर सुला दिया था धीरे-धीरे मेरी ममता को वे पहचान गए। मैं जैसे ही उनके डब्बे को छूती तीनों शिशु सक्रिय हो जाते चीं चीं कि आवाज करना शुरू करते कुछ वैसे ही जैसे मां को पास महसूस कर बालक बलबलाने लगते । ये एक अदभुत प्रेम था जहाँ दोनों अलग प्रकृति के प्राणी दूसरे को प्रेम करने लगे थे। मैं मां की ममता उन शिशुओं पे बरसा रही थी जो मनुष्य नहीं गिलहरी शिशु थे और वे बच्चे मुझे अपनी मां समझ कर प्रेम दे रहे थे जबकि मैं उनकी प्रकृति की नहीं। एक अदभुत ईश्वरीय प्रेम जहाँ सिर्फ प्रेम था कोई अपेक्षा नहीं। सृष्टि की मेरे हिसाब से ये अद्भुत घटना थी, मैं अपनी ममता न्योछावर करती । कभी उठाकर चूमती कभी हथेली पे रख बातें करती । मेरी भाषा अलग उनकी भाषा अलग पर दोनों का प्रेम एक समान। इस अद्भुत स्नेह और प्रेम का साक्षी मेरा पुत्र बना। उसने मेरी इस छोटी सी दुनिया को दूर से निहारा । मुझे बिना कुछ बोले सहयोग किया । ये उसका इन शिशुओं के प्रति अव्यक्त प्रेम था। मैं खाना न बना पाती तो वो मैगी खाकर पढ़ाई करता पर मुझसे कोई डिमांड न करता । उसको लगता पहले ये बच्चे फिर मैं । क्योंकि मैं तो मम्मी का बड़ा बेटा हूँ। अब मेरी दुनिया में तीन प्यारे बच्चे गिल्लू और दूर से इस ममता को देखता मेरा पुत्र। उसको मेरी चिंता होती कभी कभी परेशान होता की ऐसे बिना सोये बिना ठीक से भोजन किए कहीं मैं बीमार न पड़ जाऊँ ।

डॉक्टर को दिखा कर आने के बाद तीनों गिल्लू स्वस्थ प्रतीत हो रहे थे। रात को सोने जाने से पूर्व उनके लिए हल्का गर्म दूध बनाया। रुई के छोटे-से फाहे से उन्हें धीरे-धीरे दूध पिलाने लगी। वे इतने संवेदनशील थे कि जैसे ही मैं उनके डिब्बे को हल्का-सा छूती, तीनों जाग उठते और अपनी क्षीण-सी शक्ति से थोड़ा-थोड़ा सरकने लगते। फिर पेट भरते ही चुपचाप मुँह बंद कर सो जाते।

उस रात दो बच्चों को दूध पिलाकर सुलाने के बाद जब तीसरे को उठाया, तो वह असामान्य रूप से निढाल पड़ा था। उसका मुँह खुला हुआ था, साँसें बहुत धीमी चल रही थीं, पर शरीर में कोई गति नहीं थी। मैं घबरा गई। कभी उसकी पीठ सहलाती, कभी पेट, कभी अपने मुँह से हल्की हवा देकर उसकी साँसों को लौटाने का प्रयास करती। पर धीरे-धीरे उसका छोटा-सा शरीर ठंडा और कठोर होने लगा। प्रातः लगभग तीन बजकर पैंतालीस मिनट पर वह नन्हा प्राण मुझसे दूर चला गया।

अब केवल दो गिल्लू मेरे पास थे। उस क्षण पहली बार लगा कि मेरी हिम्मत सचमुच टूट रही है। अगले ही दिन फिर डॉक्टर के पास गई, क्योंकि दूसरी गिलहरी भी रात से अत्यन्त सुस्त पड़ी थी। मैंने लगभग विनती करते हुए कहा, “इन्हें बचा लीजिए... यदि कोई विशेष सुविधा हो, कोई आई.सी.यू. जैसा...” पर डॉक्टर ने असमर्थता जताई। बोले कि अस्पताल में इतनी छोटी वन्य जीवों के लिए वैसी कोई व्यवस्था नहीं है। हाँ, उन्होंने बी-कॉम्प्लेक्स और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की एक दवा दी, जिसे हर पाँच घंटे पर पिलाने का निर्देश था।

मैंने पूरी सावधानी से सब कुछ करना जारी रखा। दोनों बच्चों को दवा दी, दूध पिलाया। पता नहीं ये क्या था पर दिनभर बच्चे खूब सक्रिय रहते और रात्रि के नौ बजे के बाद अचानक निढाल पड़ जाते। जो स्वस्थ होता वो नॉर्मल रहता पर जो बीमार होता उसके शरीर में कोई जान ही न बचती। रोज की भांति जब उस रोज भी रात को दूध पिलाने जागी तो देखा एक गिल्लू डिब्बे में धीरे-धीरे घूम रहा है... पर दूसरा बिल्कुल शांत पड़ा है। उसके छोटे-से शरीर में अब कोई प्राण शेष नहीं थे।

अब बस एक नन्हा गिल्लू बचा था। शुरू से ही वह सबसे अधिक चंचल था। उसे हथेली पर लेती तो जैसे सारे दुख कुछ देर के लिए दूर हो जाते। अपने छोटे-छोटे पंजों और नाखूनों से वह ऊपर चढ़ने की कोशिश करता, मानो उसे जन्म से ही पेड़ों पर चढ़ना आता हो।

बाईस मई की सुबह से वह भी थोड़ा सुस्त लगने लगा। मैं इतनी डर गई थी कि उसे हाथों से नीचे उतारने की हिम्मत नहीं होती थी। हर समय यही भय लगा रहता कि कहीं इसे भी कुछ न हो जाए। उस दिन कॉलेज नहीं जाने का मन था, पर जाना आवश्यक था। इसलिए उसे एक कोमल तौलिये में लपेटकर अपने साथ कॉलेज ले गई।

वहाँ सबने उसे बड़े स्नेह से रखा। विशेष रूप से पूनम मैडम और विभा मैडम ने। उसकी सुबह की सुस्ती भी धीरे-धीरे कम हो गई तो मन को थोड़ा संतोष हुआ। मेरी सहकर्मी डॉ. पूनमकुमारी मैडम ने कहा, “आप कक्षा देख लीजिए, इसे मैं संभालती हूँ।”

दिनभर मैडम उसे ड्रॉपर से दूध, दवा और इलेक्ट्रॉल का घोल देती रहीं। मैं भी बीच-बीच में आकर उसे देखती रहती। उनकी मेज़ पर लेटा गिल्लू कुछ ठीक लग रहा था, इसलिए मन में आशा बनी रही। और शाम तक तो एकदम सक्रिय चंचल। पर रात होते-होते अचानक उसका शरीर फिर अजीब तरह से ऐंठने लगा। लगता था जैसे उसका पूरा शरीर सूखकर हल्का हो गया हो। वह एकदम निढाल पड़ गया।

मैंने तुरंत पूनम मैडम को फोन किया। वे अपने बच्चों के साथ मेरे घर आ गईं। हम सब गिल्लू को संभालने की कोशिश करते रहे, पर कोई सुधार नहीं हो रहा था। वह एक बूँद पानी तक पीने के लिए मुँह नहीं खोल रहा था। रात अधिक हो गई थी, इसलिए मैडम घर लौट गईं, पर मेरा मन पूरी तरह टूट चुका था। समझ नहीं आता था कि इन छोटे जीवों की माँ कैसे बन्नूँ। कैसे इसे बचाऊँ। पर आज मैंने गिल्लू को अकेला न छोड़ने की ठानी। मैं इसे मरने नहीं दे सकती थी। मन में कई विचार चल रहे थे कि देखूँ कैसे इस छोटे से बच्चे की जान कोई ले जा सकता है। इतना सक्रिय गिल्लू आज पसीज कर कितना छोटा निढाल पड़ा है। उस रात गिल्लू मेरी हथेली पर ही रहा। मैं उसे रुई से सहलाती, मंत्र पढ़ती और ईश्वर से प्रार्थना करती रही—“इसे जीवन दो प्रभु”। सुबह चार बजे तक गिल्लू छटपटा रहा था पता नहीं उसके शरीर को क्या हो रहा था। ऐंठन से एक इंच तक शरीर उछल जा रहा था। मैं उसको हथेली पे थामे कभी छाती, कभी पीठ तो कभी पेट को सहला रही थी।

धीरे-धीरे उसने एक-दो बार पोटी की। फिर अचानक उसने इलेक्ट्रॉल का घोल पीने के लिए थोड़ा मुँह खोला। मैंने जल्दी से उसे दवा और इलेक्ट्रॉल का घोल दिया। और सुबह लगभग चार बजे वह फिर थोड़ा चलने लगा। उस समय जो खुशी हुई, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। तेईस मई की सुबह से शाम तक वह लगभग मेरी हथेली पर ही रहा। आज अचानक वो थोड़ा बड़ा दिखने लगा। जबकि रात भर जीवन मृत्यु से लड़ता रहा था। अब वह सचमुच गिलहरी जैसा दिखने लगा था। आज अपने छोटे हाथों से मूँछों को छूना, दोनों पंजे फैलाकर जम्हाई लेना, और थककर मेरी हथेली में घुसकर सो जाना—सब कुछ इतना प्यारा लगता था कि मैं उसे हरे-पीले तौलिये में लपेटे पूरे घर में घूमती रही। बालरूप जिसने कृष्ण का महसूस किया हो वो इस रूप का वर्णन कर सकता है। आज वह थोड़ा बड़ा दिखने लगा था। मन खुश भी था और डरा हुआ भी—कॉलेज कैसे जाऊँगी? अगर यह कहीं चलकर निकल गया तो? मैं इसको कहां रखूँगी ये अब बाहर भागेगा मुझे इसको रखने के लिए कुछ व्यवस्था करनी होगी। इन्हीं सब ख्वाबों में खोई गिल्लू को निहारती मैं लगभग निश्चिंत हो गई कि अब मृत्यु ग्रह टल गया बहुत आश्चर्य हो गई थी। कल रात्रि से आज रात्रि आठ बजे तक गिल्लू मेरे से चिपका रहा।

मेरी हथेली पे खेलता रहा। खूब मजे से मेरी हथेली पर पोटी किया, सुसु किया । उस दिन मैं बहुत प्रसन्न थी। शाम को पूनम मैडम को फोन करके कहा,
“बच्चों को यहीं भेज दीजिए, यहीं पढ़ भी लेंगे और खाना भी खा लेंगे।”

रात लगभग आठ बजे गिल्लू को थोड़ा दूध और दवाई पिलाकर मैंने उसे बिस्तर पर लिटाया। मेरा पुत्र और मैडम के दोनों बच्चे पढ़ते-पढ़ते रखवाली करते रहे और मैं किचन में खाना बनाते हुए बार-बार आकर गिल्लू को देख जाती । गिल्लू बहुत शांत हो सो रहा था। जैसे ही स्पर्श करती वह करवट बदल कर सो जाता। लगभग एक घंटे में खाना बना और इस बीच हर दस मिनट में मैंने गिल्लू को देख मन कह रहा था कहीं मेरा गिल्लू ये न सोचे कि मम्मा खाना बनाने में मुझे छोड़ दी।इसलिए बार-बार जाकर देख आती । वह गोल होकर निश्चिंत सो रहा था। पेट भर जाने पर वह अक्सर ऐसे ही सो जाता था।

लगभग नौ बजे खाना तैयार हुआ। सबको खिलाकर मैंने भी जल्दी-जल्दी एक दो निवाला लिया क्योंकि थोड़ी देर बाद गिल्लू को फिर दूध देना था।लेकिन जैसे ही मैंने उसे हथेली पर उठाया, मेरा दिल काँप उठा। उसकी हालत फिर पिछली रात जैसी हो गई थी।मैं घबराकर उसे सहलाने लगी, गर्म हथेली पर हल्की गर्म टॉवल से कभी पीठ कभी छाती पर हल्का-हल्का सेंक देती रही ताकि गर्माहट आए। गिल्लू मेरी हथेली पर चुप पड़ा था और उसकी हल्की धड़कन अब भी महसूस हो रही थी। उसने दो-तीन बार थोड़ा मुँह खोला तो मैंने इलेक्ट्रॉल का घोल पिलाने की कोशिश की। हरे तौलिये में लिपटा गिल्लू मेरी हथेली पर था और मैं पीले तौलिये से उसकी छाती सहला रही थी। तभी उसने जैसे आशीर्वाद देने की अपनी चिरपरिचित मुद्रा में दोनों छोटे हाथ फैलाए, एक बार हल्का-सा मुँह खोला... और फिर मेरी हथेली पर ही शांत हो गया।

इतना अलौकिक रूप आज तक न देखा था। मेरा गिल्लू इतना सुंदर, इतना स्पष्ट रूप में दिखा जैसे ईश्वर साक्षात् अपने दर्शन दे रहे हों। समझ नहीं आ रहा कि ईश्वर मनुष्य रूप के अतिरिक्त किसी और रूप में मेरे पास आए थे, या यह केवल मेरा भ्रम है।

मेरा गिल्लू अब रजनीगंधा का पुष्प बनकर जीवन भर मेरी बगिया में महकेगा। हर पंखुड़ी में मुझे उसका वही निर्मल स्पर्श महसूस होगा। अब हर संध्या रजनीगंधा की खुशबू से मुझे स्पर्श कर जाएगा मेरा गिल्लू।





**Meenakshi
Kumari**

Session:2023-25

हिन्दी हमारी आत्मा की भाषा और मन की भाषा है। मैं यह मानती हूँ कि हर भाषा आत्मा की भाषा नहीं होती, क्योंकि भाषाओं के अपने-अपने अनेक कार्य होते हैं। हमारे लिए सभी भाषाएँ प्रिय हैं, परन्तु हिन्दी हमारी मातृभाषा है, इसलिए उससे वही प्रेम है जो एक संतान का अपनी माता से होता है। यह कहने में मुझे न तो संकोच है, न झिझक और न ही कोई भय। माता के विषय में न तो कोई समझौता होता है और न ही चयन की आवश्यकता होती है। परन्तु हिन्दी को माँ कहना इस बात का अर्थ नहीं है कि अन्य भाषाएँ हमारी शत्रु हैं। मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती कि किसी एक भाषा को सम्मान की दृष्टि से देखा जाए और अन्य भाषाओं को अपमान की दृष्टि से।

हम जानते हैं कि वर्तमान समय में अंग्रेज़ी भाषा का वर्चस्व बढ़ा है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारी मातृभाषा हिन्दी का कोई महत्व नहीं रहा। सभी भारतीयों को अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान रखना चाहिए और गर्व के साथ उसे बोलना चाहिए।

जनगणना के अनुसार, लगभग 32 करोड़ लोग हिन्दी बोलते थे। 2001 की जनगणना में यह प्रतिशत बढ़कर 41% हो गया। 2011 की जनगणना में, जब भारत की जनसंख्या लगभग 121 करोड़ हुई, तब हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में बोलने वालों का प्रतिशत 43.6% हो गया। इसका अर्थ है कि लगभग 52-53 करोड़ लोग हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। जबकि अंग्रेज़ी बोलने वालों का प्रतिशत लगभग 0.02% है।

यदि 43.6% और 0.02% की तुलना की जाए, तो ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हिन्दी का अस्तित्व संकट में है, परन्तु यह सत्य नहीं है। अनुमान के अनुसार, वर्तमान में भारत की जनसंख्या लगभग 143 करोड़ है और इसमें हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग 45-46% तक पहुँच सकती है, अर्थात् लगभग 64-66 करोड़ लोग हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करेंगे।

भारत की जनगणना में 31 प्रमुख भाषाओं का उल्लेख मिलता है, जबकि विश्व में लगभग 7115 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से लगभग 250 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। लगभग 5000-6000 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या एक लाख से कम है। सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी का स्थान प्रमुख भाषाओं में से एक माना जाता है।

यह प्रश्न भी उठता है कि क्या हम व्यापार, व्यवसाय और नौकरी के क्षेत्र में हिन्दी के साथ सफल हो पा रहे हैं? इस क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य हैं, जिसका मुख्य कारण औपनिवेशिक सोच और अंग्रेज़ी के प्रति बढ़ता झुकाव है।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में ढाई दिन के विचार-विमर्श के बाद हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हमारे संविधान के भाग 17 (अनुच्छेद 343 से 351) में राजभाषा से संबंधित विशेष प्रावधान दिए गए हैं। अनुच्छेद 343 में स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी संघ की राजभाषा होगी तथा इसकी लिपि देवनागरी होगी।

हिन्दी का भविष्य कैसा है, यह समझने से पहले हमें इसके विभिन्न रूपों को समझना आवश्यक है—बोलचाल की भाषा के रूप में, राजभाषा के रूप में, राष्ट्रभाषा के रूप में, सम्पर्क भाषा के रूप में, व्यापार एवं नौकरी की भाषा के रूप में तथा ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में।

यह कहना कि हिन्दी समाप्त हो जाएगी, पूर्णतः असत्य है। हिन्दी समाज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह तथ्यों की अपेक्षा अफवाहों पर अधिक ध्यान देता है। 1991 की जनगणना में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग 39% थी, जबकि उस समय भारत की जनसंख्या लगभग 83 करोड़ थी।

हमारे देश में सामाजिक स्तर पर हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है, परन्तु व्यवसायिक और तकनीकी शिक्षा अधिकतर अंग्रेज़ी माध्यम में दी जाती है।

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी बिहार (College of Teacher Education Gaya Ji Bihar) एक प्रतिष्ठित सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान है, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नैतिक मूल्यों और समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए जाना जाता है। संस्थान का उद्देश्य केवल कुशल शिक्षक तैयार करना ही नहीं, बल्कि ऐसे जागरूक और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण करना भी है, जो समाज एवं राष्ट्र के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। वर्षों से CTE Gaya ने शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुशासन और नवाचार की परंपरा को बनाए रखते हुए अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को नई दिशा प्रदान की है।



NAME -SANJU KUMARI
SESSION -2023-25
POST-TECHNICIAN GRADE -3
DEPARTMENT -ENERGY DEPT.



SATYA PRAKASH DEEPAK
SESSION: 2021-23
RRB NTPC 2019 SELECTED
SSC CGL 2022 SELECTED
BPSK TRE 2.0 SELECTED
BIHAR CIVIL COURT UDC 2022

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की वास्तविक पहचान उसके विद्यार्थियों की उपलब्धियों और उनके व्यक्तित्व से होती है। पूर्व छात्र केवल संस्थान की स्मृतियों का हिस्सा नहीं होते, बल्कि वे उसकी परंपरा, मूल्यों और उपलब्धियों के जीवंत प्रतिनिधि भी होते हैं। CTE Gaya के पूर्व छात्रों ने शिक्षा, शोध, सामाजिक सेवा तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके संस्थान का गौरव बढ़ाया है



पूर्व छात्र संस्थान और वर्तमान विद्यार्थियों के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करते हैं। उनके अनुभव, संघर्ष और सफलता की कहानियाँ नए विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करती हैं। Alumni Meet, शैक्षणिक संवाद, कार्यशालाएँ तथा मार्गदर्शन सत्रों के माध्यम से पूर्व छात्र लगातार संस्थान से जुड़े रहते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं।

RAJEEV KUMAR
Session 2021-23
Commercial cum ticket clerk at
Rourkela Station



Manish Kumar
Session: 2020 - 22
School teacher (9 -10)
Education
Department



Sunny Raj
session: 2020-22
Inspector of Posts
Dept- Department of post
Ministry of communication

CTE Gaya का Alumni Network केवल पेशेवर उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आपसी सहयोग, मित्रता और संस्थान के प्रति भावनात्मक जुड़ाव का भी प्रतीक है। पूर्व छात्रों की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि यह संस्थान केवल डिग्री प्रदान करने का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का एक सशक्त मंच है।



Shashi Kant Sharma
Session: 2020-22
PGT MATHEMATICS
(Bihar Government)

Sudhir Kumar
Session :2021-23
BPSC Teacher(6-8
Maths & Science)
TIER -02



Vishal Sharma
Session: 2023-25
Posted as UDC at
CIVIL COURTS
PATNA

Vikash Kumar
Session: 2021-23
BPSC TRE-2(11th-12th)
in Math



आज जब शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं, तब पूर्व छात्रों का मार्गदर्शन और सहयोग संस्थान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके अनुभव वर्तमान विद्यार्थियों को नई दिशा देने के साथ-साथ संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता को भी समृद्ध करते हैं।



Twinkle Kumari
Session: 2023-25
Correspondence Clerk
Department: SBPDCL
(BSPHCL)

DEEPAK KUMAR
Session 2023-25
Indian railway
Post- ALP



हम सभी पूर्व छात्रों की उपलब्धियों पर गर्व करते हैं और आशा करते हैं कि उनका यह सहयोग एवं स्नेह भविष्य में भी CTE Gaya को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक बनेगा।

अंत में, हम अपने सभी पूर्व छात्रों के उज्ज्वल भविष्य, निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं। आपकी उपलब्धियाँ सदैव संस्थान को प्रेरणा देती रहें और आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करें।

प्रशिक्षुओं द्वारा उद्यान कार्य : हरियाली, स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल

सत्री कुमार
रौल -34
सत्र :2024-26

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को भी विशेष महत्व दिया जाता है। इसी क्रम में महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ, सुंदर एवं हरित बनाए रखने के उद्देश्य से समय-समय पर प्रशिक्षुओं द्वारा उद्यान कार्य (Gardening) का आयोजन किया जाता है। यह गतिविधि वरीय व्याख्याता डॉ नीतू सिंह एवं व्याख्याता श्रीमती अमृता प्रियम के मार्गदर्शन एवं देखरेख में संपन्न होती है।



सत्र 2024-26 एवं 2025-27 के प्रशिक्षु इस रचनात्मक गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। प्रशिक्षु पौधारोपण, पौधों की नियमित देखभाल, खरपतवार हटाने, परिसर की साफ-सफाई तथा विभिन्न स्थानों पर हरियाली बढ़ाने जैसे कार्यों में सक्रिय सहभागिता निभाते हैं। इस सामूहिक प्रयास से महाविद्यालय परिसर का वातावरण अधिक स्वच्छ, सुंदर एवं आकर्षक बनता है।



उद्यान कार्य केवल परिसर की सुंदरता बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रशिक्षुओं में पर्यावरण संरक्षण, श्रम की गरिमा, सामूहिक कार्य, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी महत्वपूर्ण मान्यताओं का भी विकास करता है। इस प्रकार की गतिविधियाँ प्रशिक्षुओं को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाने के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षण अनुभव भी प्रदान करती हैं।



महाविद्यालय परिसर में विकसित होती हरियाली, स्वच्छ वातावरण तथा प्रशिक्षुओं की सक्रिय भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि छोटे-छोटे सामूहिक प्रयास भी सकारात्मक एवं स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है, बल्कि भावी शिक्षकों में सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय गया जी में दिनांक 07 मार्च से 10 मार्च तक International Women's Week का आयोजन उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों, समानता, शिक्षा एवं सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।



8 March 2026 को महिला सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रशिक्षुओं को भाषण, विचार, कविता, स्लोगन तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में सहभागिता हेतु प्रेरित किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षुओं द्वारा पोस्टर निर्माण, स्लोगन लेखन, भाषण, कविता पाठ एवं जागरूकता आधारित गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रशिक्षुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक भूमिका, महिला सशक्तिकरण, समान अवसर तथा आत्मनिर्भरता जैसे विषयों पर विशेष चर्चा की गई। प्रशिक्षुओं द्वारा प्रस्तुत पोस्टर एवं स्लोगन के माध्यम से महिलाओं के सम्मान, अधिकार एवं समानता का संदेश प्रभावी रूप से प्रसारित किया गया।

महाविद्यालय के व्याख्याता गण एवं प्रशिक्षुओं की सक्रिय सहभागिता से कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यह आयोजन प्रशिक्षुओं के लिए प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं जागरूकता बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ।





Dyslexia Awareness Walk

Rajeev Kumar
Roll No: 79
Session: 2024-26

A Dyslexia Awareness Walk was organized by the institution to spread awareness about dyslexia and promote understanding and sensitivity towards children facing learning difficulties. The students of Batch 2024-26 and 2025-27 actively participated in the programme with great enthusiasm by preparing handmade posters, slogans, and awareness messages. The main objective of the programme was to create empathy, compassion, and awareness in society towards individuals with dyslexia.



With proper guidance, patience, support, and encouragement, individuals with dyslexia can overcome challenges and achieve success in life. People with dyslexia are often creative, intelligent, and talented in various fields. Many renowned personalities such as Albert Einstein, Steven Spielberg, and Jennifer Aniston are believed to have had dyslexia. Their achievements prove that dyslexia is not a barrier to success, but simply a different way of learning and thinking.

During the walk, students spread positive messages promoting inclusive education and equal learning opportunities for every child. The programme successfully raised public awareness and encouraged people to support children with learning differences with kindness, understanding, and respect. The initiative was highly appreciated for spreading positivity, social responsibility, empathy, and awareness within the community.



अज्ञ दीप-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी : इन-सर्विस प्रशिक्षण के माध्यम से शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर



श्रीमती अमृता प्रियम
प्रशिक्षण प्रभारी



गत वर्ष से इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफल संचालन श्रीमती अमृता प्रियम (प्रशिक्षण प्रभारी) के नेतृत्व में तथा प्रभारी प्राचार्या डॉ गीता पांडे के मार्गदर्शन में निरंतर किया जा रहा है। यह सफलता सामूहिक प्रयास, अनुशासन, समर्पण एवं टीम भावना का परिणाम है। महाविद्यालय के व्याख्याताओं - डॉ नीतू सिंह (वरीय व्याख्याता), डॉ मो. तनवीर खान , डॉ पूनम कुमारी , श्री मृत्यंजय कुमार , श्री प्रीतम कुमार दीपक, श्री राम सागर यादव, श्री राज कुमार , श्री शिव कुमार चौधरी , डॉ अमिताभ बच्चन , डॉ विभा सिंह , डॉ अशोक कुमार तथा प्रशासनिक सहयोगी श्री जितेन्द्र कुमार एवं श्री चंदन कुमार सहित सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का सहयोग सदैव प्रेरणादायी एवं सराहनीय रहा है। सभी के सहयोग, कर्मनिष्ठा एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यशैली से प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो रहा है।



अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी केवल एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि शैक्षिक गुणवत्ता, नवाचार एवं मानवीय मूल्यों का सशक्त केंद्र है। बिहार में जनवरी 2023 से संचालित इन-सर्विस शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में महाविद्यालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी रही है। निरंतर बदलते शैक्षिक परिवेश में शिक्षकों को अद्यतन, दक्ष एवं संवेदनशील बनाना इस प्रशिक्षण अभियान का मुख्य उद्देश्य है।



महाविद्यालय में विभिन्न स्तरों एवं विषयों के शिक्षकों के लिए योजनाबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कक्षा 1 से 2, 1 से 5 तथा कक्षा 3 से 5 तक के शिक्षकों हेतु एफ.एल.एन. (Foundational Literacy and Numeracy) आधारित प्रशिक्षण संचालित किए गए, जिनका उद्देश्य बच्चों में प्रारंभिक भाषा एवं संख्यात्मक दक्षताओं का विकास करना है। गतिविधि आधारित शिक्षण, बाल-केंद्रित पद्धति तथा आनंदमय अधिगम को इन प्रशिक्षणों का आधार बनाया गया। इसी प्रकार कक्षा 6 से 8 तक के शिक्षकों के लिए PBL (Project Based Learning), SBA (School Based Assessment) कंप्यूटर एवं डिजिटल शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिससे शिक्षक आधुनिक तकनीकों के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बना सकें। वहीं कक्षा 9 से 10 तक के शिक्षकों हेतु SBA (School Based Assessment), विषयवार- विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अंग्रेजी, हिंदी तथा AR (Action Research) आधारित प्रशिक्षण भी नियमित रूप से संचालित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों में शोधपरक दृष्टिकोण, समस्या-समाधान क्षमता तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण कौशल का विकास हो रहा है। Head Master (HM), KGBV, टोला सेवक के शिक्षकों को क्रमशः Mental Wellbeing तथा F.L.N आधारित प्रशिक्षण भी नियमित रूप से संचालित किए जा रहे हैं।

महाविद्यालय की विशेषता यह है कि यहाँ प्रशिक्षण केवल औपचारिक व्याख्यानों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसे अनुभवात्मक एवं सहभागितापूर्ण बनाया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान चेतना-सत्र, प्रेरणादायी चलचित्र (Movies), समूह गतिविधियाँ, विचार-विमर्श, प्रस्तुतीकरण तथा विविध कक्षा-कक्षीय गतिविधियों का प्रभावी संचालन किया जाता है। इससे प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, रचनात्मकता एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास होता है। प्रशिक्षण वातावरण को जीवंत, प्रेरक एवं मानवीय मूल्यों से युक्त बनाए रखने का सतत प्रयास किया जाता है।

आज जब शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गई है, तब शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक, प्रेरक एवं परिवर्तनकारी व्यक्तित्व के रूप में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। **नई शिक्षा नीति** तथा **समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं** के अनुरूप शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास समय की आवश्यकता है। अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी इस दिशा में समर्पित भाव से कार्य करते हुए शिक्षकों को नवीन शिक्षण प्रविधियों, तकनीकी दक्षताओं एवं मानवीय मूल्यों से समृद्ध करने का कार्य कर रहा है।



निस्संदेह, महाविद्यालय द्वारा संचालित यह प्रशिक्षण अभियान शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल है। यह केवल प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि शिक्षकों के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण एवं शिक्षण संस्कृति के नवोन्मेष का एक सतत प्रयास है, जो भविष्य में बिहार की शैक्षिक उन्नति के लिए एक सशक्त आधार सिद्ध होगा।



The Celebration of 150 Years of Vande Mataram

Rahul Kumar

Roll No: 03

Session: 2024-26

On the occasion of completion of **150 years of Vande Mataram**, a special programme was organized at Adhyapak Shiksha Mahavidyalay (College of Teacher Education) Gaya Ji on **7th November 2025** in the light of the concerned letter issued by the authorities. The programme aimed to promote patriotism, national values, and cultural awareness among all participants.



The programme concluded successfully with enthusiastic participation from all present and ended on a patriotic note, strengthening the values of unity, harmony, and national pride among the participants.



The programme witnessed active participation from all lecturers, college staff members, and trainee students of the institution. The event commenced with the collective singing of **Vande Mataram** (collective national song singing), creating an atmosphere of patriotism and National pride.

During the programme, speakers highlighted the historical importance of **Vande Mataram**, its contribution to the freedom movement, and its role in inspiring **National unity**. Various activities and discussions were conducted to encourage trainees to understand and uphold the spirit of nationalism and social responsibility.



Voter Awareness Campaign

Saloni Kumari
Roll No: 02
Session: 2024-26



A motivating **Voter Awareness Campaign** was organized during the internship programme at **+2 Rajkiya High School, Navasthapit**, to spread awareness about the voting rights and responsibilities of citizens above the age of eighteen. Under the guidance of the trainee teachers, students actively participated in rallies, speeches, and awareness activities highlighting the importance of voting in a democratic nation. The main objective of the campaign was to encourage responsible citizenship and strengthen democratic values among the younger generation.

The programme witnessed enthusiastic participation from **Saloni Priya, Pallvi Rani, Saloni Kumari, Mehar Fatma, Priya Kumari, Priti Kumari, Puja Kumari, Aarti Kumari, Madhuri Kumari, Aradhna Kumari, Suman Kumari, and Archana Kumari**. The initiative successfully created awareness about the importance of informed and active participation in elections.



Prohibition Awareness Programme

During the internship programme at +2 Rajkiya High School, Navasthapit, the trainee teachers organized an informative Prohibition Awareness Programme to educate students and the community about the harmful effects of alcohol consumption on health, family, and society. Students actively participated by preparing creative posters, charts, and slogans that highlighted the importance of a healthy and addiction-free life. The programme aimed to promote social awareness and inspire students to contribute towards building a disciplined, responsible, and drug-free society. The enthusiastic participation of students made the campaign highly successful and impactful, spreading a strong message about the benefits of leading a healthy and addiction-free lifestyle.





Freshers' Party for the Batch (2025–27)

Saloni Kumari

Roll No: 02

Session: 2024–26

A grand Freshers' Party was organized on **15 November 2026** for the students of Batch (2025–27).

The event provided a platform for junior students to showcase their talents through various performances, including drama, dance, singing, and ramp walks. The programme was filled with enthusiasm, entertainment, and excitement, making it a memorable occasion for everyone present.



अत्त दीप-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका



At the end of the event, Mr. Neeraj Kumar (Roll No. 44) was awarded the title of Mr. Fresher, while Miss Komal Kumari (Roll No. 23) was crowned Miss Fresher. Their confidence, personality, and overall performance impressed both the judges and the audience.



The Freshers' Party concluded on a joyful note, leaving the students with cherished memories and strengthening the bond among their batchmates.



A meaningful drama performance was presented by the students of Batch 2024–26 and 2025–27 to promote patriotism, social harmony, and unity among people during the Fresher's Party .The presentation beautifully highlighted the values of co- operation , National integrity, and collective responsibility towards society and the Nation.

The Freshers' Party concluded on a joyful note, leaving the students with cherished memories and strengthening the bond among their batchmates.



Sports Activities in CTE, Gaya Ji

Satyam Kumar
Roll No.-19
Session-2024-26

Sports and physical activities play an important role in the holistic development of trainees at College of Teacher Education, Gaya Ji. Along with academic excellence, the institution provides equal importance to physical fitness and recreational activities for developing healthy and active future teachers. Under the guidance and supervision of Dr. Md. Tanveer Khan, Faculty of Physical Education, the sports and gymnasium activities of the college are conducted efficiently and systematically. His dedicated efforts and continuous support encourage students to actively participate in various sports and fitness programs, fostering **physical well-being, discipline, teamwork, and a healthy lifestyle** among the trainees. The college regularly organizes various **indoor and outdoor games** where trainees enthusiastically participate and develop **teamwork, discipline, leadership, and sportsmanship**.



Special emphasis is given to the Badminton Court, which provides trainees with an opportunity to actively engage in sports activities and improve **physical fitness, concentration, and coordination skills**. Students regularly participate in badminton practice and friendly competitions organized within the campus. The institution also has a **Gym facility** that encourages trainees to maintain **physical health and wellness**. The gym helps students develop **strength, endurance, and healthy lifestyle habits**, contributing to their overall personality development.

Through sports activities, physical fitness programs, and recreational facilities, the college promotes **balanced growth** and motivates trainees to become **energetic, disciplined, and socially responsible teachers**.





Institutional Observation Programme cum Bihar School Survey: A Reflective Report

Saloni Priya
Roll No: 78
Session: 2024-26

On 11 October 2024, I stepped into my college for the first time as a B.Ed. trainee. Standing at the entrance, I felt a mixture of excitement, anxiety, curiosity, and anticipation. It was the beginning of a new journey, and countless thoughts and emotions filled my mind.

After entering the campus, we were asked to assemble in a hall. Despite our nervousness, we soon attended a meeting at SCERT, where we were informed that from the very next day we would participate in an Institutional Observation Programme cum Bihar School Survey. To my surprise, my first reaction was one of excitement. I felt eager to explore the field and gain practical experience.

The following day, all the trainees gathered and proceeded to their allotted locations. My field area was in Gaya district, where I had been assigned a CD Block. With the help of Google Maps and guidance from local residents, I successfully reached my designated schools. During the programme, I visited P.S. Panchayati Akhada Mahavir School, N.P.S. Utraudh, and H.S. Jaggulal Mehta High School. At each institution, I conducted observations, collected information, and prepared detailed reports.

This one-week programme brought significant changes to my perspective. It provided me with a deeper understanding of the realities of the education system beyond textbooks and theoretical knowledge. Although I was already somewhat aware of the conditions prevailing in many government schools, this experience offered a much clearer and more profound insight into the challenges faced by students and educators. It served as a powerful reality check.

India is a democratic nation where every citizen is guaranteed certain rights. The government has introduced numerous provisions, laws, and policies to promote education. However, during my field visit, I observed that the benefits of these provisions do not always reach the most vulnerable sections of society. Many children continue to face barriers that prevent them from fully enjoying their right to education.

Through this experience, I gained a better understanding of the Right to Education (RTE) Act, 2009. I realized that there is often a considerable gap between rights guaranteed on paper and their actual implementation in everyday life. For many underprivileged students, the promise of quality education remains difficult to achieve due to social and economic inequalities. Meeting these children made me realize that the greatest inequality in education begins long before a child enters a classroom. The struggle is not limited to the availability of textbooks, school buildings, or educational resources.



The challenges are much deeper and rooted in poverty, social disadvantage, and unequal opportunities. Many children carry their school bags with hope and determination, believing that education will lead them to a brighter future. Yet, their circumstances often present immense obstacles to achieving those dreams.

As I observed their lives and listened to their stories, I could not help but wonder how many of these aspirations would survive the hardships of poverty and inequality. The experience reminded me of the proverb, "The rich get richer, and the poor get poorer." It highlighted how inequality can perpetuate itself across generations, making the task of breaking the cycle of poverty extremely difficult.

As the programme came to an end, I returned with much more than survey data and field notes. I carried with me stories, faces, questions, experiences, and emotions that continue to influence my thinking.



This field experience strengthened my understanding of the social realities that shape education and reinforced my commitment to becoming a responsible and empathetic teacher. A nation is ultimately judged by how it treats its most vulnerable citizens. My hope is that the future of education in India will be shaped not by privilege and inequality, but by equal opportunity, dignity, inclusion, and justice for all.



“ Creativity Takes Courage, and Art Gives It Wings”

Saloni Priya

Roll No: 78

Session: 2024-26

Art and Craft activities have always been an important and joyful part of our B.Ed. journey at the College of Teacher Education, Gaya. These classes have provided us with opportunities to explore creativity, imagination, and innovation beyond textbooks and classrooms.

Under the valuable guidance of Dr. Poonam Ma'am, our Art Faculty, we participated in various artistic and creative activities that enriched our practical understanding of teaching-learning processes and strengthened our creative abilities.

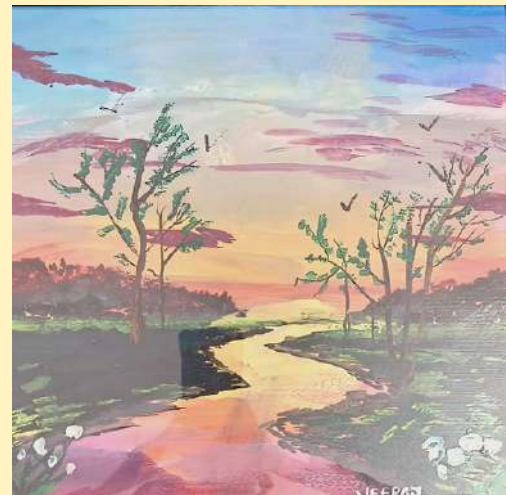
🏺 Clay Art: Shaping Creativity with Hands

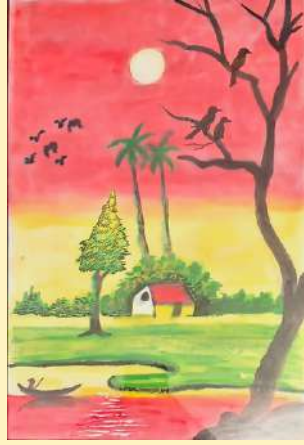
One of the most engaging activities was Clay Art, where we designed different models, sculptures, and decorative objects using clay. This activity enhanced our patience, concentration, creativity, and fine motor skills while transforming imagination into reality.



🎨 2D Painting: Colours that Express Ideas

Through 2D Painting activities, we explored colours, patterns, shading techniques, and artistic expression. These activities encouraged us to communicate ideas visually while developing aesthetic understanding and creativity.







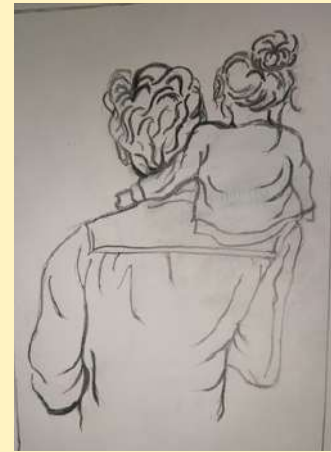
✂️ 3D Craft: Innovation through Creation

Using paper, cardboard, waste materials, and craft supplies, we prepared innovative models, decorative pieces, and Teaching-Learning Materials (TLMs). These activities promoted resource utilization, creativity, and hands-on learning experiences.



Portrait Making: Learning through Observation

Portrait making activities helped us develop observation skills and artistic confidence. By carefully observing facial features and expressions, we learned the importance of patience, detailing, and artistic representation.



Drama Classes: Learning through Expression

Drama sessions were among the most exciting experiences. Through role play, storytelling, mime, and group performances, we developed confidence, communication skills, teamwork, and self-expression. These activities demonstrated how drama can make classroom teaching interactive and effective.

"Where Creativity Meets Learning"

Art and Craft classes have not only nurtured our artistic talents but have also helped us understand the significance of creativity, innovation, and experiential learning in education. These experiences continue to inspire us to become creative, confident, and effective teachers for the future.

"Every creation begins with imagination, and every teacher becomes an artist while shaping young minds."





Dreams and the Human Mind: A Psychological Analysis and Correlation with Major Psychological Theories

Amrita Priyam(Lecturer)

A dream is a series of thoughts, images, emotions, and sensations that occur in the mind during sleep, especially during the **REM (Rapid Eye Movement)** stage. Dreams can be realistic, symbolic, emotional, creative, or sometimes confusing.

The scientific study of dreams is called **Oneirology** (from the Greek word oneiros, meaning "dream").

The study of dreams remains one of the most fascinating frontiers of Psychology. Whether they are symbolic **whisper of the soul**, as Jung believed or the **Biological by-product of memory maintenance**, dreams remain essential to our mental health. The enigma of dreaming mind has transitioned from the realm of ancient mysticism into the rigorous laboratory of Modern Psychology. While our ancestors viewed dream as divine omens contemporary science views them as a complex intersection of cognitive processing emotional regulation and unconscious expression.

In Psychology, dreams are considered important indicators of mental activity, emotional conflict, cognition, and unconscious processing. Different psychologists have explained dreams from different perspectives depending upon their theoretical orientation. Sigmund Freud considered dreams as the “**Royal Road to the Unconscious,**” while Carl Gustav Jung interpreted them as **symbolic expressions of the collective unconscious**. Behaviourists minimized their significance, whereas Cognitive Psychologists connected dreams with information processing and memory consolidation. Modern neuroscience further explains dreams through neural **activation** and **REM (Rapid eye movement)** sleep mechanisms. This article critically analyses dreams from psychological perspectives and correlates them with major psychological theories to demonstrate how dreams reflect human cognition, emotion, personality, memory, and unconscious mental processes.

The scientific study of dreams became prominent with the development of Psychology as an academic discipline. Earlier civilizations associated dreams with spirituality and prophecy, but Psychology shifted the focus toward mental processes and unconscious activity. Psychologists began asking important questions regarding why humans dream, what dreams represent, whether dreams possess meaning, and how they relate to personality and mental health. Different schools of Psychology interpret dreams differently. Psychoanalytic psychologists emphasize unconscious conflict and hidden desires.

Analytical Psychology views dreams as symbolic communication from deeper layers of the psyche. **Cognitive Psychology** interprets dreams as extensions of thinking and memory processing. **Biological Psychology** explains dreams through brain activity during REM sleep. **Humanistic Psychologists** connect dreams with self-growth and emotional expression.

Thus, dreams provide a unique meeting point between emotion, cognition, unconscious motivation, and neurophysiology. Their interpretation helps psychologists understand anxiety, trauma, personality, emotional conflicts, and human behaviour.

Nature and Characteristics of Dreams

Dreams are sequences of thoughts, images, emotions, sensations, and experiences occurring during sleep. Most vivid dreams occur during **Rapid Eye Movement (REM)** sleep, a stage associated with increased brain activity, irregular heartbeat, rapid eye movements, and heightened neural stimulation. Dreams possess several characteristics. They are often symbolic rather than literal. They may combine past memories with present emotions and imagined situations. Dreams frequently involve intense emotions such as fear, joy, anxiety, sadness, or excitement. Logical consistency is often absent, and unusual events appear normal within dreams.

Psychologists believe that dreams reveal aspects of mental functioning not always visible during waking consciousness. They may reflect emotional stress, unresolved conflicts, desires, fears, aspirations, trauma, or cognitive processing.

Modern neuroscience also suggests that dreams contribute to memory consolidation, emotional regulation, and neural organization. Thus, dreams are no longer viewed merely as mysterious fantasies but as psychologically and biologically meaningful experiences.

Dream Theories and Types of Dreams

Dreams are a natural part of human life and occur during sleep. They include thoughts, emotions, images, sounds, memories, and sensations experienced by the mind. Some dreams are pleasant and meaningful, while others may be strange, emotional, or frightening. Humans have been curious about dreams since ancient times, and psychologists, philosophers, and scientists have tried to explain why dreams occur and what purpose they serve. Modern research suggests that dreams relate to emotions, memory, learning, brain activity, and mental health.

Classification of Dream Theories.

Dream theories are mainly divided into **Psychological, Biological theories and Cognitive theory.**

I. Psychological Dream Theories

Freud's Psychoanalytic Dream Theory

Sigmund Freud developed one of the earliest psychological explanations of dreams. According to Freud, dreams are expressions of hidden desires and unconscious wishes that people suppress in daily life. He believed that the unconscious mind continues to work during sleep and expresses itself through dreams. Sigmund Freud provided one of the earliest systematic theories of dreams in his famous work **“The Interpretation of Dreams”**. Freud considered dreams the **“royal road to the unconscious mind.”**

Freud explained that dreams contain two levels of meaning. The first is the manifest content, which includes the actual events and images seen in the dream. The second is the latent content, which refers to the hidden symbolic meaning behind the dream. For example, **dreaming about flying** may represent **a desire for freedom**, while dreaming about being **trapped** may symbolize **stress or emotional pressure**. Dreams about **examinations** may reflect **fear of failure**, and dreams about **losing valuable objects** may symbolize **insecurity or anxiety**.

Freud considered dreams important because they reveal inner conflicts and emotional struggles that people may not recognize consciously. His theory became highly influential in psychology and introduced the practice of dream interpretation.

Jung's Analytical Dream Theory

In Analytical Psychology, the dream is a natural process emanating from the unconscious. As such, it has several functions, which Jung explores in two major works: **Man's Discovery of His Soul and On the Interpretation of Dreams**. According to Jacques Montanger, for Jung, the dream is "an organ of information and control with a dual function": a compensatory and a prospective function, as well as being a physiological regulator.

Carl Jung expanded the understanding of dreams by focusing on personal growth and self-understanding. Jung believed dreams are not merely expressions of hidden wishes but messages from the unconscious mind that help individuals achieve emotional balance.

Jung introduced the concept of the collective unconscious, which contains universal symbols and experiences shared by humanity. These symbols, called archetypes, often appear in dreams. For instance, dreams about a **wise old man** may symbolize **guidance and knowledge**, while dreams of **darkness** may represent **fear or uncertainty**. A journey in a dream may symbolize self-discovery, and **climbing a mountain** may represent **struggle and achievement**.

Unlike Freud, Jung believed dreams have both personal and spiritual importance. He considered dreams useful for understanding personality, emotions, and psychological development.

II .Biological Dream Theories

Activation-Synthesis Theory

The activation-synthesis theory was proposed by J. Allan Hobson and Robert McCarley. This biological theory explains dreams as the result of random brain activity during **REM sleep**.

According to this theory, different areas of the brain become active while sleeping and produce random electrical signals. The mind then attempts to organize these signals into a meaningful story. As a result, dreams may appear unusual, confusing, or unrealistic.

For example, a person may dream about **attending school inside a train or meeting** people from different stages of life together in one place. These strange combinations occur because the brain is trying to connect **unrelated memories** and images. This theory suggests that dreams may not always have deep symbolic meaning and are partly produced by normal brain functioning during sleep.

Continual-Activation Theory

The continual-activation theory states that dreaming keeps the brain active during sleep. According to this explanation, the brain continues processing information even while the body rests. Dreams help maintain mental functioning and support brain health. For example, a person who spends the day studying mathematics may continue thinking about numbers and formulas in dreams because the brain remains mentally active during sleep.

III .Cognitive Dream Theories

Self-Organization Theory

The self-organization theory explains dreams as a process through which the brain organizes memories and experiences collected during the day. During sleep, useful memories become stronger while less important information gradually weakens.

Students often dream about classrooms, teachers, or examinations after long hours of study because the brain is organizing newly learned information. Similarly, athletes may dream about sports competitions or practice sessions because their brains are processing physical and mental experiences related to performance. This theory shows that dreaming is closely connected with learning and memory consolidation.

Creativity and Problem-Solving Theory

The creativity and problem-solving theory suggest that dreams allow free and imaginative thinking without the restrictions of logic or reality. During dreams, the mind creates unusual connections between ideas and memories, which may help solve problems or inspire creativity.

For instance, a painter struggling with an artwork may dream about colours or designs that later inspire a painting. Similarly, students sometimes discover solutions to difficult problems after dreaming about them.

Types of Dreams

Ordinary Dreams

Ordinary dreams are common dreams related to daily activities and experiences. People may dream about family, school, work, travel, or conversations with friends.

Nightmares

Nightmares are disturbing dreams associated with fear, anxiety, or danger. These dreams may involve accidents, monsters, darkness, or failure. Nightmares are more common during periods of stress, illness, or emotional trauma.

Children often experience nightmares involving imaginary creatures, while adults may dream about examinations, accidents, or social embarrassment.



Lucid Dreams

Lucid dreams occur when the dreamer becomes aware that they are dreaming. In some cases, the person may control dream events consciously.

For example, a lucid dreamer may decide to fly, change locations, or interact with dream characters intentionally. Lucid dreams are often vivid and highly imaginative experiences.



Recurring Dreams

Recurring dreams are dreams that repeat over time with similar themes or situations. These dreams often reflect unresolved emotional conflicts, fears, or stress. A person may repeatedly dream about being chased, missing examinations, or getting lost in unfamiliar places.

False Awakening Dreams

False awakening dreams occur when individuals believe they have awakened from sleep but later realize they were still dreaming. These dreams often feel realistic and confusing. For example, a person may dream about getting ready for school or work before suddenly waking up for real.

REM and Non-REM Dreams

Dreaming mainly occurs during REM sleep, which is characterized by rapid eye movement and increased brain activity. REM dreams are vivid, emotional, imaginative, and easier to remember. Non-REM dreams are usually simpler, less emotional, and more connected to ordinary thoughts.

Scientists believe both types of dreams contribute to emotional regulation, memory consolidation, and brain functioning.

The Role of Dreams in Scientific Insight and Creative Problem-Solving

August Kekulé and the Benzene Ring:

While struggling to determine the structure of benzene, chemist August Kekulé reportedly dreamed of a snake seizing its own tail. This image inspired the idea of a cyclic ring structure, leading to the discovery of the benzene ring.

Dmitri Mendeleev and the Periodic Table:

Dmitri Mendeleev reportedly saw the arrangement of chemical elements in a dream after prolonged efforts to organize them, helping him formulate the Periodic Table.

Sigmund Freud and Psychoanalysis:

Sigmund Freud analysed his own dreams and those of his patients, leading to the development of psychoanalytic dream interpretation, presented in his landmark book “**The Interpretation of Dreams.**”

Otto Loewi and Chemical Neurotransmission:

Physiologist Otto Loewi conceived an experiment in a dream that later demonstrated chemical transmission between nerve cells, contributing to the discovery of neurotransmitters and earning a Nobel Prize.

Elias Howe and the Sewing Machine:

Inventor Elias Howe reportedly solved the problem of needle design after dreaming of spears with holes near their tips, inspiring the modern sewing-machine needle.

Interpretation of Common Recurring Dreams

Being Chased:

May indicate avoidance of stress, fear, anxiety, or an unresolved conflict in waking life.

Missing an Examination:

Often reflects performance anxiety or concerns about being evaluated by others.

Falling:

Commonly associated with feelings of insecurity.

Losing One's Way:

May symbolize confusion about personal identity, life direction, or difficulties during major life transitions.

Arriving Late:

Often represents fear of missed opportunities, inadequacy, pressure, or concerns about meeting expectations

Flying:

Generally symbolizes a desire for freedom, achievement, personal growth, self-confidence, or transcendence beyond limitations.

Teeth Falling Out:

May reflect anxiety about appearance, self-esteem, aging, or significant life changes.

Being Naked in Public:

Often symbolizes vulnerability, embarrassment, fear of judgment, or exposure of personal weaknesses.

Unable to Speak or Scream:

May indicate feelings of helplessness, frustration, or difficulty expressing emotions

Getting Lost:

Can reflect uncertainty or lack of direction in personal or professional life.

Being Trapped:

Often suggests feeling restricted, overwhelmed, or unable to escape a difficult situation.

Failing to Complete a Task:

May represent perfectionism, fear of inadequacy, or pressure to meet expectations.

Meeting a Deceased Loved One:

Can be associated with grief processing, emotional attachment, remembrance, or a need for closure.

House with Unknown Rooms:

May symbolize unexplored aspects of personality, hidden talents, memories, or unconscious potential.

Climbing a Mountain:

Often represents personal growth, ambition and the pursuit of goals.

Drowning:

May indicate emotional overwhelm, stress, anxiety, or feeling unable to cope with life circumstances.

Natural Disasters (Floods, Earthquakes, Storms):

Often symbolize intense emotions, major life changes, or psychological upheaval.

Being Unable to Move:

May reflect feelings of powerlessness, anxiety, or situations perceived as beyond one's control.



Train or Bus Journey:

Can symbolize life's journey, transitions, personal development, or movement toward future goals.

Receiving an Important Message:

May represent unconscious insights, self-reflection, or emerging awareness of an important issue.

Searching for Someone:

Often reflects a desire for connection, guidance, support, or a missing aspect of oneself.

Crossing a Bridge:

May symbolize transition, transformation, or movement from one phase of life to another.

Finding Hidden Treasure:

Often represents self-discovery, untapped abilities, opportunities, or personal growth.

Being Unable to Reach a Destination:

May indicate frustration, obstacles, delays, or concerns about achieving important goals.

Repeatedly Returning to School:

Often reflects self-evaluation, learning experiences, unfinished personal development, or anxiety about performance.

Note: Dream interpretations are symbolic possibilities rather than fixed meanings. The significance of a dream depends on an individual's personal experiences, emotions, culture, and life circumstances.

Conclusion

Dreams are complex mental experiences connected with emotions, memories, imagination, and brain activity. Different dream theories explain dreams from psychological, cognitive, biological, and evolutionary perspectives. Some theories describe dreams as hidden expressions of unconscious desires, while others explain them as processes of memory organization, emotional healing, or brain activity during sleep. Although no single theory completely explains dreaming, dreams remain an important subject in psychology and neuroscience because they provide insight into human emotions, thinking, learning, and mental health.

The interdisciplinary study of dreams demonstrates how psychology continuously evolves by integrating philosophy, neuroscience, psychoanalysis, cognition, and human experience. Dreams therefore remain not only subjects of scientific investigation but also windows into the deepest dimensions of the mind.

Source: Wikipedia and other educational references.





एक विमोचन से नवसृजन तक : अक्षय चेतना की अनवरत ज्योति-यात्रा

श्रीमती अमृता
प्रियम
व्याख्याता

सृजन कभी एक क्षण में जन्म नहीं लेता। वह विचारों की मिट्टी में धीरे-धीरे अंकुरित होता है, अनुभवों की धूप पाता है, संवेदनाओं का जल ग्रहण करता है और फिर किसी दिन शब्दों, चित्रों और विचारों के रूप में मूर्त होकर सामने आता है। इसी अनवरत सृजन-प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था— 23 जून 2025, जब 'अन्नदीप' के द्वितीय संस्करण का विमोचन हुआ।

किन्तु वास्तव में उस दिन केवल एक पत्रिका का विमोचन नहीं हुआ था; उस दिन एक विचार ने स्वयं को पुनः जन्म देने का संकल्प भी लिया था।



Photograph of E-Magazine
Finalization Process



Photograph of E-Magazine Launch Ceremony



Photograph of Certificate Distribution and Felicitation of
Contributors



विमोचन से पूर्व के वे दिन आज भी स्मृतियों में जीवित हैं— अंतिम ड्राफ्ट के सूक्ष्म संशोधन, शब्दों की पुनर्समीक्षा, पृष्ठ-सज्जा के अनगिनत प्रयास, सामग्री के चयन पर चिंतन, और हर उस छोटे-बड़े निर्णय की प्रक्रिया, जिसने अंततः एक सामूहिक सृजन को आकार दिया। कभी कोई शब्द बदलता था, कभी कोई शीर्षक पुनर्लिखा जाता था, कभी कोई रिक्त स्थान भरना होता था— और इन सबके बीच धीरे-धीरे एक विचार, एक स्वरूप ग्रहण करता जाता था। विज्ञान कहता है कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, केवल रूपांतरित होती है। संभवतः सृजन भी ऐसा ही होता है। द्वितीय संस्करण की पूर्णता ने अपने भीतर ही अगले संस्करण के बीज सुरक्षित रख लिए थे। जिस दिन एक संस्करण पाठकों तक पहुँचा, उसी दिन कहीं अदृश्य रूप से अगले संस्करण का बीजारोपण भी प्रारंभ हो चुका था।



Photograph of Certificate Distribution and Felicitation of Contributors



समय आगे बढ़ता गया। ऋतुएँ बदलीं। नए अनुभव जुड़े। महाविद्यालयीन गतिविधियाँ, शैक्षणिक उपलब्धियाँ, रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ, प्रशिक्षण, शोध, संवाद, संवेदनाएँ और स्मृतियाँ— सब धीरे-धीरे उस नए सृजन की सामग्री बनते गए। मनोविज्ञान बताता है कि मनुष्य केवल अनुभवों को जीता नहीं, बल्कि उन्हें अर्थ भी देता है। यही अर्थ जब अभिव्यक्ति का रूप लेते हैं, तब साहित्य जन्म लेता है; और जब साहित्य सामूहिक चेतना से जुड़ता है, तब वह दस्तावेज़ नहीं, युगबोध बन जाता है।



Principal Ma'am & Editorial Board of Atta Deep (e-Magazine)



ICT Instructor- Shraavan Kumar, Bhaskar Kumar and Shri Gaurav Kumar



Clerk- Shri Avinash Kumar



Clerk- Ms. Archana Kumari



Accountant- Shri Gautam Kumar



Data Ent. Opt.- Gaurav Kumar



J.E. Vishal Singh



Admin- Jitendra Deo Gupta Chandan Kumar



Cleanliness Supervisor- Rajiv Kumar (Banti)



Office Staff - Surendra Kumar Ashok Kumar Shailendra Kumar



Security Guard- Dharendra Kumar, Matlu Kumar and Ramchandra Kumar (Cleanliness Supervisor)



Electrician- Bablu Kumar



Plumber- Vivekanand Kumar



Night Guard- Santosh Kumar and Parshuram Kumar

अत्त दीप-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका



Latitude: 24.790182
 Longitude: 85.006773
 Elevation: 122.81±0.12 m

अत्त दीप-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका



अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी - 823001



अत्त दीप-अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गया जी की ई-पत्रिका

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय का मुख्य द्वार

गौतम छात्रावास



महाविद्यालय मुख्य भवन (प्रशासनिक)



सुजाता छात्रावास



बहुउद्देशीय हॉल (ऑडिटरियम) का मुख्य प्रवेशद्वार

समापन संदेश

प्रिय पाठकों,

“अत्त दीप” की यह रचनात्मक यात्रा अपने इस पड़ाव पर पहुँचकर विराम अवश्य ले रही है, किन्तु ज्ञान, चिंतन और आत्मबोध की यात्रा कभी समाप्त नहीं होती। यह केवल शब्दों का समापन नहीं, बल्कि भीतर जागृत उस प्रकाश का विस्तार है जो मनुष्य को स्वयं से जोड़कर समाज और संसार तक पहुँचाता है।

अत्तदीप – अर्थात् स्वयं प्रकाशमान बनो।

भारतीय ज्ञान परंपरा भी हमें यही संदेश देती है कि सत्य और प्रकाश की खोज बाहर नहीं, स्वयं के भीतर करनी होती है। उपनिषदों की यह वाणी हमें इसी दिशा में प्रेरित करती है—

“असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।।”

अर्थ: हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा सीमितता से अमर चेतना की ओर ले चलो। यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि विचारों, संवेदनाओं, अनुभवों और चेतना का ऐसा दीप है जिसमें ज्ञान की प्रखरता है,

संवेदना की मधुरता है,

विज्ञान की तार्किकता है,

और भारतीय ज्ञान परंपरा की आत्मीयता है।

हमारा संदेश —

“ज्ञान के साथ विनम्रता,

विचार के साथ विवेक,

और प्रगति के साथ मानवीय संवेदना” —

यही अत्तदीप की आत्मा है।

इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध बनाने हेतु आपके सुझाव, विचार एवं प्रस्ताव सदैव स्वागत योग्य हैं। कृपया अपने विचार e-magazine के email id -

ctegayaemagazine2@gmail.com पर साझा करें।



धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित,

सम्पादक मंडल

अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, गयाजी



अमृता प्रियम (इ-मैगज़ीन
इंचार्ज) एवं अन्य संपादक
मण्डल के सदस्य

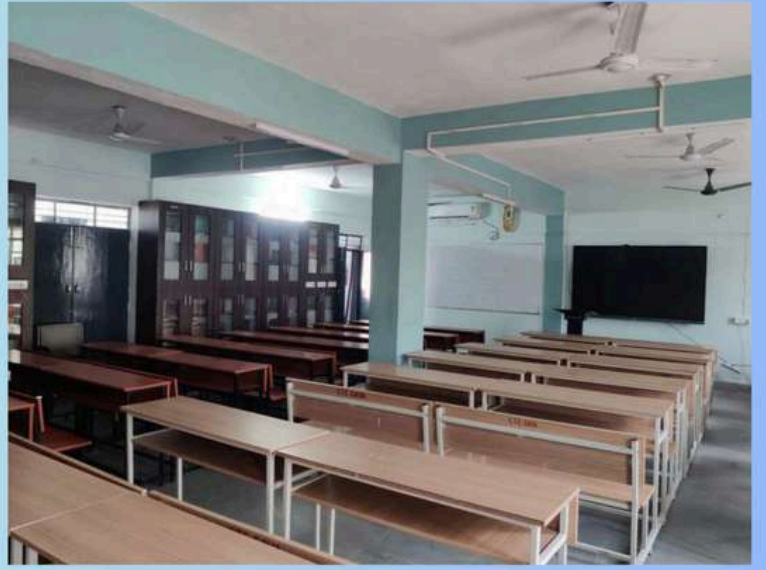
A top-down photograph of a diverse group of people holding hands in a tight circle. The hands are the central focus, forming a ring around the text. The people's faces are visible at the edges of the frame, some smiling. The background is dark, making the hands and the white text stand out.

CTE
Gaya Ji





महाविद्यालय -ऑडिटोरियम का आंतरिक दृश्य



महाविद्यालय पुस्तकालय



मुख्य द्वार के सामने लगी बुद्ध की तस्वीर



उन्मुक्त प्रांगण



कंप्यूटर प्रयोगशाला



'अन्न दीप' का यह अंक आपको कैसा लगा
इसके बारे में राय / टिप्पणी / समीक्षा / सुझाव ज़रूर दें।
ई मेल- ctegayaemagazine2@gmail.com